

जीवन-श्रेयस्कर-पाठमाला



प्रकाशक—

श्री केशर बहिन अमृतलाल झवेरी
पालनपुर (उ गुजरात)

द्वितीयावृत्ति १०००	श्री वीर सम्वत् २४७५ विक्रमाक २० ५ सन् १९४८ ई०	मूल्य २)

प्रकाशक—
केशरबहिन अमृतलाल झवेरी
पालनपुर (उ० गुजरात)

विषयसूची

मुद्रक—
श्री जा० सिंह के प्रबन्धसे
श्री गुरुकुल प्रिंटिंग प्रेस, ब्यावर

भूमिका

श्री जीवन-श्रेयस्कर-पाठमाला को पाठकों के कर-कमलों में समर्पित करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है। श्री छोटेलालजी यति द्वारा संचालित जीवन-श्रेयस्कर ग्रन्थमाला ने जीवन श्रेयस्कर-पाठमाला की प्रथमावृत्ति छपायी थी जिसको स्वाध्याय प्रेमियों ने ठीक पसंद की थी। अब अप्राप्य होने के कारण इसकी दूसरी आवृत्ति धर्मानुरक्ता श्रीमती केशर बहिन श्री मृतलाल जौहरी ने कई बहिनों की प्रेरणा से छपवाई है। हमें आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि पाठकों ने पहिले पाठमाला को अपनाई है उसी प्रकार इसे भी अपनायेंगे।

इस पुस्तक में प्रकाशित सूत्र आदि का प्रकाशन यद्यपि कई स्थानों से हो चुका है किन्तु ये स्वाध्याय के लिए परमोपयोगी होने से इन सब का संग्रह एक ही जगह किया गया है। स्वाध्याय आत्मोन्नति का सरल, सुन्दर और सुगम व उत्तम मार्ग है। अतः स्वाध्याय के लिए उत्तमोत्तम ग्रन्थों का संग्रह करना प्रत्येक मनुष्य के लिये आवश्यक है। शास्त्र, धर्म ग्रन्थ, महापुरुषों के जीवन चरित्र, महापुरुषों के उपदेश, आप्तपुरुषों द्वारा उपदेशित परमपद प्राप्ति के साधना का ज्ञान कराने वाले ग्रन्थ तथा आत्म दर्शन कराने वाले साहित्य के पठन-पाठन एवं स्वाध्याय करने से निश्चय ही विचारों में तदनुकूल परिवर्तन होकर जीवन शान्तिमय बन सकता है।

धर्म ग्रन्थादि, शास्त्र और उपदेश पूर्ण पुस्तकों के पढ़ने से मनुष्य को महात्माओं तथा विद्वानों के विचार जानने को मिलते हैं, जिन पर मनन कर मनुष्य स्वयं उनके समान बन सकता है।

स्वाध्याय से ज्ञान बुद्धि और अनुभव बढ़ता है तथा आलस्य-शत्रु का नाश होता है। मनुष्य का जैसा भी पठन-पाठन होगा तथा संगति होगी उसके आचार विचार भी वैसे ही होंगे। अतः मनुष्य को चाहिये कि वह सदा सत्पुरुषों की संगति में रहे। अर्थात् सदा सद्गुरुओं की विनय-भक्ति करना, तथा सत्संग करने का नियम रखना चाहिए।

स्वाध्याय के ५ अंग हैं। उन्हीं के अनुसार ही सत समागम की टेव रखनी चाहिये। पाँच अंग निम्न हैं —

१ वाचना—गुरु के पास या स्वयं पढ़ना।

२ पृच्छना—अपनी शंकाएं गुरु अथवा किसी अनुभवी से पूछना।

३ परावर्त्तना—पढ़े हुए भाग को पुनः सोचना या दुहराना।

४ अनुप्रेक्षा—पढ़े हुए विषय पर मनन करना।

५ धर्मकथा—अपना सिखा हुआ ज्ञान दूसरों को सुनाना, सिखलाना, व्याख्यान या चर्चा करना तथा लेखन द्वारा उसका प्रचार करना।

अतएव प्रतिदिन स्वाध्याय द्वारा थोड़ा २ ज्ञान करने से मनुष्य बहुत बड़ा ज्ञानवान बन सकता है। इसी उद्देश्य से इस ग्रन्थ का नाम 'स्वाध्याय पाठमाला' रखने का विचार था किन्तु इसमें वर्णित सभी बातों से जीवन सुखमय बनता है इसी लिये इसका नाम 'जीवन-श्रेयस्कर-पाठमाला' रखना अधिक उपयुक्त समझा गया है।

इस ग्रन्थ का प्रकाशन करने के लिये बम्बई व पालनपुर की कतिपय स्वाध्याय प्रेमी बहनें बहुत दिनों से आग्रह कर रहीं थीं इसी लिये यह द्वितीयावृत्ति छपवाई है।

कागज और छपाई की महंगाई होने पर भी यह पुस्तक सिर्फ २) रु० म दी जाने की व्यवस्था की गई है। श्री जैन गुरुकुल प्रेस ब्यावर ने इसे छापने म पूर्ण सहयोग दिया है।

प्रूफ संशोधन आदि कार्य म प० शान्तिलाल वनमाली सेठ ने तथा श्री जिनागम प्र० समिति के पंडितो ने पूर्ण परिश्रम किया है।

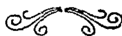
श्री श्वे स्था जैन कॉन्फरेन्स द्वारा श्री जिनागम प्रकाशन कार्यालय चल रहा है उसमे आगमों के संशोधित पाठ इसके लिये मिले हैं।

इसके लिए उक्त विद्वानों का और जिनागम प्र० कार्यालय को हार्दिक धन्यवाद दिया जाता है, इतना प्रयत्न होने पर भी प्रेस से या दृष्टिदोष से कोई भूल रह गई हो तो पाठक सुधार कर पढ़े और प्रकाशक को सूचित करेंगे तो कृपा होगी और नई आवृत्ति में सुधार किया जा सकेगा।

स्वाध्यायरत सब आत्माएँ स्वकल्याण प्राप्त करें यही भावना है।

ज्ञान पचमी
वि० सं० २ ०७

धीरजलाल के० तुरखिया
अधिष्ठाता, श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर



॥ अर्हं ॥

॥ दसवेआलियसुत्तं ॥

दुमपुप्फिया नाम पढममज्झयणं ।



धम्मो मंगलमुक्किट्ठं[1] अहिंसा संजमो तवो ।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥
जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं ।
न य पुप्फं किलामेइ सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥
एमेए समणा मुत्ता जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥
वयं च वित्तिं लब्भामो न य कोइ उवहम्मइ ।
अहागडेसु [2]रीयन्ते पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥
महुगारसमा बुद्धा जे भवंति अणिस्सिया ।
नाणापिण्डरया दन्ता तेण वुच्चन्ति साहुणो ॥ ५ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ पढमं दुमपुप्फियज्झयणं समत्तं ॥

॥ सामण्णपुव्वयं बीयमज्झयणं ॥

कहं नु कुज्जा सामण्णं जो कामे न निवारए ।
पए पए विसीयंतो संकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ॥
वत्थगन्धमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य ।
अच्छन्दा जे न भुंजंति न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥
जे य कन्ते पिए भोए लद्धे [3]विपिट्ठिकुव्वइ ।
साहीणे चयइ भोए से हु चाइ त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥

---

१ कट्ठं । २ रीयंति । ३ वि पिट्ठी ।

[1]समाइ पहाइ परिव्वयन्तो
सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ।
"न सा महं नो वि अहं पि तीसे"
इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥
आयावयाही, चय सोगमल्लं
कामे कमाही, कमियं खु दुक्खं ।
छिन्दाहि दोसं, विणएज्ज रागं,
एवं सुही होहिसि संपराए ॥ ५ ॥
पक्खन्दे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छन्ति वन्तयं भोत्तुं कुले जाया अगन्धणे ॥ ६ ॥
धिरत्थु तेऽजसोकामी[2] जो तं जीवियकारणा ।
वन्तं इच्छसि आवेउं ! सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥
अहं च भोगरायस्स तं च सि अन्धगवण्हिणो ।
मा कुले गन्धणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥
जइ तं काहिसि भावं जा जा दिच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हडो अट्ठियप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥
तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥ १० ॥
एवं करेंति संबुद्धा पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से पुरिसुत्तमो ॥ ११ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ बीयं सामण्णपुव्वयज्झयणं समत्तं ॥

---

१ समाए पहाए । २ अजसोकामी ।

॥ खुड्डियायार कहा नाम तइयमज्झयणं ॥

संजमे सुट्ठिअप्पाणं विप्पमुक्काण ताइणं ।
तेसिमेयमणाइण्णं निग्गन्थाण महेसिणं ॥ १ ॥
उद्देसियं कीयगडं नियागं अभिहडाणि य ।
राइभत्ते सिणाणे य गन्धमल्ले य वीयणे ॥ २ ॥
सन्निही गिहिमत्ते य रायपिण्डे किमिच्छए ।
संवाहणा दन्तपहोयणा य संपुच्छणा देहपलोयणा य ॥ ३ ॥
अट्ठावए य नालीए छत्तस्स य धारणट्ठाए ।
तेगिच्छं [1]पाणहा पाए समारम्भं च जोइणो ॥ ४ ॥
सिज्जायरपिण्डं च आसन्दी पलियङ्कए ।
गिहन्तरनिसिज्जा य गायस्सुव्वट्टणाणि य ॥ ५ ॥
गिहिणो वेयावडियं जा य आजीवनिवत्तिया ।
तत्तानिव्वुडभोइत्तं आउरस्सरणाणि य ॥ ६ ॥
मूलए सिङ्गबेरे य उच्छुखण्डे अनिव्वुडे ।
कन्दे मूले य सच्चित्ते फले बीए य आमए ॥ ७ ॥
सोवच्चले सिन्धवे लोणे रोमालोणे य आमए ।
सामुद्दे पंसुखारे य कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
[2]धुवणेत्ति वमणे य वत्थीकम्मविरेयणे ।
अञ्जणे दन्तवणे य गायभङ्गविभूसणे ॥ ९ ॥
सव्वमेयमणाइण्णं निग्गन्थाण महेसिणं
संजमम्मि य जुत्ताणं लहुभूयविहारिणं ॥ १० ॥
पञ्चासवपरिन्नाया तिगुत्ता छसु संजया ।
पञ्चनिग्गहणा धीरा निग्गन्था उज्जुदंसिणो ॥ [१]१ ॥
आयावयन्ति गिम्हेसु, हेमन्तेसु अवाउडा ।
वासासु पडिसंलीणा संजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥

१ पाहणा । २ धूवणे ।

परीसहरिऊदन्ता [1]धुयमोहा जिइंदिया।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमंति महेसिणो ॥ १३ ॥
दुक्कराइं करेत्ताणं दुसहाइं सहेत्तु य।
केइत्थ देवलोगेसु केइ सिज्झंति नीरया ॥ १४ ।
खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता ताइणो परिनिव्वुडा ॥१५॥ त्ति बेमि ॥
॥ तइयं खुड्डियायारकहज्झयणं समत्तं ॥

॥ छज्जीवणिया नाम चउत्थमज्झयणं ॥

सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुअक्खाया सुपण्णत्ता। सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती ॥

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुअक्खाया सुपण्णत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती?

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुअक्खाया सुपण्णत्ता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती। तं जहा-पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया वणस्सइकाइया तसकाइया ॥

पुढवी चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं। आउ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढो-

[1] धूम०।

सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं। तेउ चित्तमंतमक्खाया अणेग-जीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं। वाउ चित्तमंत-मक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं। वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं त जहा-अग्गबीया मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया बीयरुहा, समुच्छिमा, तणलया, वणस्सइकाइया सबीया चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं॥

से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा त जहा—अण्डया पोयया जराउया रसया संसेइमा समुच्छिमा उब्भिया उव-वाइया, जेसिं केसिंचि पाणाणं अभिक्कन्त पडिक्कन्त संकुचिय पसारिय रुय भंत तसिय पलाइय आगइगइविन्नाया जे य कीडपयंगा जा य कुन्थुपिपीलिया सव्वे बेइंदिया सव्वे तेइंदिया सव्वे चउरिंदिया सव्वे पंचिंदिया सव्वे तिरिक्खजोणिया सव्वे नेरइया सव्वे मणुया सव्वे देवा सव्वे पाणा परमाहम्मिया। एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ "तसकाउ" त्ति पवुच्चइ॥

इच्चेसिं छण्हं जीवनिकायाणं नेव सयं दंडं समारंभिज्जा, नेवन्नेहिं दंडं समारंभाविज्जा, दंडं समारम्भन्ते वि अन्ने न [1]समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

पढमे भंते! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं। सव्वं भंते! पाणाइवायं पच्चक्खामि, से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेव सयं पाणे अइवाएज्जा, नेवन्नेहिं पाणे अइवा

1 समणुजाणिज्जा।

यावेज्जा, पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणामि जाव-ज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। पढमे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि, सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥१॥

अहावरे दोच्चे भन्ते! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते! मुसावायं पच्चक्खामि, से कोहा वा लोहा वा भया वा हासा वा नेव सयं मुसं वएज्जा, नेवन्नेहिं मुसं वायावेज्जा, मुसं वयन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। दोच्चे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥२॥

अहावरे तच्चे भन्ते! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, से गामे वा नयरे वा रण्णे वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमन्तं वा अचित्तमन्तं वा नेव सयं अदिन्नं गिण्हेज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हावेज्जा, अदिन्नं गिण्हन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जाव-ज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते! पडि-क्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। तच्चे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥३॥

अहावरे चउत्थे भन्ते! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते! मेहुणं पच्चक्खामि से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्ख-जोणियं वा नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवावेज्जा

मेहुणं सेवन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। चउत्थे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥४॥

अहावरे पचमे भन्ते! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते! परिग्गहं पच्चक्खामि, से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हेज्जा, नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हावेज्जा, परिग्गहं परिगिण्हन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। पचमे भन्ते! महव्वए उवट्ठिओ मि, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥५॥

अहावरे छट्ठे भन्ते! वए राइभोयणाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते! राइभोयणं पच्चक्खामि से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेव सयं राइं भुंजेज्जा, नेवन्नेहिं राइं भुंजावेज्जा राइं भुंजन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। छट्ठे भन्ते! वए उवट्ठिओ मि, सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं ॥

इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं राइभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठयाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥६॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से पुढविं वा भित्तिं वा सिलं वा लेलुं वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण वा पाएण वा कट्ठेण वा किलिंचेण[1] वा अङ्गुलियाए वा सलागाए वा सलागहत्थेण वा न आलिहेज्जा न विलिहेज्जा न घट्टेज्जा न भिन्देज्जा, अन्नं नालिहावेज्जा न विलिहावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिन्दावेज्जा, अन्नं आलिहन्तं वा विलिहन्तं वा घट्टन्तं वा भिन्दन्तं वा न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से उदगं वा ओसं वा हिमं वा महियं वा करगं वा हरतणुगं वा सुद्धोदगं वा उदउल्लं वा कायं उदउल्लं वा वत्थं, ससिणिद्धं वा कायं, ससिणिद्धं वा वत्थं नामुसेज्जा न संफुसेज्जा न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा न अक्खोडेज्जा न पक्खोडेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा, अन्नं नामुसावेज्जा न संफुसावेज्जा न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा न अक्खोडावेज्जा न पक्खोडावेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्नं आमुसन्तं वा संफुसन्तं वा आवीलन्तं वा पवीलन्तं वा अक्खोडन्तं वा पक्खोडन्तं वा आयावन्तं वा पयावन्तं वा न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं

[1] कलिंचेण।

न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥८॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से अगणिं वा इङ्गालं वा मुम्मुरं वा अच्चिं वा जालं वा अलायं वा सुद्धागणिं वा उक्कं वा न उंजेज्जा न घट्टेज्जा न भिंदेज्जा न उज्जालेज्जा न पज्जालेज्जा न निव्वावेज्जा, अन्नं न उंजावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा न उज्जालावेज्जा न पज्जालावेज्जा न निव्वावेज्जा, अन्नं उंजंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा उज्जालंतं वा पज्जालंतं वा निव्वावंतं वा न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥९॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से सिएण वा विहुयणेण वा तालियंटेण वा पत्तेण वा पत्तभंगेण वा साहाए वा साहाभंगेण वा पिहुणेण वा पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा अप्पणो वा कायं बाहिरं वा वि पोग्गलं न [1]फूमेज्जा, न वीएज्जा अन्नं न फूमावेज्जा न वीआवेज्जा अन्नं फूमंतं वा वीयंतं वा न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि

१ फुमेज्जा।

गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१०॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से बीएसु वा बीयपइट्ठेसु वा रूढेसु वा रूढपइट्ठेसु वा जाएसु वा जायपइट्ठेसु वा हरिएसु वा हरियपइट्ठेसु वा छिन्नेसु वा छिन्नपइट्ठेसु वा सचित्तेसु वा सचित्तकोलपडिनिस्सिएसु वा न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न निसीएज्जा न तुयट्टेज्जा, अन्नं न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा न निसीयावेज्जा न तुयट्टावेज्जा, अन्नं गच्छन्तं वा चिट्ठन्तं वा निसीयन्तं वा तुयट्टन्तं वा न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते[1] पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ११ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से कीडं वा पयंगं वा कुन्थुं वा पिवीलियं वा हत्थंसि वा पायंसि वा बाहुंसि वा ऊरुंसि वा उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा पडिग्गहंसि वा कम्बलंसि वा पाय-पुञ्छणंसि वा रयहरणंसि वा गोच्छगंसि वा उण्डगंसि वा दण्डगंसि वा पीढगंसि वा फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथारगंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगन्तमवणेज्जा, नो णं संघायमावज्जेज्जा ॥ १२ ॥

अजयं चरमाणो उ पाणभूयाइं हिंसइ ।
बन्धई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥१॥

१ म

अजयं चिट्ठमाणो उ पाणभूयाइं हिंसइ।
बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥२॥
अजयं आसमाणो उ पाणभूयाइं हिंसइ।
बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥३॥
अजयं सयमाणो उ पाणभूयाइं हिंसइ।
बन्धइ पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥४॥
अजयं भुञ्जमाणो उ पाणभूयाइं हिंसइ।
बन्धइ पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥५॥
अजयं भासमाणो उ पाणभूयाइं हिंसइ।
बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥६॥
कहं चरे ? कहं चिट्ठे ? कहमासे ? कहं सए ?
कहं भुञ्जन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बन्धइ ? ॥७॥
जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे, जयं सए।
जयं भुञ्जन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बन्धइ ॥८॥
सव्वभूयप्पभूयस्स सम्मं भूयाइं पासओ।
पिहियासवस्स दन्तस्स पावं कम्मं न बन्धइ ॥९॥
पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए।
अन्नाणी किं काही किं वा [1]नाहिइ छेयपावगं ॥१०॥
सोच्चा जाणइ कल्लाणं सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयं पि जाणइ सोच्चा जं छेयं तं समायरे ॥११॥
जो जीवे वि न याणाइ अजीवे वि न याणइ।
जीवाजीवे अयाणन्तो कहं सो नाहिइ संजमं ॥१२॥
जो जीवे वि वियाणेइ अजीवे वि वियाणइ।
जीवाजीवे वियाणन्तो सो हु नाहिइ संजमं ॥१३॥

---

१ नाही। २ सेय।

जया जीवमजीवे य दो वि एए वियाणइ ।
तया गइ बहुविह सव्वजीवाण जाणइ ॥१४॥
जया गइ बहुविह सव्वजीवाण जाणइ ।
तया पुण्ण च पाव च बध मोक्ख च जाणइ ॥१५॥
जया पुण्ण च पाव च बध मोक्ख च जाणइ ।
तया निव्विन्दए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥
जया निव्विन्दए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ।
तया चयइ सजोग सब्भिंतरबाहिर ॥ १७ ॥
जया चयइ सजोग सब्भिंतरबाहिर ।
तया मुण्डे भवित्ताण पव्वइए अणगारियं ॥ १८ ॥
जया मुण्डे भवित्ताण पव्वइए अणगारियं ।
तया सवरमुक्किट्ठ धम्म फासे अणुत्तर ॥ १९ ॥
जया सवरमुक्किट्ठ धम्म फासे अणुत्तर ।
तया धुणइ कम्मरय अबोहिकलुस कड ॥ २० ॥
जया धुणइ कम्मरय अबोहिकलुस कड ।
तया सव्वत्तग नाण दसण चाभिगच्छइ ॥ २१ ॥
जया सव्वत्तग नाण दसण चाभिगच्छइ ।
तया लोगमलोग च जिणो जाणइ केवली ॥ २२ ॥
जया लोगमलोग च जिणो जाणइ केवली ।
तया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जइ ॥ २३ ॥
जया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जइ ।
तया कम्म खवित्ताण सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥ २४ ॥
जया कम्म खवित्ताण सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
तया लोगमत्थयत्थो सिद्धो हवइ सासओ ॥ २५ ॥
सुहसायगस्स समणस्स सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।
उच्छोलणापहोअस्स दुलहा सुगइ तारिसगस्स ॥ २६ ॥

तवोगुणपहाणस्स उज्जुमइ खन्तिसंजमरयस्स ।
परीसहे जिणन्तस्स सुलहा सुगइ तारिसगस्स ॥ २७ ॥
पच्छा वि ते पयाया खिप्पं गच्छन्ति अमरभवणाइं ।
जेसिं पिओ तवो संजमो य खन्ती य बम्भचेरं च ॥ २८ ॥
इच्चेयं छज्जीवणियं सम्मद्दिट्ठी सया जए ।
दुल्लहं लहित्तु सामण्णं कम्मुणा न विराहेज्जासि ॥ २९ ॥
॥ त्ति बेमि ॥

॥ चउत्थं छज्जीवणियज्झयणं समत्तं ॥

॥ पिंडेसणा नाम पंचमज्झयणं-पढमो उद्देसओ ॥

संपत्ते भिक्खकालम्मि असंभन्तो अमुच्छिओ ।
इमेण कमजोगेण भत्तपाणं गवेसए ॥ १ ॥
से गामे वा नगरे वा गोयरग्गगओ मुणी ।
चरे मन्दमणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण चेयसा ॥ २ ॥
पुरओ जुगमायाए पेहमाणो महिं चरे ।
वज्जन्तो बीयहरियाइं पाणे य दगमट्टियं ॥ ३ ॥
ओवायं विसमं खाणुं विज्जलं परिवज्जए ।
संकमेण न गच्छेज्जा विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥
पवडन्ते व से तत्थ पक्खलन्ते व संजए ।
हिंसेज्ज पाणभूयाइं तसे अदुव थावरे ॥ ५ ॥
तम्हा तेण न गच्छेज्जा संजए सुसमाहिए ।
सइ अन्नेण मग्गेण जयमेव परक्कमे ॥ ६ ॥
इङ्गालं छारियं रासिं तुसरासिं च गोमयं ।
ससरक्खेहिं पाएहिं संजओ तं नइक्कमे ॥ ७ ॥
न चरेज्ज वासे वासन्ते महियाए व पडन्तिए ।
महावाए व वायन्ते तिरिच्छसंपाइमेसु वा ॥ ८ ॥

न चरेज्ज वेसासामन्ते बम्भचेरवसाणुए ।
बम्भयारिस्स दंतस्स होज्जा तत्थ विसोत्तिया ॥ ९ ॥
[2]अणायणे चरंतस्स संसग्गीए अभिक्खणं ।
होज्ज वयाणं पीला सामण्णम्मि य संसओ ॥ १० ॥
तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वज्जए वेससामन्तं मुणी एगंतमस्सिए ॥ ११ ॥
साणं सूइयं गाविं दित्तं गोणं हयं गयं ।
संडिब्भं कलहं जुद्धं दूरओ परिवज्जए ॥ १२ ॥
अणुन्नए नावणए अप्पहिट्ठे अणाउले ।
इंदियाइं जहाभागं दमइत्ता मुणी चरे ॥ १३ ॥
दवदवस्स न गच्छेज्जा भासमाणो य गोयरे ।
हसंतो नाभिगच्छेज्जा कुलं उच्चावयं सया ॥ १४ ॥
आलोयं थिग्गलं दारं संधिं दगभवणाणि य ।
चरंतो न विनिज्झाए संकट्ठाणं विवज्जए ॥ १५ ॥
रन्नो गिहवईणं च रहस्सारक्खियाण[3] य ।
संकिलेसकरं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥ १६ ॥
पडिकुट्ठकुलं न पविसे मामगं परिवज्जए ।
अचियत्तकुलं न पविसे चियत्तं पविसे कुलं ॥ १७ ॥
साणीपावारपिहियं अप्पणा नावपंगुरे ।
कवाडं नो पणोल्लेज्जा ओग्गहंसि अजाइया ॥ १८ ॥
गोयरग्गपविट्ठो उ[4] वच्चमुत्तं न धारए ।
ओगासं फासुयं नच्चा अणुन्नविय वोसिरे ॥ १९ ॥
नीयदुवारं तमसं कोट्ठगं परिवज्जए ।
अचक्खुविसओ जत्थ पाणा दुप्पडिलेहगा ॥ २० ॥

१ वसाणुए । २ अणायणे । ३–याणि । ४ उ ।

तत्थ पुप्फाइं बीयाइं विप्पइण्णाइं कोट्ठए ।
अहुणोवलित्तं उल्लं दट्ठूणं परिवज्जए ॥ २१ ॥
एलगं दारगं साणं वच्छगं वावि कोट्ठए ।
उल्लंघिया न पविसे विऊहित्ताण व संजए ॥ २२ ॥
असंसत्तं पलोएज्जा नाइदूरावलोयए ।
उप्फुल्लं न विणिज्झाए नियट्टिज्ज अयंपिरो ॥ २३ ॥
अइभूमिं न गच्छेज्जा गोयरग्गगओ मुणी ।
कुलस्स भूमिं जाणित्ता मियं भूमिं परक्कमे ॥ २४ ॥
तत्थेव पडिलेहिज्जा भूमिभागं वियक्खणो ।
सिणाणस्स य वच्चस्स संलोगं परिवज्जए ॥ २५ ॥
दगमट्टियआयाणे बीयाणि हरियाणि य ।
परिवज्जंतो चिट्ठेज्जा सव्विंदियसमाहिए ॥ २६ ॥
तत्थ से चिट्ठमाणस्स आहरे पाणभोयणं ।
अकप्पियं न गेण्हिज्जा, पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥ २७ ॥
आहरन्ती सिया तत्थ परिसाडेज्ज भोयणं ।
दिन्तियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ २८ ॥
सम्मद्दमाणी पाणाणि बीयाणि हरियाणि य ।
असंजमकरिं नच्चा तारिसं परिवज्जए ॥ २९ ॥
साहट्टु निक्खिवित्ताणं सच्चित्तं घट्टियाणि य ।
तहेव समणट्ठाए उदगं संपणोल्लिया ॥ ३० ॥
ओगाहइत्ता चलइत्ता आहरे पाणभोयणं ।
दिन्तियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ३१ ॥
पुरेकम्मेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ३२ ॥
एवं उदउल्ले ससिणिद्धे ससरक्खे मट्टियाऊसे ।
हरियाले हिंगुलुए मणोसिला अंजणे लोणे ॥ ३३ ॥

गोरयरणिएयसेडिय मोरट्ठियपिट्ठुपक्कुसवय य।
उक्किट्ठमसंसट्ठे समट्ठे चेव बोद्धव्वे ॥ ३८ ॥
असंसट्ठेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा ज तत्थेसणियं भवे ॥ ३६ ॥
दोण्हं तु भुजमाणाणं एगो तत्थ निमंतए।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा छन्दं से पडिलेहए ॥ ३७ ॥
दोण्हं तु भुंजमाणाणं दो वि तत्थ निमंतए।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥ ३८ ॥
गुव्विणीए उवन्नत्थं विविहं पाणभोयणं।
भुंजमाणं विवज्जेज्जा भुत्तसेसं पडिच्छए ॥ ३६ ॥
सिया य समणट्ठाए गुव्विणी कालमासिणी।
उट्ठिया वा निसीएज्जा निसन्ना वा पुणुट्ठए ॥ ४० ॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४१ ॥
थणगं पिज्जमाणी दारगं वा कुमारियं।
तं निक्खिवित्तु रोअंतं आहरे पाणभोयणं ॥ ४२ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४३ ॥
जं भवे भत्तपाणं तु कप्पाकप्पम्मि संकियं।
दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४४ ॥
दगवारएण पिहियं नीसाए पीढएण वा।
लोढेण वा वि लेवेण सिलेसेण व केणइ ॥ ४५ ॥
तं च उब्भिंदिया दिज्जा समणट्ठाए व दावए।
दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४६ ॥
असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा दाणट्ठा पगडं इमं ॥ ४७ ॥

तारिसं भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ४८ ॥
असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा पुण्णट्ठा पगडं इमं ॥ ४९ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५० ॥
असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा वणिमट्ठा पगडं इमं ॥ ५१ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५२ ॥
असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा समणट्ठा पगडं इमं ॥ ५३ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५४ ॥
उद्देसियं कीयगडं पूइकम्मं च आहडं ।
अज्झोयरपामिच्चं मीसजायं च वज्जए ॥ ५५ ॥
उग्गमं से य पुच्छेज्जा कस्सट्ठा केण वा कडं ।
सोच्चा निस्संकियं सुद्धं पडिगाहेज्ज संजए ॥ ५६ ॥
असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
पुप्फेसु होज्ज उम्मीसं बीएसु हरिएसु वा ॥ ५७ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ५८ ॥
असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
उदगम्मि होज्ज निक्खित्तं उत्तिंगपणगेसु वा ॥ ५९ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
दितियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ६० ॥

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
[1]अगणिम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च संघट्टिया दए ॥ ६१ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ६२ ॥
एवं उस्सक्किया ओसक्किया उज्जालिया पज्जालिया निव्वाविया
उस्सिंचिया निस्सिंचिया उव्वत्तिया ओयारिया दए ॥६३॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ६४ ॥
होज्ज कट्ठं सिलं वा वि इट्टालं वा वि एगया।
ठवियं संकमट्ठाए तं च होज्ज चलाचलं ॥ ६५ ॥
न तेण भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो।
गम्भीरं झुसिरं चेव सव्विंदियसमाहिए ॥ ६६ ॥
निस्सेणिं फलगं पीढं उस्सवित्ताणमारुहे।
मंचं कीलं च पासायं समणट्ठाए व दावए ॥ ६७ ॥
दुरूहमाणी पवडेज्जा हत्थं पायं व लूसए।
पुढविजीवे वि हिंसेज्जा जे य तं निस्सिया जगा[2] ॥ ६८ ॥
एयारिसे महादोसे जाणिऊण महेसिणो।
तम्हा मालोहडं भिक्खं न पडिगेण्हंति संजया ॥ ६९ ॥
कंदं मूलं पलंबं वा आमं छिन्नं व सन्निरं।
तुंबागं सिंगबेरं च आमगं परिवज्जए ॥ ७० ॥
तहेव सत्तुचुण्णाइं कोलचुण्णाइं आवणे।
सक्कुलिं फाणियं पूयं अन्नं वा वि तहाविहं ॥ ७१ ॥
विक्कायमाणं पसढं रएण परिफासियं।
दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ७२ ॥

---

१ तेउम्मि। २ जगा।

बहुअट्ठियं पोग्गलं अणिमिसं वा बहुकंटयं ।
अत्थियं तिंदुयं बिल्लं उच्छुखंडं व सिंबलिं ॥ ७३ ॥
अप्पे सिया भोयणजाए बहुउज्झियधम्मिए ।
दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ७४ ॥
तहेवुच्चावयं पाणं अदुवा वारधोयणं ।
संसेइमं चाउलोदगं अहुणाधोयं विवज्जए ॥ ७५ ॥
जं जाणेज्ज चिराधोयं मईए दंसणेण वा ।
पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा जं च निस्संकियं भवे ॥ ७६ ॥
अजीवं परिणयं नच्चा पडिगाहेज्ज संजए ।
अह संकियं भवेज्जा आसाइत्ताण रोयए ॥ ७७ ॥
थोवमासायणट्ठाए हत्थगम्मि दलाहि मे ।
मा मे अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ॥ ७८ ॥
तं च अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ।
दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ ७९ ॥
तं च होज्ज अकामेणं विमणेण पडिच्छियं ।
तं अप्पणा न पिबे नो वि अन्नस्स दावए ॥ ८० ॥
एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥ ८१ ॥
सिया य गोयरग्गगओ इच्छेज्जा परिभोत्तुयं[1] ।
कोट्ठगं भित्तिमूलं वा पडिलेहित्ताण फासुयं ॥ ८२ ॥
अणुन्नवित्तु मेहावी पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ भुंजेज्ज संजए ॥ ८३ ॥
तत्थ से भुंजमाणस्स अट्ठियं कंटओ सिया ।
तणकट्ठसक्करं वा वि अन्नं वा वि तहाविहं ॥ ८४ ॥

१-भुंजिउं

न उक्खिविउं न निक्खिवे आसएण न छड्डए।
हत्थेण तं गहेऊण एगंतमवक्कमे ॥ ८५ ॥
एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया।
जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥ ८६ ॥
सिया य भिक्खू इच्छेज्जा सेज्जमागम्म भोत्तुअं।
सपिंडपायमागम्म उंडुयं पडिलेहिया ॥ ८७ ॥
विणएण पविसित्ता सगासे गुरुणो मुणी।
इरियावहियमायाय आगओ य पडिक्कमे ॥ ८८ ॥
आभोएत्ताण नीसेसं अइयारं जहक्कमं।
गमणागमणे चेव भत्तपाणे य संजए ॥ ८९ ॥
उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण चेयसा।
आलोए गुरुसगासे जं जहा गहियं भवे ॥ ९० ॥
न सम्ममालोइयं होज्जा पुव्विं पच्छा व जं कडं।
पुणो पडिक्कमे तस्स वोसट्ठो चिंतए इमं ॥ ९१ ॥
अहो जिणेहिंऽसावज्जा वित्ती साहूण देसिया।
मोक्खसाहणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥ ९२ ॥
नमोक्कारेण पारेत्ता करेत्ता जिणसंथवं।
सज्झायं पट्ठवित्ताणं वीसमेज्ज खणं मुणी ॥ ९३ ॥
वीसमंतो इमं चिंते हियमट्ठं लाभमट्ठिओ[1]।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा साहू होज्जामि तारिओ ॥ ९४ ॥
साहवो तो चियत्तेणं निमंतेज्ज जहक्कमं।
जइ तत्थ केइ इच्छेज्जा तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥ ९५ ॥
अह कोइ न इच्छेज्जा तओ भुंजेज्ज एक्कओ।
आलोए भायणे साहू जयं अपरिसाडियं ॥ ९६ ॥

१–मस्सिओ।

तहेवुच्चावया पाणा भत्तट्ठाए समागया ।
तउज्जुयं न गच्छिज्जा जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥
गोयरग्गपविट्ठो उ न निसीएज्ज कत्थइ ।
कहं च न पबंधेज्जा चिट्ठित्ताण व संजए ॥ ८ ॥
अग्गलं फलिहं दारं कवाडं वा वि संजए ।
अवलंबिया न चिट्ठिज्जा गोयरग्गगओ मुणी ॥ ९ ॥
समणं माहणं वा वि किविणं वा वणीमगं ।
उवसंकमंतं भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए ॥ १० ॥
तं अइक्कमित्तु न पविसे न चिट्ठे चक्खुगोयरे ।
एगंतमवक्कमित्ता तत्थ चिट्ठिज्ज संजए ॥ ११ ॥
वणीमगस्स वा तस्स दायगस्सुभयस्स वा ।
अप्पत्तियं सिया होज्जा लहुत्तं पवयणस्स वा ॥ १२ ॥
पडिसेहिए व दिन्ने वा तओ तम्मि नियत्तिए ।
उवसंकमेज्ज भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए ॥ १३ ॥
उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं ।
अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं तं च संलुंचिया दए ॥ १४ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ १५ ॥
उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं ।
अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं तं च संमद्दिया दए ॥ १६ ॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥ १७ ॥
सालुयं वा विरालियं कुमुयं उप्पलनालियं ।
मुणालियं सासवनालियं उच्छुखंडं अनिव्वुडं ॥१८॥
तरुणगं वा पवालं रुक्खस्स तणगस्स वा ।
अन्नस्स वा वि हरियस्स आमगं परिवज्जए ॥१९॥

तरुणियं वा छिवाडिं आमियं भज्जियं सइं।
दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥
तहा कोलमणुस्सिन्नं वेलुयं कासवनालियं।
तिलपप्पडगं नीमं आमगं परिवज्जए ॥२१॥
तहेव चाउलं पिट्ठं वियडं वा तत्तनिव्वुडं।
तिलपिट्ठपूइपिन्नागं आमगं परिवज्जए ॥[illegible]॥
कविट्ठं माउलिंगं च मूलगं मूलगत्तियं।
आमं असत्थपरिणयं मणसा वि न पत्थए ॥[illegible]॥
तहेव फलमंथूणि बीयमंथूणि जाणिया।
बिहेलगं पियालं च आमगं परिवज्जए ॥[illegible]॥
समुयाणं चरे भिक्खू कुलं उच्चावयं [illegible]।
नीयं कुलमइक्कम्म ऊसढं नाभिधारए ॥[illegible]॥
अदीणो वित्तिमेसेज्जा न विसीएज्ज [illegible]।
अमुच्छिओ भोयणम्मि मायन्ने [illegible] ॥[illegible]॥
बहुं परघरे अत्थि विविहं खाइम[illegible]।
न तत्थ पंडिओ कुप्पे इच्छा [illegible] ॥[illegible]॥
सयणासणवत्थं वा भत्तपाणं व [illegible]।
अदेंतस्स न कुप्पेज्जा पच्चक्खे [illegible] ॥[illegible]॥
इत्थियं पुरिसं वा वि डहरं वा [illegible]।
वंदमाणं न जाएज्जा नो य [illegible] ॥[illegible]॥
जे न वंदे न से कुप्पे वंदिओ [illegible]।
एवमन्नेसमाणस्स साम[illegible] ॥[illegible]॥
सिया एगइओ लद्धुं लोभे[illegible]।
मा मेयं दाइयं संतं [illegible] ॥[illegible]॥

अत्तट्ठागुरुओ लुद्धो बहु पाव पकुव्वइ ।
दुत्तोसओ य से होइ निव्वाण च न गच्छइ ॥ ३२ ॥

सिया एगइओ लद्धु विविह पाणभोयण ।
भद्दग भद्दग भोच्चा विवण्ण विरसमाहरे ॥ ३३ ॥

जाणतु ता इमे समणा आययट्ठी अय मुणी ।
सतुट्ठो सेवए पत लूहवित्ती सुतोसओ ॥ ३४ ॥

पूयणट्ठा जसोकामी माणसम्माणकामए ।
बहु पसवई पाव मायासल्ल च कुव्वइ ॥ ३५ ॥

सुर वा मेरग वा वि अन्न वा मज्जग रस ।
ससक्ख न पिबे भिक्खू जस सारक्खमप्पणो ॥ ३६ ॥

पियए एगओ तेणो न मे कोइ वियाणइ ।
तस्स पस्सह दोसाइ नियडिं च सुणेह मे ॥ ३७ ॥

वड्ढइ सोंडिया तस्स मायामोस च भिक्खुणो ।
अयसो य अनिव्वाण सयय च असाहुया ॥ ३८ ॥

निच्चुव्विग्गो जहा तेणो अत्तकम्मेहि दुम्मई ।
तारिसो मरणते वि नाराहेइ सवर ॥ ३९ ॥

आयरिए नाराहेइ समणे यावि तारिसे ।
गिहत्था वि ण गरहति जेण जाणति तारिस ॥ ४० ॥

एव तु अगुणप्पेही गुणाण च विवज्जओ ।
तारिसो मरणते वि नाराहेइ सवर ॥ ४१ ॥

तव कुव्वइ मेहावी पणीय वज्जए रस ।
मज्जप्पमायविरओ तवस्सी अइउक्कसो ॥ ४२ ॥

तस्स पस्सह कल्लाण अणेगसाहुपूइय ।
विउल अत्थसजुत्त कित्तइस्स सुणेह मे ॥ ४३ ॥

एवं तु [1]गुणप्पेही अगुणाणं च विवज्जओ।
तारिसो मरणंते वि आराहेइ संवरं ॥ ४४ ॥
आयरिए आराहेइ समणे यावि तारिसे।
गिहत्था वि णं पूयंति जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥
तवतेणे [2]वयतेणे रूवतेणे य जे नरे।
आयारभावतेणे य कुव्वइ देवकिब्बिसं ॥४६॥
लद्धूण वि देवत्तं उववन्नो देवकिब्बिसे।
तत्थावि से न याणाइ किं मे किच्चा इमं फलं ॥४७॥
तत्तो वि से चइत्ताणं लब्भिही एलमूययं।
नरयं तिरिक्खजोणिं वा बोही जत्थ सुदुल्लहा ॥४८॥
एयं च दोसं दट्ठूणं नायपुत्तेण भासियं।
अणुमायं पि मेहावी मायामोसं विवज्जए ॥४९॥
सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं संजयाण बुद्धाण सगासे।
तत्थ भिक्खु सुप्पणिहिइंदिए तिव्वलज्जगुणवं
विहरेज्जासि ॥५०॥ त्ति बेमि॥

॥ पंचमज्झयणस्स पिंडेसणाए बीओ उद्देसओ समत्तो ॥

॥ महल्लियायार कहा (धम्मत्थकाम) नाम छट्ठमज्झयणं ॥

नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं।
गणिमागमसंपन्नं उज्जाणम्मि समोसढं ॥१॥
रायाणो रायमच्चा य माहणा अदुव खत्तिया।
पुच्छंति निहुयप्पाणो कहं भे आयारगोयरो ॥२॥
तेसिं सो निहुओ दंतो सव्वभूयसुहावहो।
सिक्खाए सुसमाउत्तो आइक्खइ वियक्खणो ॥३॥

इरि धम्मत्थकामाणं निग्गंथाणं सुणेह मे ।
आयारगोयरं भीमं सयलं दुरहिट्ठियं ॥४॥
नन्नत्थ एरिसं वुत्तं जं लोए परमदुच्चरं ।
विउलट्ठाणभाइस्स न भूयं न भविस्सइ ॥५॥
सखुड्डगवियत्ताणं वाहियाणं च जे गुणा ।
अखंडफुडिया कायव्वा तं सुणेह जहा तहा ॥६॥
दस अट्ठ य ठाणाइं जाइं बालोऽवरज्झइ ।
तत्थ अन्नयरे ठाणे निग्गंथत्ताओ भस्सइ ॥७॥
वयछक्कं कायछक्कं अकप्पो गिहिभायणं ।
पलियंकनिसेज्जा य सिणाणं सोभवज्जणं ॥८॥
तत्थिमं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं ।
अहिंसा निउणा दिट्ठा सव्वभूएसु संजमो ॥ ९ ॥
जावंति लोए पाणा तसा अदुव थावरा ।
ते जाणमजाणं वा न हणे नो वि घायए ॥ १० ॥
सव्वजीवा वि इच्छंति जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणवहं घोरं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥ ११ ॥
अप्पणट्ठा परट्ठा वा कोहा वा जइ वा भया ।
हिंसगं न मुसं बूया नो वि अन्नं वयावए ॥ १२ ॥
मुसावाओ य लोगम्मि सव्वसाहूहिं गरहिओ ।
अविस्सासो य भूयाणं तम्हा मोसं विवज्जए ॥ १३ ॥
चित्तमंतमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं ।
दंतसोहणमेत्तं पि ओग्गहंसि अजाइया ॥ १४ ॥
तं अप्पणा न गेण्हंति नो वि गेण्हावए परं ।
अन्नं वा गेण्हमाणं पि नाणुजाणंति संजया ॥ १५ ॥
अबंभचरियं घोरं पमायं दुरहिट्ठियं ।
नायरंति मुणी लोए भेयाययणवज्जिणो ॥ १६ ॥

मूलमेयमहम्मस्स महादोससमुस्सयं ।
तम्हा मेहुणसंसग्गं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥ १७ ॥

विडमुब्भेइमं लोणं तेल्लं सप्पिं च फाणियं ।
न ते संनिहिमिच्छंति नायपुत्तवओरया ॥ १८ ॥
लोहस्सेस अणुफासो मन्ने अन्नयरामवि ।
जे सिया सन्निहीकामे गिही, पव्वइए न से ॥ १९ ॥
जं पि वत्थं व पायं वा कंबलं पायपुंछणं ।
तं पि संजमलज्जट्ठा धारंति परिहरंति य ॥ २० ॥
न सो परिग्गहो वुत्तो नायपुत्तेण ताइणा ।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २१ ॥
सव्वत्थुवहिणा बुद्धा संरक्खणपरिग्गहे ।
अवि अप्पणो वि देहंमि नायरंति ममाइयं ॥ २२ ॥
अहो निच्चं तवोकम्मं सव्वबुद्धेहिं वण्णियं ।
जा य लज्जासमा वित्ती एगभत्तं च भोयणं ॥ २३ ॥
संतिमे सुहुमा पाणा तसा अदुव थावरा ।
जाइं राओ अपासंतो कहमेसणियं चरे ॥ २४ ॥
उदउल्लं बीयसंसत्तं पाणा निव्वडिया महिं ।
दिया ताइं विवज्जेज्जा राओ तत्थ कहं चरे ॥ २४ ॥
एयं च दोसं दट्ठूणं नायपुत्तेण भासियं ।
सव्वाहारं न भुंजंति निग्गंथा राइभोयणं ॥ २६ ॥
पुढविकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥ २७ ॥
पुढविकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ २८ ॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
पुढविकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ २९ ॥

आउकाय न हिंसंति मणसा वयस कायसा।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥ ३० ॥
आउकाय विहिंसंतो हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे चक्खु से य अचक्खुसे ॥ ३१ ॥
तम्हा एय वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं।
आउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३२ ॥
जायतेय न इच्छंति पावगं जलइत्तए।
तिक्खमन्नयरं सत्थं सव्वओ वि दुरासयं ॥ ३३ ॥
पाईणं पडिणं वा वि उड्ढं अणुदिसामवि।
अहे दाहिणओ वा वि दहे उत्तरओ वि य ॥ ३४ ॥
भूयाणमेसमाघाओ हव्ववाहो न संसओ।
तं पईवपयावट्ठा संजया किंचि नारभे ॥३५ ॥
तम्हा एय वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं।
तेउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३६ ॥
अनिलस्स समारंभं बुद्धा मन्नंति तारिसं।
सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥ ३७ ॥
तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा।
न ते वीइउमिच्छंति वीयावेऊण वा परं ॥ ३८ ॥
जं पि वत्थं व पायं वा कंबलं पायपुंछणं।
न ते वायमुईरंति, जयं परिहरंति य ॥ ३९ ॥
तम्हा एय वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं।
वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४० ॥
वणस्सइं न हिंसंति मणसा वयस कायसा।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥ ४१ ॥
वणस्सइं विहिंसंतो हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ ४२ ॥

गंभीरविजया एए पाणा दुप्पडिलेहगा ।
आसंदीपलियंको य एयमट्ठं विवज्जिया ॥ ५६ ॥
गोयरग्गपविट्ठस्स निसेज्जा जस्स कप्पइ ।
इमेरिसमणायारं आवज्जइ अबोहियं ॥ ५७ ॥
विवत्ती बंभचेरस्स पाणाण य वहे वहो ।
वणीमगपडिग्घाओ पडिकोहो अगारिणं ॥ ५८ ॥
अगुत्ती बंभचेरस्स इत्थीओ यावि संकणं ।
कुसीलवड्ढणं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥ ५९ ॥
तिण्हमन्नयरागस्स निसेज्जा जस्स कप्पइ ।
जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥ ६० ॥
वाहिओ वा अरोगी वा सिणाणं जो उ पत्थए ।
वुक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो ॥ ६१ ॥
संतिमे सुहुमा पाणा घसासु भिलुगासु य ।
जे उ भिक्खू सिणायंतो वियडेणुप्पलावए ॥ ६२ ॥
तम्हा ते न सिणायंति सीएण उसिणेण वा ।
जावज्जीवं वयं घोरं असिणाणमहिट्ठगा ॥ ६३ ॥
सिणाणं अदुवा कक्कं लोद्धं पउमगाणि य ।
गायस्सुव्वट्टणट्ठाए नायरंति कयाइ वि ॥ ६४ ॥
नगिणस्स वा वि मुंडस्स दीहरोमनहंसिणो ।
मेहुणा उवसंतस्स किं विभूसाए कारियं ॥ ६५ ॥
विभूसावत्तियं भिक्खू कम्मं बंधइ चिक्कणं ।
संसारसायरे घोरे जेणं पडइ दुरुत्तरे ॥ ६६ ॥
विभूसावत्तियं चेयं बुद्धा मन्नंति तारिसं ।
सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥ ६७ ॥
खवेंति अप्पाणममोहदंसिणो ।
तवे रया संजमअज्जवे गुणे ।

धुणंति पावाइं पुरेकडाइं
नवाइं पावाइं न ते करेंति ॥ ६८॥
सओवसंता अममा अकिंचणा
सविज्जविज्जाणुगया जसंसिणो ।
उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा
सिद्धिं विमाणाइं उवेंति ताइणो ॥ ६९ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ छट्ठमहिड्डियायारज्झयणं समत्तं ॥

॥ वक्कसुद्धी नाम सत्तममज्झयणं ॥

चउण्हं खलु भासाणं परिसंखाय पण्णवं ।
दोण्हं तु विणयं सिक्खे दो न भासेज्ज सव्वसो ॥ १ ॥
जा य सच्चा अवत्तव्वा सच्चामोसा य जा मुसा ।
जा य बुद्धेहिऽणाइण्णा न तं भासेज्ज पण्णवं ॥ २ ॥
असच्चमोसं सच्चं च अणवज्जमकक्कसं ।
समुप्पेहमसंदिद्धं गिरं भासेज्ज पण्णवं ॥ ३ ॥
एयं च अट्ठमन्नं वा जं तु नामेइ सासयं ।
स भासं सच्चमोसं पि तं पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
वितहं पि तहामुत्तिं जं गिरं भासए नरो ।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं किं पुण जो मुसं वए ॥ ५ ॥
तम्हा गच्छामो वक्खामो अमुगं वा णे भविस्सइ ।
अहं वा णं करिस्सामि एसो वा णं करिस्सइ ॥ ६ ॥
एवमाई उ जा भासा एसकालम्मि संकिया ।
संपयाईयमट्ठे वा तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥
अईयम्मि य कालम्मि पच्चुप्पन्नमणागए ।
जमट्ठं तु न जाणेज्जा एवमेयं ति नो वए ॥ ८ ॥

अईयम्मि य कालम्मि पच्चुप्पन्नमणागए ।
जत्थ संका भवे जं तु एवमेयं ति नो वए ॥ ९ ॥
अईयम्मि य कालम्मि पच्चुप्पन्नमणागए ।
निस्संकियं भवे जं तु एवमेयं ति निद्दिसे ॥ १० ॥
तहेव फरुसा भासा गुरुभूओवघाइणी ।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा जओ पावस्स आगमो ॥ ११ ॥
तहेव काणं काणे त्ति पंडगं पंडगे त्ति वा ।
वाहियं वा वि रोगि त्ति तेणं चोरे त्ति नो वए ॥ १२ ॥
एएणऽन्नेण अट्ठेण परो जेणुवहम्मई ।
आयारभावदोसन्नू न तं भासेज्ज पन्नव ॥ १३ ॥
तहेव होले गोले त्ति साणे वा वसुले त्ति य ।
दमए दुहए वा वि नेवं भासेज्ज पन्नव ॥ १४ ॥
अज्जिए पज्जिए वा वि अम्मो माउसिए त्ति य ।
पिउस्सिए भायणेज्ज त्ति धूए नत्तुणिए त्ति य ॥ १५ ॥
हले हले त्ति अन्ने त्ति भट्टे सामिणि गोमिणि ।
होले गोले वसुले त्ति इत्थियं नेवमालवे ॥ १६ ॥
नामधेज्जेण णं बूया इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥ १७ ॥
अज्जए पज्जए वा वि बप्पो चुल्लपिउ त्ति य ।
माउला भाइणेज्ज त्ति पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥ १८ ॥
हे हो हले त्ति अन्ने त्ति भट्ट सामिय गोमिय ।
होल गोल वसुले त्ति पुरिसं नेवमालवे ॥ १९ ॥
नामधेज्जेण णं बूया पुरिसगोत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥ २० ॥

पचिन्दियाण पाणाण एस इत्थी अय पुम ।
जाव ण न विजाणेज्जा ताव जाइ त्ति आलवे ॥ २१ ॥

तहेव माणुस पसु पक्खि वा वि सरीसव ।
थूले पमेइले वज्झे पायमित्ति य नो वए ॥ २२ ॥

परिवूढत्ति ण वूया वूया उवचिए त्ति य ।
सजाए पीणिए वा वि महाकाए त्ति आलवे ॥ २३ ॥

तहेव गाओ दोज्झाओ दम्मा गोरहग त्ति य ।
वाहिमा रहजोगत्ति नेव भासेज्ज पन्नव ॥ २४ ॥

जुव गवे त्ति ण वूया धेणु रसदयत्ति य ।
रहस्से महल्लए वा वि वए सवहणे त्ति य ॥ २५ ॥

तहेव गतुमुज्जाण पव्वयाणि वणाणि य ।
रुक्खा महल्ल पेहाए नेव भासेज्ज पन्नव ॥ २६ ॥

अल पासायखभाण तोरणाण गिहाण य ।
फलिहग्गलनावाण अल उदगदोणिण ॥ २७ ॥

पीढए चगबेरे य नगले मइय सिया ।
जन्तलट्ठी व नाभी वा गडिया व अल सिया ॥ २८ ॥

आसण सयण जाण होज्जा वा किंचुवस्सए ।
भूओवघाइणिं भास नेव भासेज्ज पन्नव ॥ २९ ॥

तहेव गतुमुज्जाण पव्वयाणि वणाणि य ।
रुक्खा महल्ल पेहाए एव भासेज्ज पन्नव ॥ ३० ॥

जाइमन्ता इमे रुक्खा दीहवट्टा महालया ।
पयायसाला विडिमा वए दरिसणित्ति य ॥ ३१ ॥

तहा फलाइ पक्काइ पायखज्जाइ नो वए ।

असंथडा[1] इमे अंबा बहुनिव्वडिमा[2] फला।
वएज्ज बहुसंभूया भूयरूवत्ति वा पुणो॥ ३३॥
तहेवोसहीओ पक्काओ नीलियाओ छवी इ य।
लाइमा भज्जिमाओ त्ति पिहुखज्जत्ति नो वए॥ ३४॥
रूढा बहुसंभूया थिरा ऊसढा वि य।
गब्भियाओ पसूयाओ ससाराओ त्ति आलवे॥ ३५॥
तहेव संखडिं नच्चा किच्चं कज्जं ति नो वए।
तेणगं वा वि वज्झे त्ति सुतित्थे त्ति य आवगा॥ ३६॥
संखडिं संखडिं बूया पणियट्ठत्ति तेणगं।
बहुसमाणि तित्थाणि आवगाणं वियागरे॥ ३७॥
तहा नईओ पुण्णाओ कायतिज्जत्ति नो वए।
नावाहिं तारिमाओ त्ति पाणिपेज्जत्ति नो वए॥ ३८॥
बहुवाहडा अगाहा बहुसलिलुप्पिलोदगा।
बहुवित्थडोदगा यावि एवं भासेज्ज पन्नवं॥ ३९॥
तहेव सावज्जं जोगं परस्सट्ठाए निट्ठियं।
कीरमाणं ति वा नच्चा सावज्जं नालवे मुणी॥ ४०॥
सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुच्छिन्ने सुहडे मडे।
सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति सावज्जं वज्जए मुणी॥ ४१॥
पयत्तपक्कत्ति व पक्कमालवे
पयत्तछिन्नत्ति व छिन्नमालवे।
पयत्तलट्ठत्ति व कम्महेउयं
पहारगाढत्ति व गाढमालवे॥ ४२॥
सव्वुक्कसं परग्घं वा अउलं नत्थि एरिसं।
अविक्कियमवत्तव्वं अचियत्तं चेव नो वए॥ ४३॥

१ अपक्वा। २ निवर्तिता।

सच्चमेय वइस्सामि सच्चमेय ति नो वए ।
अणुवीइ सव्व सव्वत्थ एव भासेज्ज पन्नव ॥ ४४ ॥
सुक्कीय वा सुविक्कीय अकि-ज किज्जमेव वा ।
इम गेण्ह इम मुञ्च पणिय नो वियागरे ॥ ४५ ॥
अप्पग्घे वा महग्घे वा कए वा विक्कए वि वा ।
पणियट्ठे समुप्पन्ने अणवज्ज वियागरे ॥ ४६ ॥
तहेवासजय धीरो आस एहि करेहि वा ।
सय, चिट्ठ, वयाहि त्ति नेव भासेज्ज पन्नव ॥ ४७ ॥
बहवे इमे असाहू लोए वुच्चति साहुणो ।
न लवे असाहु साहु त्ति साहु साहुत्ति आलवे ॥ ४८ ॥
नाणदसणसपन्न सजमे य तवे रय ।
एव गुणसमाउत्त सजय साहुमालवे ॥ ४९ ॥
देवाण मणुयाण च तिरियाण च वुग्गहे ।
अमुयाण जओ होउ मा वा होउ त्ति नो वए ॥ ५० ॥
वाओ वुट्ठ व सीउण्ह खेम धाय सिव ति वा ।
कया णु हो-जा एयाणि मा वा होउ त्ति नो वए ॥ ५१ ॥
तहेव मेह व णह व माणव
न देव देव त्ति गिर वएज्जा ।
समुच्छिए उन्नए वा पओए
वएज्ज वा वुट्ठ बलाहय त्ति ॥ ५२ ॥
अन्तलिक्ख त्ति ण बूया गुज्झाणुचरिय त्ति य ।
रिद्धिमत नर दिस्स रिद्धिमत ति आलवे ॥ ५३ ॥
तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा
ओहारिणी जा य परोवघाइणी ।

से 'कोह लोहा भय हास माणवो
न हासमाणो वि गिर वएज्जा ॥५४॥
सवक्कसुद्धिं समुपेहिया मुणी
गिर च दुट्ठ परिवज्जए सया ।
मिय श्रदुट्ठ श्रणुवीइ भासए
सयाण मज्झे लहइ पसंसणं ॥५५॥
भासाए दोसे य गुणे य जाणिया
तीसे य दुट्ठे परिवज्जए सया ।
छसु संजए सामणिए सया जए
वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ॥५६॥
परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए
चउक्कसायावगए अणिस्सिए ।
स निद्धुणे धुन्नमलं पुरेकडं
आराहए लोगमिणं तहा परं ॥५७॥ त्ति बेमि ॥
॥ सत्तमं वक्कसुद्धी अज्झयणं समत्तं ॥

॥ आयारपणिहिनाम अट्ठममज्झयणं ॥

आयारपणिहिं लद्धुं जहा कायव्व भिक्खुणा ।
तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥१॥
पुढवि-दग-अगणि-मारुय-तणरुक्ख-सबीयगा ।
तसा य पाणा जीव त्ति इइ वुत्तं महेसिणा ॥२॥
तेसिं अच्छणजोएण निच्चं होयव्वयं सिया ।
मणसा कायवक्केण एवं भवइ संजए ॥३॥
पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं नेव भिंदे न संलिहे ।
तिविहेण करणजोएण संजए सुसमाहिए ॥४॥

---

१ कोहलोहभयसा व माणवो । २ धुत्त० । ३ पाऊ ।

सुद्धपुढवीए न निसीए ससरक्खम्मि य आसणे ।
पमज्जित्तु निसीएज्जा जाइत्ता जस्स उग्गह ॥५॥
सीओदग न सेवेज्जा सिलावुट्ठ हिमाणि य ।
उसिणोदग तत्तफासुय पडिगाहेज्ज सजए ॥६॥
उदउल्ल अप्पणो काय नेव पुछे न सलिहे ।
समुप्पेह तहाभूय नो ण सघट्टए मुणी ॥७॥
इगाल अगणिं अच्चि अलाय वा सजोइय ।
न उजेज्जा न घट्टेज्जा नो ण निव्वावए मुणी ॥८॥
तालियटेण पत्तेण साहाए विहुणेण वा ।
न वीएज्जऽप्पणो काय बाहिर वा वि पोग्गल ॥९॥
तणरुक्ख न छिंदेज्जा फल मूल व कस्सइ ।
आमग विविह बीय मणसा वि न पत्थए ॥१०॥
गहणेसु न चिट्ठेज्जा बीएसु हरिएसु वा ।
उदगम्मि तहा निच्च उत्तिंगपणगेसु वा ॥११॥
तसे पाणे न हिंसेज्जा वाया अदुव कम्मुणा ।
उवरओ सव्वभूएसु पासेज्ज विविह जग ॥१२॥
अट्ठ सुहुमाइ पेहाए जाइ जाणित्तु सजए ।
दयाहिगारी भूएसु आस चिट्ठ सएहि वा ॥ १३ ॥
कयराइ अट्ठ सुहुमाइ ? जाइ पुच्छेज्ज सजए ।
इमाइ ताइ मेहावी आइक्खेज्ज वियक्खणे ॥ १४ ॥
सिणेह पुप्फसुहुम च पाणुत्तिंग तहेव य ।
पणग बीयहरिय च अडसुहुम च अट्ठम ॥ १५ ॥
एवमेयाणि जाणित्ता सव्वभावेण सजए ।
अप्पमत्ते जए निच्च सव्विंदियसमाहिए ॥ १६ ॥
धुव च पडिलेहेज्जा जोगसा पायकम्बल ।
सेज्जमुच्चारभूमिं च सथार अदुवासण ॥ १७ ॥

उच्चारं पासवणं खेलं सिंघाणजल्लियं ।
फासुयं पडिलेहित्ता परिट्ठावेज्ज संजए ॥ १८ ॥
पविसित्तु परागारं पाणट्ठा भोयणस्स वा ।
जयं चिट्ठे मियं भासे न य रूवेसु मणं करे ॥ १९ ॥
बहुं सुणेइ कण्णेहिं बहुं अच्छीहिं पेच्छइ ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥ २० ॥
सुयं वा जइ वा दिट्ठं न लवेज्जोवघाइयं ।
न य केणइ उवाएणं गिहिजोगं समायरे ॥ २१ ॥
निट्ठाणं रसनिज्जूढं भद्दगं पावगं ति वा ।
पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा लाभालाभं न निद्दिसे ॥ २२ ॥
न य भोयणम्मि गिद्धो चरे उंछं अयंपिरो ।
अफासुयं न भुंजेज्जा कीयमुद्देसियाहडं ॥ २३ ॥
सन्निहिं च न कुव्वेज्जा अणुमायं पि संजए ।
मुहाजीवी असंबद्धे हवेज्ज जगनिस्सिए ॥ २४ ॥
लूहवित्ती सुसंतुट्ठे अप्पिच्छे सुहरे सिया ।
आसुरत्तं न गच्छेज्जा सोच्चाणं जिणसासणं ॥ २५ ॥
कण्णसोक्खेहिं सद्देहिं पेमं नाभिनिवेसए ।
दारुणं कक्कसं फासं काएण अहियासए ॥ २६ ॥
खुहं पिवासं दुस्सेज्जं सीउण्हं अरई भयं ।
अहियासे अव्वहिओ देहदुक्खं महाफलं ॥ २७ ॥
अत्थंगयम्मि आइच्चे पुरत्था य अणुग्गए ।
आहारमाइयं सव्वं मणसा वि न पत्थए ॥ २८ ॥
अतिंतिणे अचवले अप्पभासी मियासणे ।
हवेज्ज उयरे दंते थोवं लद्धुं न खिंसए ॥ २९ ॥
न बाहिरं परिभवे अत्ताणं न समुक्कसे ।
सुयलाभे न मज्जेज्जा जच्चा तवस्सिबुद्धिए ॥ ३० ॥

से जाणमजाणं वा कट्टु आहम्मियं पयं।
संवरे खिप्पमप्पाणं बीयं तं न समायरे ॥ ३१ ॥
अणायारं परक्कम्म नेव गूहे न निण्हवे।
सुई सया वियडभावे असंसत्ते जिइंदिए ॥ ३२ ॥
अमोहं वयणं कुज्जा आयरियस्स महप्पणो।
तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ॥ ३३ ॥
अधुवं जीवियं नच्चा सिद्धिमग्गं वियाणिया।
विणियट्टेज्ज भोगेसु आउं परिमियमप्पणो ॥ ३४ ॥
बलं थामं च पेहाए सद्धामारोग्गमप्पणो।
खेत्तं कालं च विन्नाय तहप्पाणं निजुंजए ॥ ३५ ॥
जरा जाव न पीलेइ वाही जाव न वड्ढइ।
जाविंदिया न हायंति ताव धम्मं समायरे ॥ ३६ ॥
कोहं माणं च मायं च लोभं च पाववड्ढणं।
वमे चत्तारि दोसे उ इच्छंतो हियमप्पणो ॥ ३७ ॥
कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्वविणासणो ॥ [illegible] ॥
उवसमेण हणे कोहं माणं मद्दवया जिणे।
मायं चज्जवभावेण लोभं संतोसओ जिणे ॥ [illegible] ॥
कोहो य माणो य अणिग्गहीया माया य लोभो य पवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया सिंचंति [illegible] पुणब्भवस्स ॥ [illegible] ॥
राइणिएसु विणयं पउंजे धुवसील[illegible]
कुम्मो व्व अल्लीणपलीणगुत्तो [illegible] ॥ [illegible] ॥
निद्दं च न बहु मन्नेज्जा [illegible] विवज्जए।
मिहो कहाहिं न रमे सज्झा[illegible] ॥ [illegible] ॥
जोगं च समणधम्मम्मि जुंजे [illegible]
जुत्तो [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible]

बहुसुय पज्जुवासेज्जा पुच्छेज्जत्थविणिच्छय ॥ ४४ ॥
हत्थ पाय च काय च पणिहाय जिइंदिए ।
अल्लीणगुत्तो निसिए सगासे गुरुणो मुणी ॥ ४५ ॥
न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न य ऊरुं समासेज्जा चिट्ठेज्जा गुरुणन्तिए ॥ ४६ ॥
अपुच्छिओ न भासेज्जा भासमाणस्स अन्तरा ।
पिट्ठिमस न खाएज्जा मायामोस विवज्जए ॥ ४७ ॥
अप्पत्तिय जेण सिया आसु कुप्पेज्ज वा परो ।
सव्वसो त न भासेज्ज भास अहियगामिणिं ॥ ४८ ॥
दिट्ठ मिय असदिद्ध पडिपुण्ण विय जिय ।
अयपिरमणुव्विग्ग भास निसिर अत्तव ॥ ४९ ॥
आयारपन्नत्तिधर दिट्ठिवायमहिज्जग ।
वायविक्खलिय नच्चा न त उवहसे मुणी ॥ ५० ॥
नक्खत्त सुमिण जोग निमित्त मन्तभेसज ।
गिहिणो त न आइक्खे भूयाहिगरण पय ॥ ५१ ॥
अन्नट्ठ पगड लयण भएज्ज सयणासण ।
उच्चारभूमिसपन्न इत्थीपसुविवज्जिय ॥ ५२ ॥
विवित्ता य भवे सेज्जा नारीण न लवे कह ।
गिहिसथव न कुज्जा कुज्जा साहूहिं सथव ॥ ५३ ॥
जहा कुक्कुडपोयस्स निच्च कुललओ भय ।
एव खु बभयारिस्स इत्थीविग्गहओ भय ॥ ५४ ॥
चित्तभित्तिं न निज्झाए नारिं वा सुअलंकिय ।
भक्खर पिव दट्ठूण दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥ ५५ ॥
हत्थपायपडिच्छिन्न कण्णनासविकप्पिय ।
अवि वाससइं नारिं बभयारी विवज्जए ॥ ५६ ॥
विभूसा इत्थिससग्गो पणीयरसभोयण ।
नरस्सत्तगवेसिस्स विस तालउड जहा ॥ ५७ ॥

अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं ।
इत्थीणं तं न निज्झाए कामरागविवड्ढणं ॥ ५८ ॥
विसएसु मणुन्नेसु पेमं नाभिनिवेसए ।
अणिच्चं तेसिं विन्नाय परिणामं पोग्गलाण य ॥ ५९ ॥
पोग्गलाण परिणामं तेसिं नच्चा जहा तहा ।
विणीयतण्हो विहरे सीईभूएण अप्पणा ॥ ६० ॥
जाए सद्धाए निक्खंतो परियायट्ठाणमुत्तमं ।
तमेव अणुपालेज्जा गुणे आयरियसम्मए ॥ ६१ ॥
तवं चिमं संजमजोगयं च
सज्झायजोगं च सया अहिट्ठए ।
सूरे व सेणाए समत्तमाउहे
अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥ ६२ ॥
सज्झायसज्झाणरयस्स ताइणो
अपावभावस्स तवे रयस्स ।
विसुज्झई जं से मलं पुरेकडं
समीरियं रुप्पमलं व जोइणा ॥ ६३ ॥
से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए
सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे ।
विरायई कम्मघणम्मि अवगए
कसिणब्भपुडावगमे व चंदिमे ॥ ६४ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ अट्ठ आयारप्पणिही अज्झयणं समत्तं ॥

॥ विणयसमाही नाम नवमज्झयणे-पढमो उद्देसओ ॥

थंभा व कोहा व मयप्पमाया
गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे ।

सो चेव उ तस्स अभूइभावो
फलं व कीयस्स वहाय होइ ॥ १ ॥
जे यावि मंदि त्ति गुरुं विइत्ता
डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा ।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा
करंति आसायण ते गुरूणं ॥ २ ॥
पगईए मन्दा वि भवंति एगे
डहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया ।
आयारमंता गुणसुट्ठियप्पा
जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ॥ ३ ॥
जे यावि नागं डहरं ति नच्चा
आसायए से अहियाय होइ ।
एवायरियं पि हु हीलयंतो
नियच्छइ जाइपहं खु मन्दे ॥ ४ ॥
आसीविसो यावि परं सुरुट्ठो
किं जीवनासाउ परं नु कुज्जा ।
आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ॥ ५ ॥
जो पावगं जलियमवक्कमेज्जा
आसीविसं वा वि हु कोवएज्जा ।
जो वा विसं खायइ जीवियट्ठी
एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं ॥ ६ ॥
सिया हु से पावय नो डहेज्जा
आसीविसो वा कुविओ न भक्खे ।
सिया विसं हालहलं न मारे
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥

जो पव्वयं सिरसा भेत्तुमिच्छे
सुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा ।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं
एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं ॥ ८ ॥

सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे
सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
सिया न भिंदेज्ज व सत्तिअग्गं
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥

आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ।
तम्हा अणाबाहसुहाभिकंखी
गुरुप्पसायाभिमुहो रमेज्जा ॥ १० ॥

जहाहियग्गी जलणं नमंसे
नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं ।
एवायरियं उवचिट्ठएज्जा
अणंतनाणोवगओ वि संतो ॥ ११ ॥

जस्संतिए धम्मपयाइं सिक्खे
तस्संतिए वेणइयं पउंजे ।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ
कायग्गिरा भो मणसा य निच्चं ॥ १२ ॥

लज्जा-दया-संजम-बंभचेरं
कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
जे मे गुरू सययमणुसासयंति
ते हं गुरू सययं पूययामि ॥ १३ ॥

जहा निसंते तवणच्चिमाली
पभासई केवलभारहं तु ।

एवायरिश्रो सुयसीलबुद्धिए
विरायइ सुरमज्झे व इंदो ॥ १४ ॥
जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो
नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
खे सोहइ विमले अब्भमुक्के
एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ॥ १५ ॥
महागरा आयरिया महेसी
समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए ।
संपाविउकामे अणुत्तराइं
आराहए तोसए धम्मकामा ॥ १६ ॥
सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं
सुस्सूसए आयरियऽप्पमत्तो ।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे
सो पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥ १७ ॥ त्ति बेमि ॥
॥ णवमअज्झयणम्मि विणयसमाहीए पढमो उद्देसओ समत्तो ॥

॥ णवमअज्झयण—बीओ उद्देसओ ॥

मूलाओ खंधप्पभवो दुमस्स
खंधाउ पच्छा समुवेंति साहा ।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता
तओ से पुप्फं च फलं रसो य ॥ १ ॥
एवं धम्मस्स विणओ मूलं परमो से मोक्खो ।
जेण कित्तिं सुयं सिग्घं निस्सेसं चाभिगच्छइ ॥ २ ॥
जे य चंडे मिए थद्धे दुव्वाई नियडी सढे ।
वुज्झइ से अविणीयप्पा कट्ठं सोयगयं जहा ॥ ३ ॥
विणयं पि जो उवाएण चोइओ कुप्पइ नरो ।
दिव्वं सो सिरिमेज्जंतिं दंडेण पडिसेहए ॥ ४ ॥

तहेव अविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया ॥ ५ ॥
तहेव सुविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ६ ॥
तहेव अविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ ।
दीसंति दुहमेहंता छाया ते विगलितेंदिया ॥ ७ ॥
दंडसत्थपरिज्जुन्ना असब्भवयणेहि य ।
कलुणा विवन्नछंदा खुप्पिवासाए परिगया ॥ ८ ॥
तहेव सुविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ ।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ९ ॥
तहेव अविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा ।
दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया ॥ १० ॥
तहेव सुविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा ।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढिं पत्ता महायसा ॥ ११ ॥
जे आयरियउवज्झायाणं सुस्सूसावयणंकरा ।
तेसिं सिक्खा पवड्ढंति जलसित्ता इव पायवा ॥ १२ ॥
अप्पणट्ठा परट्ठा वा सिप्पा णेउणियाणि य ।
गिहिणो उवभोगट्ठा इहलोगस्स कारणा ॥ १३ ॥
जेण बंधं वहं घोरं परियावं च दारुणं ।
सिक्खमाणा नियच्छंति जुत्ता ते ललिइंदिया ॥ १४ ॥
ते वि तं गुरुं पूयंति तस्स सिप्पस्स कारणा ।
सक्कारेंति नमंसंति तुट्ठा निद्देसवत्तिणो ॥ १५ ॥
किं पुण जे सुयग्गाही अणंतहियकामए ।
आयरिया जं वए भिक्खू तम्हा तं नाइवत्तए ॥ १६ ॥

नीय सेज्जं गइं ठाणं नीयं च आसणाणि य ।
नीयं च पाए वंदेज्जा नीयं कुज्जा य अंजलिं ॥ १७ ॥
संघट्टइत्ता काएणं तहा उवहिणामवि ।
खमेह अवराहं मे वएज्ज न पुणो त्ति य ॥ १८ ॥
दुग्गओ वा पओएणं चोइओ वहइ रहं ।
एवं दुबुद्धि किच्चाणं वुत्तो वुत्तो पकुव्वइ ॥ १९ ॥
आलवंते लवंते वा न निसेज्जाए पडिस्सुणे ।
मोत्तूण आसणं धीरो सुस्सूसाए पडिस्सुणे ॥ २० ॥
कालं छंदोवयारं च पडिलेहित्ताण हेउहिं ।
तेहिं तेहिं उवाएहिं तं तं संपडिवायए ॥ २१ ॥
विवत्ती अविणीयस्स संपत्ती विणियस्स य ।
जस्सेयं दुहओ नायं सिक्खं से अभिगच्छइ ॥ २४ ॥
जे यावि चण्डे मइइड्ढिगारवे
पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे ।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए
असंविभागी न हु तस्स मोक्खो ॥ २३ ॥
णिद्देसवत्ती पुण जे गुरूणं
सुयत्थधम्मा विणयंमि कोविया ।
तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥ २४ ॥ त्ति बेमि ॥

णवमअज्झयणस्स विणयसमाहीए निइओ उद्देसगो समत्तो ॥

॥ णवमअज्झयणं—तइओ उद्देसओ ॥

आयरियग्गिमिवाहियग्गी
सुस्सूसमाणो पडिजागरिज्जा ।
आलोइयं इंगियमेव नच्चा

आयारमट्ठा विणयं पउंजे
　सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं ।
जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो
　गुरुं तु नासाययई स पुज्जो ॥ २ ॥
राइणिएसु विणयं पउंजे
　डहरा वि य जे परियायजेट्ठा ।
नीयत्तणे वट्टइ सच्चवाई
　ओवायवं वक्ककरे स पुज्जो ॥ ३ ॥
अन्नायउंछं चरई विसुद्धं
　जवणट्ठया समुयाणं च निच्चं ।
अलद्धुयं नो परिदेवएज्जा
　लद्धुं न विकत्थयई स पुज्जो ॥ ४ ॥
संथारसेज्जासणभत्तपाणे
　अप्पिच्छया अइलाभे वि संते ।
जो एवमप्पाणभितोसएज्जा
　संतोसपाहन्नरए स पुज्जो ॥ ५ ॥
सक्का सहेउं आसाए कंटया
　अओमया उच्छहया नरेणं ।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए
　वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥
मुहुत्तदुक्खा उ हवंति कंटया
　अओमया ते वि तओ सुउद्धरा ।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि
　वेराणुबंधीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥
समावयंता वयणाभिघाया
　कण्णंगया दुम्मणियं जणंति ।

जिइंदिए जो सहइ स पुज्जो ॥ ८ ॥
अवण्णवाय च परम्मुहस्स
पच्चक्खओ पडिणीय च भास ।
ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च
भास न भासेज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥

अलोलुए अक्कुहए अमाई
अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।
नो भावए नो वि य भावियप्पा
अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥ १० ॥

गुणेहि साहू, अगुणेहिऽसाहू
गिण्हाहि साहूगुण मुञ्चऽसाहू ।
वियाणिया अप्पगमप्पएणं
जो रागदोसेहि समो स पुज्जो ॥ ११ ॥

तहेव डहरं च महल्लगं वा
इत्थी पुमं पव्वइय गिहिं वा ।
नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा
थम च कोह च चए स पुज्जो ॥ १२ ॥

जे माणिया सयय माणयंति
जत्तेण कन्न व निवेसयंति ।
ते माणए माणरिहे तवस्सी
जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ॥ १३ ॥

तेसिं गुरूणं गुणसागराणं
सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं ।
चरे मुणी पचरए तिगुत्तो
चउक्कसायावगए स पुज्जो ॥१४॥

गुरुमिह सयय पडियरिय मुणी
जिणवयनिउणे[1] अभिगमकुसले।
धुणिय रयमल पुरेकड
भासुरमउल गइ गए[2] ॥१५॥ त्ति बेमि ॥

॥ णवमअज्झयणस्स विणयसमाहीए तइओ उद्देसओ समत्तो ॥

॥ णवमअज्झयण-चउत्थो उद्देसओ ॥

सुय मे आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय—इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता।

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता ?

इमे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता त जहा—विणयसमाही, सुयसमाही, तवसमाही, आयारसमाही।

विणए सुए तवे य आयारे णिच्च पडिया।
अभिरामयति अप्पाण जे भवति जिइदिया ॥१॥

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ, त जहा—अणुसासिज्जन्तो सुस्सूसइ, सम्म सपडिवज्जइ, वेयमाराहयइ, न य भवइ अत्तसपग्गहिए चउत्थ पय भवइ। भवइ य एत्थ सिलोगो—

पेहेइ हियाणुसासण सुस्सूसइ त च पुणो अहिट्ठए।
न य माणमएण मज्जइ विणयसमाही आययट्ठिए ॥२॥

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ, त जहा—सुय मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्व भवइ, एगग्गचित्तो भविस्सामि

1–मय० । 2

त्ति अज्झाइयव्वं भवइ, अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ, ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ, चउत्थं पयं भवइ। भवइ य एत्थ सिलोगो —

नाणमेगग्गचित्तो य ठिओ य ठावई परं।
सुयाणि य अहिज्जित्ता रओ सुयसमाहिए ॥३॥

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ, तं जहा—नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा, नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा, नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा, नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा चउत्थं पयं भवइ। भवइ य एत्थ सिलोगो —

विविहगुणतवोरए य निच्चं
भवइ निरासए निज्जरट्ठिए।
तवसा धुणइ पुराणपावगं
जुत्तो सया तवसमाहिए ॥४॥

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ, तं जहा— नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा, नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा, नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा, नन्नत्थ आरहंतेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठेज्जा चउत्थं पयं भवइ। भवइ य एत्थ सिलोगो —

जिणवयणरए अतिंतिणे
पडिपुण्णाययमाययट्ठिए।
आयारसमाहिसंवुडे
भवइ य दंते भावसंधए ॥५॥

अभिगम चउरो समाहिओ
सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ।
विउलहियं सुहावहं पुणो
कुव्वइ सो पयखेममप्पणो ॥६॥

जाइमरणाउ मुच्चइ
  इत्थथं च चयइ सव्वसो ।
सिद्धे वा भवइ सासए
  देवो वा अप्परए महिड्ढिए ॥७॥ त्ति बेमि ॥

॥ णवम विणयसमाही अज्झयणं समत्त ॥

॥ सभिक्खू नाम दसम अज्झयण ॥

निक्खम्ममाणाइ अ बुद्धवयणे
  निच्च चित्तसमाहिओ हवेज्जा ।
इत्थीण वस न यावि गच्छे
  वत नो पडियायइ जे स भिक्खू ॥ १ ॥
पुढवि न खणे न खणावए
  सीओदग न पिए न पियावए ।
अगणिसत्थ जहा सुनिसिय
  त न जले न जलावए जे स भिक्खू ॥ २ ॥
अनिलेण न वीए न वीयावए
  हरियाणि न छिन्दे न छिन्दावए ।
बीयाणि सया विवज्जयन्तो
  सच्चित्त नाहारए जे स भिक्खू ॥ ३ ॥
वहण तसथावराण होइ
  पुढवीतणकट्ठनिस्सियाण ।
तम्हा उद्देसिय न भुजे
  नो वि पए न पयावए जे स भिक्खू ॥ ४ ॥
रोइय नायपुत्तवयणे
  अप्पसमे मन्नेज्ज छप्पि काए ।

न पर वएज्जासि अय कुसीले
जेणन्नो कुप्पेज्ज न त वएज्जा ।
जाणिय पत्तेय पुण्णपाव
अत्ताण न समुक्कसे जे स भिक्खू ॥ १८ ॥
न जाइमत्ते न य रूवमत्ते
न लाभमत्ते न सुएण मत्ते ।
मयाणि सव्वाणि विवज्जयतो
धम्मज्झाणरए य जे स भिक्खू ॥ १९ ॥
पवेयए अज्जपय महामुणी
धम्मे ठिओ ठावयई पर पि ।
निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंग
न यावि हासकुहए जे स भिक्खू ॥ २० ॥
त देहवास असुइ असासय
सया चए निच्चहियट्ठियप्पा ।
छिंदित्तु जाइमरणस्स बधण
उवेइ भिक्खू अपुणागम गइ ॥ २१ ॥ त्ति बेमि ॥
॥ सभिक्खू अज्झयण दसम समत्त ॥

॥ रइवक्का चूलिया पढमा ॥

इह खलु भो पव्वइएण उप्पन्नदुक्खेण सजमे अरइसमावन्नचित्तेण ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएण चेव हयरस्सिगयकुसपोयपडागाभूयाइ इमाइ अट्ठारस ठाणाइ सम्म सपडिलेहियव्वाइ भवति । त जहा—
ह भो दुस्समाए दुप्पजीवी ॥ १ ॥
लहुस्सगा इत्तरिया गिहीण कामभोगा ॥ २ ॥
भुज्जो य साइबहुला मणुस्सा ॥ ३ ॥

१ नाण च

इम च मे दुक्खं न चिरकालोवट्ठाई भविस्सइ ॥ ४ ॥
ओमजणपुरक्कारे ॥ ५ ॥
वंतस्स य पडिआयणं ॥ ६ ॥
अहरगइवासोवसंपया ॥ ७ ॥
दुल्लभे खलु भो ! गिहीणं धम्मे गिहिवासमज्झे वसंताणं ॥ ८ ॥
आयंके से वहाय होइ ॥ ९ ॥
संकप्पे से वहाय होइ ॥ १० ॥
सोवक्केसे गिहिवासे निरुवक्केसे परियाए ॥ ११ ॥
बंधे गिहिवासे मोक्खे परियाए ॥ १२ ॥
सावज्जे गिहिवासे अणवज्जे परियाए ॥ १३ ॥
बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा ॥ १४ ॥
पत्तेयं पुण्णपावं ॥ १५ ॥
अणिच्चे खलु भो मणुयाण जीविए कुसग्गजलबिंदुचंचले ॥ १६ ॥
बहुं च खलु भो ! पावं कम्मं पगडं ॥ १७ ॥
पावाणं च खलु भो कडाणं कम्माणं पुव्विं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं वेयइत्ता मोक्खो नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता । अट्ठारसमं पयं भवइ ॥ १८ ॥ भवइ य इत्थ सिलोगो —

जया य चयइ धम्मं अणज्जो भोगकारणा ।
से तत्थ मुच्छिए बाले आयइं नावबुज्झइ ॥ १ ॥
जया ओहाविओ होइ इंदो वा पडिओ छमं ।
सव्वधम्मपरिब्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥
जया य वंदिमो होइ पच्छा होइ अवंदिमो ।
देवया व चुया ठाणा स पच्छा परितप्पइ ॥ ३ ॥
जया य पूइमो [illegible] होइ अपूइमो ।
राया व [illegible] परितप्पइ ॥ ४ ॥

जया य माणिमो होइ पच्छा होइ अमाणिमो।
सेट्ठि व्व कब्बडे छूढो स पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ॥
जया य थेरओ होइ समइक्कंतजोव्वणो।
मच्छो व्व गलं गिलित्ता स पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ॥
जया य कुकुडंबस्स कुतत्तीहिं विहम्मइ।
हत्थी व बंधणे बद्धो स पच्छा परितप्पइ ॥ ७ ॥
पुत्तदारपरिकिण्णो मोहसंताणसंतओ।
पंकोसन्नो जहा नागो स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥
अज्ज याहं गणी होंतो भावियप्पा बहुस्सुओ।
जइऽहं रमंतो परियाए सामण्णे जिणदेसिए ॥ ९ ॥
देवलोगसमाणो उ परियाओ महेसिणं।
रयाणं अरयाणं च महानरयसारिसो ॥ १० ॥
अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं
रयाण परियाए तहारयाणं।
निरओवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं
रमेज्ज तम्हा परियाए पंडिए ॥ ११ ॥
धम्माउ भट्ठं सिरिओ ववेयं
जन्नग्गि विज्झायमिवप्पतेयं।
हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला
दाढुद्धियं घोरविसं व नागं ॥ १२ ॥
इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती
दुन्नामधेज्जं च पिहुज्जणम्मि।
चुयस्स धम्माओ अहम्मसेविणो
संभिन्नवित्तस्स य हेट्ठओ गई ॥ १३ ॥
भुंजित्तु भोगाइं पसज्झ चेयसा
तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं।

गइ च गच्छे अणभिज्झियं दुह
बोही य से नो सुलभा पुणोपुणो ॥ १४ ॥
इमस्स ता नेरइयस्स जतुणो
दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो ।
पलिओवम झिज्जइ सागरोवम
किमग पुण मज्झ इम मणोदुह ? ॥ १५ ॥
न मे चिर दुक्खमिण भविस्सइ
असासया भोगपिवास जतुणो ।
न चे सरीरेण इमेणऽविस्सइ
अविस्सइ जीवियपज्जवेण मे ॥ १६ ॥
जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ
चएज्ज देह न उ धम्मसासण ।
त तारिस नो पयलेन्ति इन्दिया
उविन्तवाया व सुदसण गिरिं ॥ १७ ॥
इच्चेव सपस्सिय बुद्धिम नरो
आय उवाय विविह वियाणिया ।
काएण वाया अदु माणसेण
तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठिज्जासि ॥ १८ ॥ त्तिबेमि ॥
॥ रइवक्का पढमा चूलिया समत्ता ॥

॥ विवित्त चरिआ णामा बीया चूलिया ॥

चूलिय तु पवक्खामि सुय केवलिभासियं ।
ज सुणित्तु सपुण्णाण धम्मे उप्पज्जए मई ॥ १ ॥
अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि पडिसोयलद्धलक्खेण ।
पडिसोयमेव अप्पा दायव्वो होउकामेण ॥ २ ॥
अणुसोयसुहो लोगो पडिसोओ आसवो सुविहियाण ।
अणुसोओ ससारो पडिसोओ तस्स उत्तारो ॥ ३ ॥

तम्हा आयारपरक्कमेण संवरसमाहिबहुलेणं ।
चरिया गुणा य नियमा य होंति साहूण दट्ठव्वा ॥ ४ ॥

अणिएयवासो समुयाणचरिया
अन्नायउंछं पइरिक्कया य ।
अप्पोवही कलहविवज्जणा य
विहारचरिया इसिणं पसत्था ॥ ५ ॥

आइण्णओमाणविवज्जणा य
ओसन्नदिट्ठाहडभत्तपाणे ।
संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू
तज्जायसंसट्ठ जई जएज्जा ॥ ६ ॥

अमज्जमंसासि अमच्छरीआ
अभिक्खणं निव्विगइं गया य ।
अभिक्खणं काउस्सग्गकारी
सज्झायजोगे पयओ हवेज्जा ॥ ७ ॥

न पडिन्नवेज्जा सयणासणाइं
सेज्जं निसेज्जं तह भत्तपाणं ।
गामे कुले वा नगरे व देसे
ममत्तभावं न कहिंचि कुज्जा ॥ ८ ॥

गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा
अभिवायणं वंदण पूयणं वा ।
असंकिलिट्ठेहिं समं वसेज्जा
मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥

न या लभेज्जा निउणं सहायं
गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो
विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ १० ॥

सवच्छरं चावि परं पमाणं
  बीयं च वासं न तहिं वसेज्जा।
सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू
  सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥ ११ ॥
जो पुव्वरत्तावररत्तकाले
  संपेहइ अप्पगमप्पएणं।
किं मे कडं किं च मे किच्चसेसं
  किं सक्कणिज्जं न समायरामि ॥ १२ ॥
किं मे परो पासइ किं च अप्पा
  किं वाहं खलियं न विवज्जयामि।
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो।
  अणागयं नो पडिबंध कुज्जा ॥ १३ ॥
जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं
  काएण वाया अदु माणसेणं।
तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा
  आइण्णओ खिप्पमिव क्खलीणं ॥ १४ ॥
जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स
  धिईमओ सप्पुरिसस्स निच्चं।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी
  सो जीवई संजमजीविएणं ॥ १५ ॥
अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो
  सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ
  सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥ १६ ॥ त्ति बेमि ॥
॥ बीया चूलिया समत्ता ॥

हत्थिसीसे णामं णयरे होत्था, रिद्धित्थिमियसमिद्धे। तस्स णं हत्थिसीसस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं पुप्फकरंडए णामं उज्जाणे होत्था सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे, रम्मे, नंदणवणप्पगासे पासाईए ४। तत्थ णं कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था दिव्वे।

तत्थ णं हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था। महया हिमवन्त वण्णओ। तस्स णं अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था। तए णं सा धारिणी देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासभवणंसि सीहं सुमिणे पासति जहा मेहजम्मणं तहा भाणियव्वं। णवरं सुबाहुकुमारे जाव अलंभोगसमत्थं वावि जाणंति २ त्ता अम्मापियरो पंच पासायवडिंसगसयाइं करेंति अब्भुग्गयमूसियपहसिए विव भवणं। एवं जहा महब्बलस्स रण्णो। णवरं पुप्फचूलापामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नासयाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति तहेव पंचसइओ दाओ जाव उप्पिं पासायवरगते फुट्टमाणे जाव विहरति। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। परिसा निग्गया अदीणसत्तू जहा कोणिए निग्गए। सुबाहुकुमारे वि जहा जमाली तहा रहेणं निग्गए। जाव धम्मो कहिओ। राया परिसा पडिगया।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ उट्ठाए उट्ठेइ जाव एवं वयासी-सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं जाव जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसरतलवरमाडंबिय मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइया। णो खलु अहं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं-

दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जामि। अहासुहं देवाणु-
प्पिया ! मा पडिबंधं करेह।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं पडिवज्जइ २ त्ता तमेव रहं दुरूहइ २ त्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे जाव एवं वयासी-

अहो णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे १ कंते कंतरूवे २ पिए पियरूवे ३ मणुन्ने मणुन्नरूवे ४ मणामे मणामरूवे ५ सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे, बहुजणस्स वि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे ५ सोमे जाव सुरूवे। साहुजणस्स वि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे ५ जाव सुरूवे। सुबाहुणा भंते ! कुमारेणं इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिसमण्णागया ? के वा एस आसी जाव किं नामए वा किं गोत्तए वा किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा जेणं इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया।

एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णयरे रिद्धत्थिमियसमिद्धे वण्णओ। तत्थ णं हत्थिणाउरे णयरे सुमुहे णामं गाहावई परिवसइ अड्ढे दित्ते जाव अपरिभूए। तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा णामं थेरा जाइसंपन्ना जाव पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे णयरे जेणेव सहस्सम्बवणे उज्जाणे [illegible] २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं

वहइ २ त्ता मज्झमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरइ। तएणं सुदत्ते अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ। जहा गोयमे तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे। तएणं से सुमुहे गाहावई सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठ तुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ २ त्ता पाउयाओ ओमुयति २ त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ २ त्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ णमंसइ २ त्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सयहत्थेणं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभिस्सामि त्ति कट्टु तुट्ठे पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे पडिलाभिए त्ति तुट्ठे।

तएणं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहयसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए, मणुस्साउए निबद्धे गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं-तं जहा—वसुहारा वुट्ठा १ दसद्धवण्णे कुसुमे निवाइए २ चेलुक्खेवे कए ३ आहयाओ देवदुंदुहीओ ४ अंतरा वि य णं आगासंसि अहो दाणं घुट्ठे य ५। तए णं हत्थिणाउरे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ ४ धन्ने णं देवाणुप्पिया सुमुहे गाहावई जाव तं धन्ने णं देवाणुप्पिया सुमुहे गाहावई।

तए णं से सुमुहे गाहावई बहूइं वासाइं आउयं पालेइ २ त्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे णयरे अदीणस-

सुरगणो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे। तए ण सा धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ सहेव सीहं पासइ। सेसं तं चेव जाव उप्पिं पासायवरगए विहरइ। तं एवं खलु गोयमा! सुबाहुणा कुमारेणं इमे एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया। पभू णं भन्ते! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए? हंता पभू। तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ २ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तए णं से समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ हत्थि-सीसाओ णयराओ पुप्फकरण्डयाओ उज्जाणाओ कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ। तए णं से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ। तए णं से सुबाहुकुमारे अण्णया कयाइ चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पोसहसालं पमज्जइ २ त्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहइ २ त्ता दब्भसंथारगं संथरेइ २ त्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ २ त्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ।

तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पन्ने-धण्णा णं ते गामागरणगर जाव सण्णिवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ। धण्णा णं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभिइओ जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयंति, धण्णा णं ते राईसर

जाव सत्थवाह पभइओ जेणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं पडिसुणंति। तं जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा तए णं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा।

तए णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। परिसा, राया निग्गया। तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं महया जहा पढमं तहा निग्गओ। धम्मो कहिओ परिसा राया पडिगया।

तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ। जहा मेहो तहा अम्मापियरं आपुच्छइ। निक्खमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी। तए णं से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ २ त्ता बहूहिं चउत्थछट्ठऽट्ठम तवोविहाणेहिं अप्पाणं भावित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे।

से णं तओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइ-क्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ २ त्ता

केवलबोहिं बुज्झिहिइ २ त्ता तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सइ। से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्ण पाउणिहि। पाउणिहिइ २ त्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ। से णं तओ देवलोगाओ माणुस्सं जाव पव्वज्जा। बंभलोए। तओ माणुस्सं महासुक्के। तओ माणुस्सं आणए देवे। तओ माणुस्सं। तओ आरणे। तओ माणुस्सं सव्वट्ठसिद्धे।

से णं तओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाव अड्ढाइं जहा दढपइण्णे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि।

इइ सुहविवागस्स पढमं अज्झयणं समत्तं ॥ १ ॥

(२) बितियस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णामं णयरे थूभकरंडग उज्जाणं। धण्णो जक्खो। धणवहो राया सरस्सई देवी। सुमिणदंसणं, कहणं, जम्मं, बालत्तणं, कलाओ य जोव्वणं पाणिग्गहणं, दाओ पासाया य भोगा य जहा सुबाहुस्स णवरं भद्दणंदी कुमारे। सिरिदेवी पामोक्खाणं पंचसया। सामिस्स समोसरणं। सावगधम्मं। पुव्वभव पुच्छा। महाविदेहे वासे पुंडरीगिणी णगरीए विजए कुमारे जुगबाहू तित्थयरे पडिलाभिए माणुस्साउए निबद्धे इह उप्पण्णे। सेसं जहा सुबाहुस्स जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं बिइयस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि।

इइ सुहविवागस्स बीयं अज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

(३) तइयस्स उक्खेवओ । वीरपुरे णामं णयरं । मणोरमे उज्जाणे वीरकण्हे जक्खे, मित्ते राया सिरीदेवी सुजाए कुमारे । बलसिरी पामोक्खाणं पंचसयाकन्ना । सामी समोसरिए । पुव्वभव पुच्छा । उसुयारे णयरे उसुदत्ते गाहावइ पुप्फदंते अणगारे पडिलाभिए मणुस्साउए निबद्धे इह उववण्णे जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ४ ।

इइ सुहविवागस्स तइयं अज्झयणं समत्तं ॥ ३ ॥

(४) चउत्थस्स उक्खेवओ । विजयपुरे णयरे । णंदणवणे उज्जाणे असोगो जक्खो । वासवदत्ते राया । कण्हसिरी देवी । सुवासवे कुमारे । भद्दा पामोक्खाणं पंचसया जाव पुव्वभव पुच्छा कोसंबी णयरी । धणपालो राया । वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिए इह उववण्णे जाव सिद्धे ।

इइ सुहविवागस्स चउत्थं अज्झयणं समत्तं ॥ ४ ॥

(५) पंचमस्स उक्खेवओ । सोगंधियाणयरी नीलासोगे उज्जाणे सुकालो जक्खो । अप्पडिहए राया सुकण्हादेवी महचंदे कुमारे । तस्स अरहदत्ता भारिया । जिणदासो पुत्तो । तित्थयरागमणं जिणदासो पुव्वभव पुच्छा । मज्झमिया नयरी मेहरहे राया । सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ।

इइ सुहविवागस्स पंचमं अज्झयणं समत्तं ॥ ५ ॥

(६) छट्ठस्स उक्खेवओ । कणगपुरं णयरं सेयासोए उज्जाणे । वीरभद्दो जक्खो । पियचंदे राया । सुभद्दादेवी । वेसमणे कुमारे जुवराया । सिरीदेवा पामोक्खाणं पंचसया । तित्थयरागमणं । धणवइ जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभव पुच्छा । मणिय-

इया णयरी। मित्ते राया। सभूइविजए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्ध ॥ ६ ॥

इइ सुहविवागस्स छट्ठं अज्झयणं समत्त ॥६॥

(७) सत्तमस्स उक्खेवओ। महापुरे णयरे। रत्तासोगे उज्जाणे। रत्तपाउ जक्खो। बले राया। सुभद्दादेवी। महाबले कुमारे। रत्तवई पामोक्खाणं पचसया। तित्थयरागमणं जाव पुव्वभव पुच्छा। मणिपुरे णयरे। णागदत्ते गाहावई। इंददत्ते अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्ध।

इइ सुहविवागस्स सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

(८) अट्ठमस्स उक्खेवओ। सुघोसे णयरे। देवरमणे उज्जाणे। वीरसेणो जक्खो। अज्जुणो राया। रत्तवई देवी। भद्दनंदी कुमारे। सिरीदेवी पामोक्खाणं पचसया जाव पुव्वभव पुच्छा। महाघोसे णयरे। धम्मघोसे गाहावइ। धम्मसीहे अणगारे। पडिलाभिए जाव सिद्ध।

इइ सुहविवागस्स अट्ठम अज्झयणं समत्तं ॥ ८ ॥

(९) नवमस्स उक्खेवओ। चंपा णयरी। पुण्णभद्दे उज्जाणे पुण्णभद्दो जक्खो। दत्ते राया। रत्तवईदेवी। महचन्दे कुमारे जुवराया। सिरीकन्ता पामोक्खाणं पचसया जाव पुव्वभव पुच्छा। तिगिच्छा णयरी। जियसत्तुराया धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्ध।

इइ सुहविवागस्स नवमं अज्झयणं समत्तं ॥ ९ ॥

(१०) जइ णं भन्ते! दसमस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं साइए णामं णयरे होत्था। उत्तरकुरु

उज्जाणे पासामिउ जक्खो मित्तनंदी राया । सिरीकन्ता देवी । वरदत्ते कुमारे । वीरसेणा पामोक्खाणं पञ्चदेवी सया । तित्थयरागमणं सावगधम्मं पुव्वभवे पुच्छा । सयदुवारे णयरे । विमलवाहणे राया । धम्मरुइ अणगारे पडिलाभिए मणुस्साउए निबद्धे इह उववण्णे । सेसं जहा सुबाहुस्स चिंता जाव पव्वज्जा कप्पंतरिए जाव सव्वट्ठसिद्धे । तओ महाविदेहे जहा दढपइण्णे जाव सिज्झिहिति ४ । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सेवं भन्ते ! त्तिबेमि ।

इइ सुहविवागस्स दसमं अज्झयणं समत्तं ।

विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा दुहविवागे य सुहविवागे य । तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एक्कासरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति । एवं सुहविवागे वि सेसं जहा आयारस्स ॥ १० ॥

॥ इति सुखविपाकसूत्रम् ॥



उववाई सूत्र

(अन्तिम बावीस गाथाएँ)

कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्ठिया ?।
कहिं बोंदिं चइत्ता णं, कत्थ गंतूण सिज्झइ ॥ १ ॥
अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया।
इह बोंदिं चइत्ता णं, तत्थ गंतूण सिज्झइ ॥ २ ॥
जं संठाणं तु इह भवं चयंतस्स चरिमसमयंमि।
आसी य पएसघणं तं संठाणं तहिं तस्स ॥ ३ ॥
दीहं वा हस्सं वा जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं।
तत्तो तिभागहीणा सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ ४ ॥
तिण्णि सया तेत्तीसा धणुत्तिभागो य होइ बोधव्वा।
एसा खलु सिद्धाणं उक्कोसोगाहणा भणिया ॥ ५ ॥
चत्तारि य रयणीओ रयणितिभागूणिया य बोधव्वा।
एसा खलु सिद्धाणं मज्झिमओगाहणा भणिया ॥ ६ ॥
एक्का य होइ रयणी साहिया अंगुलाइं अट्ठ भवे।
एसा खलु सिद्धाणं जहण्णओगाहणा भणिया ॥ ७ ॥
ओगाहणाए सिद्धा भवत्तिभागेण होइ परिहीणा।
संठाणमणित्थंथं जरामरणविप्पमुक्काणं ॥ ८ ॥
जत्थ य एगो सिद्धो तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का।
अण्णोण्णसमोगाढा पुट्ठा सव्वे य लोगंते ॥ ९ ॥

फुसइ अणंते सिद्धे सव्वपएसेहिं णियमसो सिद्धो।
ते वि असंखेज्जगुणा देसपएसेहिं जे पुट्ठा ॥ १० ॥
असरीरा जीवघणा उवउत्ता दंसणे य णाणे य।
सागारमणागारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ ११ ॥
केवलणाणुवउत्ता जाणंति सव्वभावगुणभावे।
पासंति सव्वओ खलु केवलदिट्ठीहिऽणंताहिं ॥ १२ ॥
णवि अत्थि माणुसाणं तं सोक्खं णवि य सव्वदेवाणं।
जं सिद्धाणं सोक्खं अव्वाबाहं उवगयाणं ॥ १३ ॥
जं देवाणं सोक्खं सव्वद्धापिंडियं णंतगुणं।
ण य पावइ मुत्तिसुहं णंताहिं वग्गवग्गूहिं ॥ १४ ॥
सिद्धस्स सुहो रासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा।
सोऽणंतवग्गभइओ स व्वागासे ण माएज्जा ॥ १५ ॥
जह णाम कोइ मिच्छो णगरगुणे बहुविहे वियाणंतो।
ण चएइ परिकहेउं उवमाए तहिं असंतीए ॥ १६ ॥
इय सिद्धाणं सोक्खं अणोवमं णत्थि तस्स ओवम्मं।
किंचि विसेसेणेत्तो ओवम्ममिणं सुणह वोच्छं ॥ १७ ॥
जह सव्वकामगुणियं पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई।
तण्हाछुहाविमुक्को अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो ॥ १८ ॥
इय सव्वकालतित्ता अतुलं निव्वाणमुवगया सिद्धा।
सासयमव्वाबाहं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥ १९ ॥
सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य पारगयत्ति य परंपरगयत्ति।
उम्मुक्ककम्मकवया अजरा अमरा असंगा य ॥ २० ॥
णिच्छिण्णसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का।
अव्वाबाहं सुक्खं अणुहोंति सासयं सिद्धा ॥ २१ ॥
अतुलसुहसागरगया अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता।
सव्वमणागयमद्धं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥ २२ ॥

॥ सूत्रकृताङ्ग सूत्रे वीरस्तुत्याख्य (पुच्छिस्सुण) षष्टम ययन ॥



पुच्छिस्सु ण समणा माहणा य अगारिणो या परतित्थिआ य ।
से केइ णेगतहियधम्ममाहु, अणेलिसं साहुसमिक्खयाए ॥१॥
कहं च णाणं कहं दसणं से, सीलं कहं नायसुयस्स आसि ?।
जाणासि णं भिक्खु जहातहेणं, अहासुयं बूहि जहा णिसंत ॥२॥
खेयन्नए से कुसल-महेसी, अणंतनाणी य अणंतदंसी ।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पहि ॥३॥
उड्ढं अहे य तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा ।
से णिच्चणिच्चेहिं समिक्ख पन्ने दीवे व धम्मं समियं उदाहु ॥४॥
से सव्वदंसी अभिभूयनाणी, णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा ।
अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं, गंथा अईए अभए अणाऊ ॥५॥
से भूइपण्णे अणिएअचारी, ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू ।
अणुत्तरं तप्पइ सूरिए वा, वइरोयणिंदे व तमं पगासे ॥६॥
अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं, णेया मुणी कासव आसुपन्ने ।
इंदेव देवाण महाणुभावे, सहस्सणेता दिवि णं विसिट्ठे ॥७॥
से पन्नया अक्खयसागरे वा महोदही वा वि अणंतपारे ।
अणाविले वा अकसाइ मुक्के, सक्के व देवाहिवई जुइमं ॥८॥
से वीरिएणं पडिपुन्नवीरिए, सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे ।
सुरालए वा सि मुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए ॥९॥

सयं सहस्साण उ जोयणाणं, तिकंडगे पंडगवेजयंते ।
से जोयणे णवणवइसहस्से, उड्ढुस्सितो हेट्ठ सहस्समेगं ॥१०॥
पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए, जं सूरिया अणुपरिवट्टयंति ।
से हेमवन्ने बहुनंदणे य, जंसि रतिं वेदयंति महिंदा ॥११॥
से पव्वए सद्दमहप्पगासे, विरायइ कंचणमट्ठवन्ने ।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे, गिरीवरे से जलिएव भोमे ॥१२॥
महीए मज्झंमि ठिए णगिंदे, पन्नायते सूरिए सुद्धलेसे ।
एवं सिरीए उ स भूरिवन्ने, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥१३॥
सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चइ महतो पव्वयस्स ।
एतोवमे समणे नायपुत्ते, जाइजसोदंसणनाणसीले ॥१४॥
गिरीवरे वा निसहाऽऽययाणं, रुयए व सेट्ठे वलयायताणं ।
तओवमे से जगभूइपन्ने मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥१५॥
अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता अणुत्तरं झाणवरं झियाइ ।
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं, संखिंदुएगंतवदातसुक्कं ॥१६॥
अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता ।
सिद्धिं गए साइमणंतपत्ते, नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥१७॥
रुक्खेसु णाए जह सामली वा, जंसि रइं वेदयंति सुवन्ना ।
वणेसु वा णंदणमाहु सेट्ठं नाणेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥१८॥
थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चन्दो व ताराण महाणुभावे ।
गंधेसु वा चन्दणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु ॥१९॥
जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे ।
खोओदए वा रसवेजयंते, तवोवहाणे मुणीवेजयंते ॥२०॥
हत्थीसु एरावणमाहु णाए, सीहो मिगाणं सलिलाण गङ्गा ।
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवो, निव्वाणवादीणिह नायपुत्ते ॥२१॥
जोहेसु णाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ।
खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥२२॥

दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति ।
तवेसु वा उत्तम बंभचेरं लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥२३॥
ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा ।
निव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा, न नायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥२४॥
पुढोवमे धुणइ विगयगेही, न सण्णिहिं कुव्वइ आसुपन्ने ।
तरिउं समुद्दं व महाभवोघं, अभयंकरे वीर अणंतचक्खू ॥२५॥
कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा ।
एयाणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वइ पाव ण कारवेइ ॥२६॥
किरियाकिरियं वेणइयाणुवायं, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं ।
से सव्ववायं इइ वेयइत्ता, उवट्ठिए संजमदीहरायं ॥२७॥
से वारिया इत्थी सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए ।
लोगं विदित्ता आरं परं च, सव्वं पभू वारिय सव्ववारं ॥२८॥
सोच्चा य धम्मं अरहंतभासियं समाहियं अट्ठपदोवसुद्धं ।
तं सद्दहाणा य जणा अणाऊ इंदा व देवाहिव आगमिस्संति ॥२९॥
त्ति बेमि ॥



मोक्षमार्गनामक एकादशाध्ययनम्

कयरे मग्गे अक्खाए, महाणेणं मईमया।
जं मग्गं उज्जु पावित्ता, ओहं तरइ दुत्तरं ॥१॥
तं मग्गं णुत्तरं सुद्धं, सव्वदुक्खविमोक्खणं।
जाणासि णं जहा भिक्खू, तं णो बूहि महामुणी ॥२॥
जइ णो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा।
तेसिं तु कयरं मग्गं, आइक्खेज्ज? कहाहि णो ॥३॥
जइ णो केइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा।
तेसिमं पडिसाहिज्जा, मग्गसारं सुणेह मे ॥४॥
अणुपुव्वेण महाघोरं कासवेण पवेइयं।
जमादाय इओ पुव्वं, समुद्दं ववहारिणो ॥५॥
अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया।
तं सोच्चा पडिवक्खामि, जंतवो तं सुणेह मे ॥६॥
पुढवीजीवा पुढो सत्ता, आउजीवा तहाऽगणी।
वाउजीवा पुढो सत्ता, तणरुक्खा सबीयगा ॥७॥
अहावरा तसा पाणा एवं छक्काय आहिया।
एतावए जीवकाए, णावरे कोइ विज्जई ॥८॥
सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं, मइमं पडिलेहिया।
सव्वे अक्कंतदुक्खा य अओ सव्वे न हिंसया ॥९॥
एयं खु णाणिणो सारं, जं न हिंसइ किंचण।
अहिंसासमयं चेव, एतावंतं वियाणिया ॥१०॥

आयगुत्ते सया दन्ते, छिन्नसोए अणासवे ।
जे धम्मं सुद्धमक्खाइ, पडिपुन्नमणेलिसं ॥२४॥
तमेव अविजाणंता, अबुद्धा बुद्धमाणिणो ।
बुद्धामोत्ति य मन्नंता, अंत एते समाहिए ॥२५॥
ते य बीओदगं चेव तमुद्दिस्सा य जं कडं ।
भोच्चा झाणं झियायंति, अखेयन्नाऽसमाहिया ॥२६॥
जहा ढंका य कंका य, कुलला मग्गुका सिही ।
मच्छेसणं झियायंति, झाणं ते कलुसाहमं ॥२७॥
एवं तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिया ।
विसएसणं झियायंति, कंका वा कलुसाहमा ॥२८॥
सुद्धं मग्गं विराहित्ता, इहमेगे उ दुम्मई ।
उम्मग्गगया दुक्खं, घायमेसंति तं तहा ॥२९॥
जहा आसाविणिं नावं जाइअंधो दुरूहिया ।
इच्छई पारमागंतु, अंतरा य विसीयइ ॥३०॥
एवं तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिया ।
सोयं कसिणमावन्ना, आगंतारो महब्भयं ॥३१॥
इमं च धम्ममायाय, कासवेण पवेदितं ।
तरे सोयं महाघोरं, अत्तत्ताए परिव्वए ॥३२॥
विरए गामधम्मेहिं जे केई जगई जगा ।
तेसिं अत्तुवमायाए, थामं कुव्वं परिव्वए ॥३३॥
अइमाणं च मायं च तं परिन्नाय पंडिए ।
सव्वमेयं णिराकिच्चा, णिव्वाणं संधए मुणी ॥३४॥
संधए साहुधम्मं च पावधम्मं णिराकरे ।
उवहाणवीरिए भिक्खू, कोहं माणं ण पत्थए ॥३५॥
जे य बुद्धा अतिक्कंता, जे य बुद्धा अणागया ।
संति तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगई जहा ॥३६॥

॥ उत्तरज्झयण-सुत्तं ॥

अह विणयसुयं पढमं अज्झयणं

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥१॥
आणानिद्देसकरे, गुरूणमुववायकारए ।
इंगियागारसंपन्ने, से विणीए त्ति वुच्चइ ॥२॥
आणाऽनिद्देसकरे गुरूणमणुववायकारए ।
पडिणीए असंबुद्धे अविणीए त्ति वुच्चइ ॥३॥
जहा सुणी पूइकण्णी, निक्कसिज्जइ सव्वसो ।
एवं दुस्सीलपडिणीए, मुहरी निक्कसिज्जइ ॥४॥
कणकुण्डगं चइत्ताणं, विट्ठं भुंजइ सूयरे ।
एवं सीलं चइत्ताणं, दुस्सीले रमई मिए ॥५॥
सुणिया भावं साणस्स, सूयरस्स नरस्स य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाणमिच्छन्तो हियमप्पणो ॥६॥
तम्हा विणयमेसिज्जा सीलं पडिलभेज्जओ ।
[1]बुद्धपुत्ते नियागट्ठी, न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥७॥

---

१ बुद्धवुत्त० ।

निसन्ते सियाऽमुहरी, बुद्धाणं अन्तिए सया।
अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा, निरट्ठाणि उ वज्जए॥८॥
अणुसासिओ न कुप्पिज्जा, खन्तिं सेविज्ज पण्डिए।
खुड्डेहिं सह संसग्गिं, हासं कीडं च वज्जए॥९॥
मा य चण्डालियं कासी, बहुयं मा य आलवे।
कालेण य अहिज्जित्ता, तओ झाइज्ज एगगो॥१०॥
आहच्च चण्डालियं कट्टु, न निण्हविज्ज कयाइ वि।
कडं कडे त्ति भासेज्जा, अकडं नो कडे त्ति य॥११॥
मा गलियस्सेव कसं, वयणमिच्छे पुणो पुणो।
कसं व दट्ठुमाइण्णे, पावगं परिवज्जए॥१२॥

अणासवा थूलवया कुसीला,
मिउं पि चण्डं पकरेन्ति सीसा।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया,
पसायए ते हु दुरासयं पि॥१३॥

नापुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो वा नालियं वए।
कोहं असच्चं कुव्वेज्जा, धारेज्जा पियमप्पियं॥१४॥
अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दन्तो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य॥१५॥
वरं मे अप्पा दन्तो, संजमेण तवेण य।
माहं परेहि दम्मन्तो, बन्धणेहि वहेहि य॥१६॥
पडिणीयं च बुद्धाणं, वाया अदुव कम्मुणा।
आवी वा जइ वा रहस्से, नेव कुज्जा कयाइ वि॥१७॥
न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ।
न जुंजे ऊरुणा ऊरुं, सयणे नो पडिस्सुणे॥१८॥

नेव पल्हत्थियं कुज्जा, पक्खपिण्डं च संजए ।
पाए पसारिए वावि, न चिट्ठे गुरुणन्तिए ॥१९॥
आयरिएहिं वाहित्तो, तुसिणीओ न कयाइवि ।
[1]पसायपेही नियागट्ठी, उवचिट्ठे गुरुं सया ॥२०॥
आलवन्ते लवन्ते वा न, निसीएज्ज कयाइ वि ।
चइऊणमासणं धीरो, जओ जत्तं पडिस्सुणे ॥२१॥
आसणगओ न पुच्छेज्जा, नेव सेज्जागओ [2]कयाइवि ।
आगम्मुक्कुडुओ सन्तो, पुच्छेज्जा पञ्जलीउडो ॥२२॥
एवं विणयजुत्तस्स, सुत्तं अत्थं च तदुभयं ।
पुच्छमाणस्स सीसस्स, वागरिज्ज जहासुयं ॥२३॥
मुसं परिहरे भिक्खू, न य ओहारिणिं वए ।
भासादोसं परिहरे, मायं च वज्जए सया ॥२४॥
न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं, न निरट्ठं न मम्मयं ।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा उभयस्सन्तरेण वा ॥२५॥
समरेसु अगारेसु, [3]सन्धीसु य महापहे ।
एगो एगत्थिए सद्धिं, नेव चिट्ठे न संलवे ॥२६॥
जं मे बुद्धाऽणुसासन्ति, सीएण फरुसेण वा ।
मम लाहो त्ति पेहाए, पयओ तं पडिस्सुणे ॥२७॥
अणुसासणमोवायं, दुक्कडस्स य चोयणं ।
हियं तं मण्णई पण्णो, वेसं होइ असाहुणो ॥२८॥
हियं विगयभया बुद्धा, [4]फरुसंपि अणुसासणं ।
वेस्सं तं होइ मूढाणं, खन्तिसोहिकरं पयं ॥२९॥
आसणे उवचिट्ठेज्जा, अणुच्चेऽकुक्कुए थिरे ।
अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई, निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥३०॥

१ पसायट्ठी । २ कया । ३ गिहसंधिसु अ महापहेसु । ४ फरु-

कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।
अकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ॥३१॥
परिवाडीए न चिट्ठेज्जा, भिक्खू दत्तेसणं चरे ।
पडिरूवेण एसित्ता, मियं कालेण भक्खए ॥३२॥
नाइदूरमणासन्ने, नन्नेसिं चक्खुफासओ ।
एगो चिट्ठेज्ज [1]भत्तट्ठं, लंघित्ता तं नइक्कमे ॥३३॥
नाइउच्चे व नीए वा, नासन्ने नाइदूरओ ।
फासुयं परकडं पिण्डं, पडिगाहेज्ज संजए ॥३४॥
अप्पपाणेऽप्पबीयम्मि, पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
समयं संजए भुंजे, जयं अपरिसाडियं ॥३५॥
सुकडि त्ति सुपक्कि त्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
सुणिट्ठिए सुलट्ठि त्ति, सावज्जं वज्जए मुणी ॥३६॥
रमए पण्डिए सासं, हयं भद्दं व वाहए ।
बालं सम्मइ सासन्तो, गलियस्सं व वाहए ॥३७॥
[2]खड्डुया मे चवेडा मे, अक्कोसा य वहा य मे ।
कल्लाणमणुसासन्तो, पावदिट्ठि त्ति मन्नइ ॥३८॥
पुत्तो मे भाय नाइ त्ति, साहू कल्लाण मन्नई ।
पावदिट्ठि उ अप्पाणं, सासं [3]दासि त्ति मन्नइ ॥३९॥
न कोवए आयरियं, अप्पाणंपि न कोवए ।
बुद्धोवघाई न सिया, न सिया तोत्तगवेसए ॥४०॥
आयरियं कुवियं नच्चा, पत्तिएण पसायए ।
विज्झवेज्ज पंजलीउडो, वएज्ज न पुणो त्ति य ॥४१॥
धम्मज्जियं च ववहारं, बुद्धेहायरियं सया ।
तमायरन्तो ववहारं, गरहं नाभिगच्छई ॥४२॥

---

१ भत्तट्ठा । २ खड्डुयाहिं चवेडाहिं अक्कोसेहिं वहेहि य । ३ दासं व ।

मणोगयं वक्कगयं, जाणित्तायरियस्स उ।
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए॥४३॥
वित्ते अचोइए निच्चं, [1]खिप्पं हवइ सुचोइए।
जहोवइट्ठं सुकयं, किच्चाइं कुव्वई सया॥४४॥
नच्चा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जायए।
हवई किच्चाण सरणं, भूयाणं जगई जहा॥४५॥
पुज्जा जस्स पसीयंति, संबुद्धा पुव्वसंथुया।
पसन्ना लाभइस्संति, विउलं अट्ठियं सुयं॥४६॥
स पुज्जसत्थे सुविणीयसंसए,
[2]मणोरुई चिट्ठई कम्मसंपया।
तवोसमायारिसमाहिसंवुडे,
महज्जुई पंच वयाइं पालिया॥४७॥
स देवगंधव्वमणुस्सपूइए,
चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं।
सिद्धे वा हवइ सासए,
देवे वा अप्परए महिड्ढीए॥४८॥ त्ति बेमि

॥ विणयसुयं नाम पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह दुइयं परिसहज्झयणं ॥

सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया। जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा।

कयरे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महा-

१ समन्ने पार्श्वं ०१। २ मणिरिइय मणपसत्थं तथा।

वीरेण कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा ?

इमे ते खलु बावीस परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा, तंजहा–

दिगिंछापरीसहे १ पिवासापरीसहे २ सीयपरीसहे ३ उसिणपरीसहे ४ दंसमसयपरीसहे ५ अचेलपरीसहे ६ अरइ-परीसहे ७ इत्थीपरीसहे ८ चरियापरीसहे ९ निसीहियापरीसहे १० सेज्जापरीसहे ११ अक्कोसपरिसहे १२ वहपरीसहे १३ जायणा परीसहे १४ अलाभपरीसहे १५ रोगपरीसहे १६ तणफास-परीसहे १७ जल्लपरीसहे १८ सक्कारपुरक्कारपरीसहे १९ पन्ना-परीसहे २० अन्नाणपरीसहे २१ दंसणपरीसहे २२ ।

परीसहाण पविभत्ती, कासवेण पवेइया ।
तं मे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥१॥
[1]दिगिंछापरिगए देहे तवस्सी भिक्खू थामवं ।
न छिंदे न छिंदावए, न पए न पयावए ॥२॥
कालीपव्वंगसंकासे, किसे धमणिसंतए ।
मायन्ने असणपाणस्स, अदीणमणसो चरे ॥३॥
तओ पुट्ठो पिवासाए, दोगुंछी लज्जसंजए ।
सीओदगं न सेविज्जा, वियडस्सेसणं चरे ॥४॥
छिन्नावाएसु पंथेसु, आउरे सुपिवासिए ।
परिसुक्कमुहाऽदीणे, तं तितिक्खे परीसहं ॥५॥
चरतं विरयं लूहं, सीयं फुसइ एगया ।
नाइवेलं [2]मुणी गच्छे, सोच्चाणं जिणसासणं ॥६॥

१ दिगिंछापरियावेणं । २ संजतो य परिव्वए । ३ विइन्निज्जा पाठदिट्ठी विहसइ ।

न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताणं न विज्जइ ।
अहं तु अग्गि सेवामि, इइ भिक्खू न चिंतए ॥७॥
उसिणपरियावेण, परिदाहेण तज्जिए ।
घिंसु वा परियावेण सायं नो परिदेवए ॥८॥
उण्हाहितत्तो मेहावी, सिणाणं नो वि पत्थए ।
गायं नो परिसिंचेज्जा, न वीएज्जा य अप्पयं ॥९॥
पुट्ठो य दंसमसएहिं, समरे व महामुणी ।
नागो संगामसीसे वा, सूरो अभिहणे परं ॥१०॥
न संतसे न वारेज्जा, मणं पि न पओसए ।
उवेहे न हणे पाणे, भुंजंते मंससोणियं ॥११॥
परिजुण्णेहि वत्थेहि, होक्खामि त्ति अचेलए ।
अदुवा सचेलए होक्खं, इइ भिक्खू न चिंतए ॥१२॥
एगयाऽचेलए होइ, सचेले आवि एगया ।
एयं धम्मं हियं नच्चा, नाणी नो परिदेवए ॥१३॥
गामाणुगामं रीयंतं, अणगारं अकिंचणं ।
अरई अणुप्पवेसेज्जा, तं तितिक्खे परीसहं ॥१४॥
अरइं पिट्ठओ किच्चा, विरए आयरक्खिए ।
धम्मारामे निरारम्भे, उवसंते मुणी चरे ॥१५॥
संगो एस मणूसाणं, जाओ लोगंमि इत्थिओ ।
नो ताहिं विणिहम्मेज्जा, चरेज्जत्तगवेसए ॥१७॥
एग एव चरे लाढे, अभिभूय परीसहे ।
गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए ॥१८॥
असमाणो चरे भिक्खू, नेव कुज्जा परिग्गहं ।
असंसत्तो गिहत्थेहिं, अणिकेओ परिव्वए ॥१९॥
सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगओ ।
अकुक्कुओ निसीएज्जा, न य वित्तासए परं ॥२०॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उवसग्गाभिधारए ।
संकाभीओ न गच्छेज्जा, उट्ठित्ता अन्नमासण ॥२१॥
उच्चावयाहि सेज्जाहिं, तवस्सी भिक्खू थामव ।
नाइवेल विहन्निज्जा, पावदिट्ठी विहन्नई ॥२२॥
पइरिक्कुवस्सय लद्धु, कल्लाणमदुवा पावय ।
किमेगराइ करिस्सइ, एव तत्थऽहियासए ॥२३॥
अक्कोसेज्जा परे भिक्खु, न तेसिं पडिसजले ।
सरिसो होइ बालाण, तम्हा भिक्खू न सजले ॥२४॥
सोच्चाण फरुसा भासा, दारुणा गामकण्टगा ।
तुसिणीओ उवेहेज्जा, न ताओ मणसीकरे ॥२५॥
हओ न सजले भिक्खू मणपि न पओसए ।
तितिक्ख परम नच्चा, भिक्खू धम्म विचिंतए ॥२६॥
समण सजय दन्त, हणिज्जा कोइ कत्थइ ।
नत्थि जीवस्स नासुत्ति, [1]एव पेहेज्ज सजए ॥२७॥
दुक्कर खलु भो निच्च, अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्व से जाइय होइ, नत्थि किंचि अजाइय ॥२८॥
गोयरग्गपविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए ।
सेओ अगारवासुत्ति, इइ भिक्खू न चिंतए ॥२९॥
परेसु घासमेसेज्जा भोयणे परिणिट्ठिए ।
[2]लद्धे पिण्डे अलद्धे वा, नाणुतप्पेज्ज पंडिए ॥३०॥
अज्जेवाह न लब्भामि, अवि लाभो सुए सिया ।
जो एव पडिसचिक्खे, अलाभो त न तज्जए ॥३१॥
नच्चा उप्पइय दुक्ख, वेयणाए दुहट्टिए ।
अदीणो थावए पन्न, पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥३२॥

१ य तं पेहे असाहुयं । २ लद्धे पिंड आहरिज्जा अलद्धे नाणुतप्पए ।

तेइच्छं नाभिनंदेज्जा संचिक्खत्तगवेसए ।
एयं खु तस्स सामण्णं, जं न कुज्जा न कारवे ॥३३॥
अचेलगस्स लूहस्स, संजयस्स तवस्सिणो ।
तणेसु सयमाणस्स, हुज्जा गायविराहणा ॥३४॥
आयवस्स निवाएण, अउला हवइ वेयणा ।
एवं नच्चा न सेवंति, तंतुजं तणतज्जिया ॥३५॥
किलिन्नगाए मेहावी, पंकेण व रएण वा ।
घिंसु वा परियावेण, सायं नो परिदेवए ॥३६॥
वेएज्जा निज्जरापेही, आरियं धम्मणुत्तरं ।
जाव सरीरभेउत्ति, जल्लं काएण धारए ॥३७॥
अभिवायणमब्भुट्ठाणं, सामी कुज्जा निमंतणं ।
जे ताइं पडिसेवन्ति, न तेसिं पीहए मुणी ॥३८॥
अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए ।
रसेसु नाणुगिज्झेज्जा, नाणुतप्पेज्ज पन्नवं ॥३९॥
से नूणं मए पुव्वं, कम्माऽणाणफला कडा ।
जेणाहं नाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥४०॥
अह पच्छा उइज्जन्ति, कम्माऽणाणफला कडा ।
एवमस्सासि अप्पाणं, नच्चा कम्मविवागयं ॥४१॥
निरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंवुडो ।
जो सक्खं नाभिजाणामि, धम्मं कल्लाणपावगं ॥४२॥
तवोवहाणमादाय, पडिमं पडिवज्जओ ।
एवं पि विहरओ मे, छउमं न नियट्टइ ॥४३॥
नत्थि नूणं परे लोए, इड्ढी वावि तवस्सिणो ।
अदुवा वंचिओमित्ति, इइ भिक्खू न चिंतए ॥४४॥
अभू जिणा अत्थि जिणा, अदुवावि भविस्सइ ।
मुसं ते एवमाहंसु, इइ भिक्खू न चिंतए ॥४५॥

एए परीसहा सव्वे, कासवेण पवेइया ।
जे भिक्खू न विहन्नेज्जा, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥४६॥त्ति बेमि॥

॥ दुइअं परिसहज्झयणं समत्तं ॥२॥

॥ अह तइअं चाउरंगिज्जं अज्झयणं ॥

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो ।
माणुसत्तं सुई सद्धा, संजमम्मि य वीरियं ॥१॥
समावन्नाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु ।
कम्मा नाणाविहा कट्टु, पुढो विस्संभिया पया ॥२॥
एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया ।
एगया आसुरं कायं, अहाकम्मेहिं गच्छइ ॥३॥
एगया खत्तिओ होइ, तओ चण्डालबुक्कसो ।
तओ कीडपयंगो य, तओ कुन्थुपिवीलिया ॥४॥
एवमावट्टजोणीसु, पाणिणो कम्मकिब्बिसा ।
न निविज्जन्ति संसारे, सव्वट्ठेसु व खत्तिया ॥५॥
कम्मसंगेहिं संमूढा, दुक्खिया बहुवेयणा ।
अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मंति पाणिणो ॥६॥
कम्माणं तु पहाणाए, आणुपुव्वी कयाइ उ ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता, आययंति मणुस्सयं ॥७॥
माणुस्सं विग्गहं लद्धुं सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
जं सोच्चा पडिवज्जन्ति, तवं खंतिमहिंसयं ॥८॥
आहच्च सवणं लद्धुं सद्धा परमदुल्लहा ।
सोच्चा नेआउयं मग्गं, बहवे परिभस्सई ॥९॥
सुइं च लद्धुं सद्धं च, वीरियं पुण दुल्लहं ।
बहवे रोयमाणावि, नो य णं पडिवज्जए ॥१०॥

माणुसत्तंमि आयाओ, जो धम्मं सोच्च सद्दहे ।
तवस्सी वीरियं लद्धुं, संवुडे निद्धुणे रयं ॥११॥
सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ ।
निव्वाणं परमं जाइ, घयसित्तिव्व पावए ॥१२॥
विगिंच कम्मुणो हेउं, जसं संचिणु खंतिए ।
सरीरं पाढवं हिच्चा, उड्ढं पक्कमए दिसं ॥१३॥
विसालिसेहिं सीलेहिं, जक्खा उत्तरउत्तरा ।
महासुक्का व दिप्पंता, मन्नंता अपुणच्चवं ॥१४॥
अप्पिया देवकामाणं, कामरूवविउव्विणो ।
उड्ढं कप्पेसु चिट्ठंति, पुव्वावाससया बहू ॥१५॥
तत्थ ठिच्चा जहाठाणं, जक्खा आउक्खये चुया ।
उवेंति माणुसं जोणिं, से दसंगे भिजायए ॥१६॥
खित्तं वत्थुं हिरण्णं च, पसवो दासपोरुसं ।
चत्तारि कामखंधाणि तत्थ से उववज्जइ ॥१७॥
मित्तवं नाइवं होइ, उच्चागोए य वण्णवं ।
अप्पायंके महापन्ने, अभिजाए जसो बले ॥१८॥
भुच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडिरूवे अहाउयं ।
पुव्वं विसुद्धसद्धम्मे, केवलं बोहिं बुज्झिया ॥१९॥
चउरंगं दुल्लहं [1]नच्चा, संजमं पडिवज्जिया ।
तवसा धुयकम्मंसे, सिद्धे हवइ सासए ॥२०॥ त्ति बेमि ।

तइअं चाउरंगिज्जं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह चउत्थं असंखयं अज्झयणं ॥

असंखयं जीविय मा पमायए,
जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।

1 मत्वा ।

एव वियाणाहि जणे पमत्ते
किन्नु विहिंसा अजया गहिंति ॥१॥
जे पावकम्मेहिं धण मणूसा,
समाययन्ती अमइ गहाय।
पहाय ते पासपयट्टिए नरे
वेराणुबद्धा नरय उविंति ॥२॥
तेणे जहा सन्धिमुहे गहीए,
सकम्मुणा किच्चइ पावकारी।
एव पया पेच्च इह च लोए,
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ॥३॥
ससारमावन्न परस्स अट्ठा,
साहारण ज च करेइ कम्म।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले,
न बन्धवा बन्धवय उविंति ॥४॥
वित्तेण ताण न लभे पमत्ते,
इमम्मि लोए अदुवा परत्थ।
दीवप्पणट्ठेव अणतमोहे,
नेयाउय दट्ठुमदट्ठुमेव ॥५॥
सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी
न वीससे पडिय आसुपण्णे।
घोरा मुहुत्ता अबल सरीर,
भारण्डपक्खीव चरेऽप्पमत्ते ॥६॥
चरे पयाइ परिसङ्कमाणो,
ज किंचि पास इह मन्नमाणो।

२ कप्पणु

लाभंतर जीविय वूहइत्ता,
पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥७॥
छंदंनिरोहेण उवेइ मोक्खं,
आसे जहा सिक्खियवम्मधारी।
पुव्वाइं वासाइं चरप्पमत्ते,
तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मुक्खं ॥८॥
स पुव्वमेव न लभेज्ज पच्छा,
एसोवमा सासयवाइयाणं।
विसीयइ सिढिले आउयम्मि,
कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥९॥
खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं,
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे।
समिच्च लोयं समया महेसी,
अप्पाणरक्खी चरऽप्पमत्ते ॥१०॥
मुहुं मुहुं मोहगुणे जयंतं,
अणेगरूवा समणं चरंतं।
फासा फुसंति असमंजसं च,
न तेसि भिक्खू मणसा पउस्से ॥११॥
मन्दा य फासा बहुलोहणिज्जा,
तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा।
रक्खिज्ज कोहं विणएज्ज माणं,
मायं न सेवेज्ज पहेज्ज लोहं ॥१२॥
जे संखया तुच्छपरप्पवाई,
ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा।
एए अहम्मे त्ति दुगुंछमाणो,
कंखे गुणे जाव सरीरभेउ ॥१३॥ त्ति बेमि।

॥ अह अकाममरणिज्जं पञ्चमं अज्झयणं ॥

अण्णवंसि महोहंसि, एगे तिण्णे दुरुत्तरं ।
तत्थ एगे महापन्ने, इमं पण्हमुदाहरे ॥१॥
सन्तिमे य दुवे ठाणा, अक्खाया मरणन्तिया ।
अकाममरणं चेव, सकाममरणं तहा ॥२॥
बालाणं तु अकामं तु, मरणं असइं भवे[1] ।
पण्डियाणं सकामं तु, उक्कोसेण सइं भवे ॥३॥
तत्थिमं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं ।
कामगिद्धे जहा बाले, भिसं कूराइं कुव्वई ॥४॥
जे गिद्धे कामभोगेसु एगे कूडाय गच्छइ ।
न मे दिट्ठे परे लोए, चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥५॥
हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणागया ।
को जाणइ परे लोए, अत्थि वा नत्थि वा पुणो ॥६॥
जणेण सद्धिं होक्खामि इइ बाले पगब्भइ ।
कामभोगाणुराएणं, केसं संपडिवज्जई ॥७॥
तओ से दण्डं समारम्भइ, तसेसु थावरेसु य ।
अट्ठाए य अणट्ठाए भूयगामं विहिंसई ॥८॥
हिंसे बाले मुसावाई, माइल्ले पिसुणे सढे ।
भुंजमाणे सुरं मंसं, सेयमेयं ति मन्नई ॥९॥
कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
दुहओ मलं संचिणइ सिसुणागु व्व मट्टियं ॥१०॥
तओ पुट्ठो आयकेणं, गिलाणो परितप्पई ।
पभीओ परलोगस्स, कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥११॥
सुया मे नरए ठाणा, असीलाणं च जा गई ।
बालाणं कूरकम्माणं, पगाढा जत्थ वेयणा ॥१२॥

---

1 तहा ।

तत्थोववाइयं ठाणं, जहा मे तमणुस्सुयं ।
अहाकम्मेहिं गच्छन्तो सो पच्छा परितप्पइ ॥१३॥
जहा सागडिओ जाणं, समं हिच्चा महापहं ।
विसमं मग्गमोइण्णो, अक्खे भग्गम्मि सोयई ॥१४॥
एवं धम्मं विउक्कम्म, अहम्मं पडिवज्जिया ।
बाले मच्चुमुहं पत्ते, अक्खे भग्गे व सोयई ॥१५॥
तओ से मरणन्तम्मि, बाले संतसई भया ।
अकाममरणं मरइ धुत्ते व कलिणा जिए ॥१६॥
एयं अकाममरणं, बालाणं तु पवेइयं ।
इत्तो सकाममरणं, पण्डियाणं सुणेह मे ॥१७॥
मरणं पि सपुण्णाणं, जहा मेयमणुस्सुयं ।
विप्पसण्णमणाघायं, संजयाण वुसीमओ ॥१८॥
न इमं सव्वेसु भिक्खूसु न इमं सव्वेसुऽगारिसु ।
नाणासीला अगारत्था विसमसीला य भिक्खुणो ॥१९॥
सन्ति एगेहिं भिक्खूहिं गारत्था संजमुत्तरा ।
गारत्थेहि य सव्वेहिं, साहवो संजमुत्तरा ॥२०॥
चीराजिणं नगिणिणं, जडी संघाडिमुण्डिणं ।
एयाणि वि न तायंति, दुस्सीलं परियागयं ॥२१॥
पिंडोलए व्व दुस्सीले, नरगाओ न मुच्चइ ।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा, सुव्वए कम्मई दिवं ॥२२॥
अगारिसामाइयंगाणि, सड्ढी काएण फासए ।
पोसहं दुहओ पक्खं, एगरायं न हावए ॥२३॥
एवं सिक्खासमावन्ने, गिहवासे वि सुव्वए ।
मुच्चइ छविपव्वाओ, गच्छे जक्खसलोगयं ॥२४॥
अह जे संवुडे भिक्खू दोण्हं अन्नयरे सिया ।
सव्वदुक्खपहीणे वा, देवे वावि महिड्ढीए ॥२५॥

उत्तराइं विमोहाइं, जुइमन्ताणुपुव्वसो ।
समाइण्णाइं जक्खेहिं, आवासाइं जसंसिणो ॥२६॥
दीहाउया इड्ढिमन्ता, समिद्धा कामरूविणो ।
अहुणोववन्नसंकासा, भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥२७॥
ताणि ठाणाणि गच्छन्ति,
सिक्खित्ता संजमं तवं ।
भिक्खाए वा गिहित्थे वा,
जे सन्ति परिनिव्वुडा ॥२८॥
तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं, संजयाण वुसीमओ ।
न संतसंति मरणन्ते, सीलवन्ता बहुस्सुया ॥२९॥
तुलिया विसेसमादाय दयाधम्मस्स खन्तिए ।
विप्पसीएज्ज मेहावी, तहाभूएण अप्पणा ॥३०॥
तओ काले अभिप्पेए, सड्ढी तालिसमन्तिए ।
विणएज्ज लोमहरिसं, भेयं देहस्स कंखए ॥३१॥
अह कालम्मि संपत्ते आघायाय समुस्सयं ।
सकाममरणं मरई, तिण्हमन्नयरं मुणी ॥३२॥ त्ति बेमि ।

इअ अकाममरणिज्जं पंचमं अज्झयणं समत्तं ॥५॥

॥ अह खुड्डागनियण्ठिज्जं छट्ठं अज्झयणं ॥

जावन्तऽविज्जापुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभवा ।
लुप्पन्ति बहुसो मूढा, संसारम्मि अणन्तए ॥१॥
समिक्ख पण्डिए तम्हा, पासजाईपहे बहू ।
अप्पणा सच्चमेसेज्जा मित्तिं भूएसु कप्पए ॥२॥
माया पिया ण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
नालं ते मम ताणाए, लुप्पन्तस्स सकम्मुणा ॥३॥

एयमट्ठ सपेहाए, पासे समियदसणे ।
छिन्द गिद्धि सिणेह च, न कखे पुव्वसथव ॥४॥
गवास मणिकुण्डल, पसवो दासपोरुस ।
सव्वमेय चइत्ताण कामरूवी भविस्ससि ॥५॥
(थावर जगम चेव धण धन्न उवक्खर ।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं नाल दुक्खाउ मोयणे ॥)
अज्झत्थ सव्वओ सव्व, दिस्स पाणे पियायए ।
न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए ॥६॥
आदाण नरय दिस्स, नायएज्ज तणामवि ।
दोगुन्छी अप्पणो पाए, दिन्न भुजेज्ज भोयण ॥७॥
इहमेगे उ मन्नति, अपच्चक्खाय पावग ।
आयरिय विदित्ताण सव्वदुक्खा विमुच्चए ॥८॥
भणता अकरेन्ता य, बन्धमोक्खपइण्णिणो ।
वायावीरियमेत्तेण, समासासेंति अप्पय ॥९॥
न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणुसासण ।
विसन्ना पावकम्मेहिं, बाला पडियमाणिणो ॥१०॥
जे केइ सरीरे सत्ता, वण्णे रूवे य सव्वसो ।
मणसा कायवक्केण, सव्वे ते दुक्खसभवा ॥११॥
आवन्ना दीहमद्धाण, ससारम्मि अणतए ।
तम्हा सव्वदिस पस्स, अप्पमत्तो परिव्वए ॥१२॥
बहिया उड्ढमादाय, नावकखे कयाइ वि ।
पुव्वकम्मक्खयट्ठाए, इम देह समुद्धरे ॥१३॥
[1]विविच्च कम्मुणो हेउ कालकखी परिव्वए ।
माय पिंडस्स पाणस्स, कड लद्धूण भक्खए ॥१४॥

---

१ विगिंच ।

तओ कम्मगुरु जन्तू, पच्चुप्पन्नपरायणे ।
अएव्व आगयाएसे, मरणंतम्मि सोयइ ॥९॥
तओ आउपरिक्खीणे, चुयदेहा विहिंसगा ।
आसुरीय दिसं बाला, गच्छंति अवसा तमं ॥१०॥
जहा कागिणिए हेउं, सहस्सं हारए नरो ।
अपत्थं अम्बगं भोच्चा, राया रज्जं तु हारए ॥११॥
एवं माणुस्सगा कामा, देवकामाण अंतिए ।
सहस्सगुणिया भुज्जो, आउं कामा य दिव्विया ॥१२॥
अणेगवासानउया, जा सा पन्नवओ ठिई ।
जाणि जीयंति दुम्मेहा, ऊणे वाससयाउए ॥१३॥
जहा य तिन्नि वणिया, मूलं घेत्तूण निग्गया ।
एगोऽत्थ लहए लाभं एगो मूलेण आगओ ॥१४॥
एगो मूलं पि हारित्ता, आगओ तत्थ वाणिओ ।
ववहारे उवमा एसा, एवं धम्मे वियाणह ॥१५॥
मूलच्छेएण जीवाणं नरगतिरिक्खत्तणं धुवं ॥१६॥
दुहओ गई बालस्स, आवई वहमूलिया ।
देवत्तं माणुसत्तं च जं जिए लोलयासढे ॥१७॥
तओ जिए सइं होइ दुविहं दुग्गइं गए ।
दुल्लहा तस्स उम्मग्गा, अद्धाए सुचिरादवि ॥१८॥
एवं जियं सपेहाए, तुलिया बालं च पण्डियं ।
मूलियं ते पवेसंति, माणुसिं जोणिमेंति जे ॥१९॥
वेमायाहिं सिक्खाहिं, जे नरा गिहिसुव्वया ।
उवेंति माणुसं जोणिं, कम्मसच्चा हु पाणिणो ॥२०॥
जेसिं तु विउला सिक्खा, मूलियं ते अइच्छिया ।
सीलवन्ता सविसेसा, अदीणा जंति देवयं ॥२१॥
एवमदीणवं भिक्खू, आगारिं च वियाणिया ।
कहण्णु जिच्चमेलिक्खं, जिच्चमाणे न संविदे ॥२२॥

जहा कुसग्गे उदगं, समुद्देण समं मिणे ।
एवं माणुस्सगा कामा, देवकामाण अंतिए ॥२३॥
कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सन्निरुद्धम्मि आउए ।
कस्स हेउं पुराकाउं, जोगक्खेमं न संविदे ॥२४॥
इह कामाणियट्टस्स, अत्तट्ठे अवरज्झइ ।
सोच्चा नेयाउयं मग्गं, जं भुज्जो परिभस्सई ॥२५॥
इह कामणियट्टस्स, अत्तट्ठे नावरज्झई ।
पूइदेहनिरोहेणं भवे देवित्ति मे सुयं ॥२६॥
इड्ढी जुई जसो वण्णो, आउं सुहमणुत्तरं ।
भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु तत्थ से उववज्जइ ॥२७॥
बालस्स पस्स बालत्तं अहम्मं पडिवज्जिया ।
चिच्चा धम्मं अहम्मिट्ठे, नरए उववज्जइ ॥२८॥
धीरस्स पस्स धीरत्तं, सव्वधम्माणुवत्तिणो ।
चिच्चा अधम्मं धम्मिट्ठे, देवेसु उववज्जइ ॥२९॥
तुलियाण बालभावं, अबालं चेव पण्डिए ।
चइऊण बालभावं अबालं सेवए मुणी ॥३०॥ त्ति बेमि ॥

एलयज्झयणं समत्तं ॥७॥

॥ अह काविलियं अट्ठमं अज्झयणं ॥

अधुवे असासयम्मि
संसारम्मि दुक्खपउराए ।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं
जेणाहं दुग्गइं न गच्छेज्जा ॥१॥
विजहित्तु पुव्वसंजोयं,
न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा ।

1 सव० ।

असिणेदसिणेहकरेहिं,
दोसपओसेहिं मुच्चए भिक्खू ॥२॥
तो नाणदंसणसमग्गो,
हियनिस्सेसाए सव्वजीवाण।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए
भासइ मुणिवरो विगयमोहो ॥३॥
सव्वं गंथं कलहं च,
विप्पजहे तहाविहं भिक्खू।
सव्वेसु कामजाएसु,
पासमाणो न लिप्पइ ताई ॥४॥
भोगामिसदोसविसन्ने,
हियनिस्सेयसबुद्धियोच्चत्थे'।
बाले य मंदिए मूढे,
बज्झइ मच्छिया व खेलम्मि ॥५॥
दुप्परिच्चया इमे कामा,
नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं।
अह संति सुव्वया साहू,
जे तरंति अतरं वणिया वा ॥६॥
समणा मु एगे वयमाणा,
पाणवहं मिया अयाणंता।
मंदा निरयं गच्छंति,
बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥७॥
न हु पाणवहं अणुजाणे,
मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं।

विपर्यस्थ।

पगारिएहिं अक्खायं,
जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ॥८॥
पाणे य नाइवाएज्जा,
से समाइ त्ति वुच्चइ ताई ।
तओ से पावयं कम्मं,
निज्जाइ उदगं व थलाओ ॥९॥
जगनिस्सिएहिं भूएहिं,
तसनामेहिं थावरेहिं च ।
नो तेसिमारभे दंडं,
मणसा वयसा कायसा चेव ॥१०॥
सुद्धेसणाओ नच्चाणं,
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ।
जायाए घासमेसेज्जा,
रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥११॥
पंताणि चेव सेवेज्जा,
सीयपिंडं पुराणकुम्मासं ।
अदु बुक्कसं पुलागं वा,
जवणट्ठाए निसेवए मंथुं ॥१२॥
जे लक्खणं च सुविणं च,
अंगविज्जं च जे पउंजंति ।
न हु ते समणा वुच्चंति,
एवं आयरिएहिं अक्खायं ॥१३॥
इह जीवियं अणियमेत्ता,
पब्भट्ठा समाहिजोएहिं ।
ते कामभोगरसगिद्धा,
उववज्जंति आसुरे काए ॥१४॥

तत्तो वि य उव्वट्टित्ता,
संसारं बहुं अणुपरियडंति ।
बहुकम्मलेवलित्ताणं,
बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं ॥१५॥
कसिणंपि जो इमं लोयं,
पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स ।
तेणावि से न संतुस्से,
इइ दुप्पूरए इमे आया ॥१६॥
जहा लाहो तहा लोहो,
लाहा लोहो पवड्ढइ ।
दोमासकयं कज्जं,
कोडीए वि न निट्ठियं ॥१७॥
नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा,
गण्डवच्छासु ऽणेगचित्तासु ।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता,
खेल्लंति जहा व दासेहिं ॥१८॥
नारीसु नोवगिज्झेज्जा
इत्थी विप्पजहेज्ज अणगारे ।
धम्मं च पेसलं नच्चा,
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥१९॥
इअ एस धम्मे अक्खाए,
कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं ।
तरिहिंति जे उ काहिंति,
तेहिं आराहिया दुवे लोगा ॥२०॥ त्ति बेमि॥

॥ काविलीयं अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ अह नवमं नमिपव्वज्जा अज्झयणं ॥

चइऊण देवलोगाओ, उववन्नो माणुसम्मि लोगम्मि ।
उवसन्तमोहणिज्जो, सरइ पोराणियं जाइं ॥१॥
जाइं सरित्तु भयवं, सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्तं ठवित्तु रज्जे, अभिणिक्खमई नमी राया ॥२॥
से देवलोगसरिसे अन्तेउरवरगओ वरे भोए ।
भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥३॥
मिहिलं सपुरजणवयं, बलमोरोहं च परियणं सव्वं ।
चिच्चा अभिनिक्खन्तो एगन्तमहिट्ठिओ भयवं ॥४॥
कोलाहलगसंभूयं, आसी मिहिलाए पव्वयन्तम्मि ।
तइया रायरिसिम्मि, नमिम्मि अभिणिक्खमंतम्मि ॥५॥
अब्भुट्ठियं रायरिसिं, पव्वज्जाठाणमुत्तमं ।
सक्को माहणरूवेण, इमं वयणमब्बवी ॥६॥
किण्णु भो अज्ज मिहिलाए, कोलाहलगसंकुला ।
[1]सुच्चन्ति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥७॥
एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥८॥
मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे ।
पत्तपुप्फफलोवेए, बहूणं बहुगुणे सया ॥९॥
वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे ।
दुहिया असरणा अत्ता, एए कन्दन्ति भो ! खगा ॥१०॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥११॥

---

१ सुव्व० ।

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥२५॥
संसयं खलु सो कुणइ, जो मग्गे कुणइ घरं ।
जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ॥२६॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥२७॥
आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे ।
नगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥२८॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥२९॥
असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दंडो पजुंजए ।
अकारिणोऽत्थ बज्झंति, मुच्चए कारगो जणो ॥३०॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥३१॥
जे केइ पत्थिवा तुब्भं, नानमंति नराहिवा ।
वसे ते ठावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥३२॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविंदं इणमब्बवी ॥३३॥
जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ॥३४॥
अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ ।
अप्पाणं चेव अप्पाणं, जइत्ता सुहमेहए ॥३५॥
पंचिन्दियाणि कोहं, माणं मायं तहेव लोहं च ।
दुज्जयं चेव अप्पाणं, सव्वं अप्पे जिए जियं ॥३६॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥३७॥

जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समणमाहणे ।
दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥३८॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥३९॥
जो सहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए ।
तस्स वि संजमो सेओ, अदिन्तस्स वि किंचण ॥४०॥
एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥४१॥
घोरासमं चइत्ताणं, अन्नं पत्थेसि आसमं ।
इहेव पोसहरओ, भवाहि मणुयाहिवा ! ॥४२॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥४३॥
मासे मासे तु जो बालो, कुसग्गेण तु भुंजए ।
न सो सुअक्खायधम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं ॥४४॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥४५॥
हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं ।
कोसं वड्ढावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥४६॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥४७॥

सुवण्णरुप्पस्स उ पव्वया भवे,
सिया हु केलाससमा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि,
इच्छा हु आगाससमा अणंतिया ॥४८॥

पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह ।
पडिपुण्णं नालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ॥४९॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥५०॥
अच्छेरगमब्भुदए, भोए चयसि पत्थिवा ।
असन्ते कामे पत्थसि, संकप्पेण विहन्नसि ॥५१॥
एयमट्ठं निसामित्ता, हेउकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥५२॥
सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा ।
कामे पत्थेमाणा, अकामा जंति दोग्गइं ॥५३॥
अहे वयंति कोहेणं, माणेणं अहमा गई ।
माया गइ पडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भयं ॥५४॥
अवउज्झिऊण माहणरूवं, विउव्विऊण इन्दत्तं ।
वन्दइ अभित्थुणन्तो, इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥५५॥
अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ ।
अहो निरक्किया माया, अहो लोहो वसीकओ ॥५६॥
अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्दवं ।
अहो ते उत्तमा खन्ती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥५७॥
इहं सि उत्तमो भन्ते, [1]पच्छा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्तमुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥५८॥
एवं अभित्थुणन्तो, रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए ।
पयाहिणं करन्तो, पुणो पुणो वन्दए सक्को ॥५९॥
तो वन्दिऊण पाए, चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स ।
आगासेणुप्पइओ, ललियचवलकुंडलतिरीडी ॥६०॥
नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं च वेदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥६१॥

---

1 पच्छा ।

एव करेंति सबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा।
निणियट्टंति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि ॥६२॥ त्ति बेमि

॥ नमिपव्वज्जा समत्ता ॥

॥ अह दुमपत्तय दसम अज्झयणं ॥

दुमपत्तए पंडुरए जहा,
निवडइ राइगणाण अच्चए।
एवं मणुयाण जीविय,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१॥

कुसग्गे जह ओसबिन्दुए,
थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए।
एव मणुयाण जीविय,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२॥

इइ इत्तरियम्मि आउए,
जीवियए बहुपच्चवायए।
विहुणाहि रयं पुरे कडं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३॥

दुलहे खलु माणुसे भवे,
चिरकालेण वि स व्वपाणिणं।
गाढा य विवाग कम्मुणो,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥४॥

पुढविक्कायमइगओ,
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥५॥

आउक्कायमइगओ,
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥६॥

तेउक्कायमइगओ,
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥७॥

वाउक्कायमइगओ,
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥८॥

वणस्सइकायमइगओ,
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालमणंतदुरंतयं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥९॥

बेइंदियकायमइगओ,
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखिज्जसन्नियं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१०॥

तेइंदियकायमइगओ,
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखिज्जसन्नियं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥११॥

चउरिंदियकायमइगओ,
उक्कोसं जीवो उ संवसे।

काल संखिज्जसन्निय,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१२॥
पंचिंदियकायमइगओ,
उक्कोस जीवो उ संवसे ।
सत्तट्ठभवगहणे,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१३॥
देवे नेरइए य अइगओ,
उक्कोस जीवो उ संवसे ।
इक्केक्कभवगहणे,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१४॥
एवं भवसंसारे,
संसरइ सुहासुहेहिं कम्मेहिं ।
जीवो पमायबहुलो,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१५॥
लद्धूण वि माणुसत्तणं,
आरिअत्तं पुणरावि दुल्लहं ।
बहवे दसुया मिलक्खुया
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१६॥
लद्धूण वि आरियत्तणं,
अहीणपंचेंदियया हु दुल्लहा ।
विगलिंदियया हु दीसई
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१७॥
अहीणपंचेंदियत्तं पि से लहे
उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा ।
कुतित्थिनिसेवए जणे,

लद्धूण वि उत्तमं सुइं,
सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा।
मिच्छत्तनिसेवए जणे,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥१९॥
धम्मं पि हु सद्दहन्तया,
दुल्लहया काएण फासया।
इह कामगुणेहि मुच्छिया,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२०॥
परिजूरइ ते सरीरयं,
केसा पण्डुरया हवंति ते।
से सोयबले य हायई,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२१॥
परिजूरइ ते सरीरयं,
केसा पण्डुरया हवंति ते।
से चक्खुबले य हायई,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२२॥
परिजूरइ ते सरीरयं,
केसा पण्डुरया हवंति ते।
से घाणबले य हायई,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२३॥
परिजूरइ ते सरीरयं,
केसा पण्डुरया हवंति ते।
से जिब्भबले य हायई,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२४॥
परिजूरइ ते सरीरयं,
केसा पण्डुरया हवंति ते।

से फासबले य हायई,
समय गोयम ! मा पमायए ॥२५॥
परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवंति ते।
से सव्वबले य हायई,
समय गोयम ! मा पमायए ॥२६॥
अरई गण्ड विसूइया,
आयंका विविहा फुसंति ते।
विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं,
समय गोयम ! मा पमायए ॥२७॥
वोच्छिन्द सिणेहमप्पणो,
कुमुयं सारइयं व पाणियं।
से सव्वसिणेहवज्जिए,
समय गोयम ! मा पमायए ॥२८॥
चिच्चाण धणं च भारियं
पव्वइओ हि सि अणगारियं।
मा वन्तं पुणो वि आइए,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२९॥
अवउज्झिय मित्तबन्धवं,
विउलं चेव धणोहसंचयं।
मा तं बिइयं गवेसए,
समय गोयम ! मा पमायए ॥३०॥
न हु जिणे अज्ज दिस्सई,
बहुमए दिस्सइ मग्गदेसिए।
संपइ नेयाउए पहे,
समय गोयम ! मा पमायए ॥३१॥

अवसोहिय कण्टगापहं,
ओइण्णो सि पहं महालयं।
गच्छसि मग्गं विसोहिया,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३२॥

अबले जह भारवाहए,
मा मग्गे विसमऽवगाहिया।
पच्छा पच्छाणुतावए,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३३॥

तिण्णो हु सि अण्णवं महं,
किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ।
अभितुर पारं गमित्तए,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३४॥

अकलेवरसेणि उस्सिया,
सिद्धिं गोयम ! लोयं गच्छसि।
खेमं च सिवं अणुत्तरं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३५॥

बुद्ध परिनिव्वुडे चरे,
गामगए नगरे व संजए।
संतिमग्गं च बूहए,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३६॥

बुद्धस्स निसम्म भासियं,
सुकहियमट्ठपओवसोहियं।
रागं दोसं च छिंदिया,
सिद्धिगइं गए गोयमे ॥३७॥ त्ति बेमि।

॥ इति दुमपत्तयं समत्तं ॥१०॥

॥ अह बहुस्सुयपुज्जं णाम एगारसं अज्झयणं ॥

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो।
आयारं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ॥१॥
जे यावि होइ निव्विज्जे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
अभिक्खणं उल्लवइ, अविणीए अबहुस्सुए ॥२॥
अह पंचहिं ठाणेहिं जेहिं सिक्खा न लब्भई।
थम्भा कोहा[१] पमाएणं, रोगेणालस्सएण य ॥३॥
अह अट्ठहिं ठाणेहिं सिक्खासीलि त्ति वुच्चइ।
अहस्सिरे सया दन्ते न य मम्ममुदाहरे ॥४॥
नासीले न विसीले, न सिया अइलोलुए।
अकोहणे सच्चरए सिक्खासीलि त्ति वुच्चइ ॥५॥
अह चोद्दसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणे उ संजए।
अविणीए वुच्चई सो उ, निव्वाणं च न गच्छइ ॥६॥
अभिक्खणं कोही हवइ, पबन्धं च पकुव्वई।
मेत्तिज्जमाणो वमइ, सुयं लद्धूण मज्जई ॥७॥
अवि पावपरिक्खेवी, अवि मित्तेसु कुप्पइ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावयं ॥८॥
पइण्णवाई दुहिले, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अचियत्ते, अविणीए त्ति वुच्चइ ॥९॥
अह पन्नरसहिं ठाणेहिं, सुविणीए त्ति वुच्चइ।
नीयावत्ती अचवले अमाई अकुऊहले ॥१०॥
अप्पं च अहिक्खिवइ, पबन्धं च न कुव्वइ।
मेत्तिज्जमाणो भयइ, सुयं लद्धुं न मज्जइ ॥११॥

---

१ मोहा।

न य पावपरिक्खेवी, न य मित्तेसु कुप्पइ।
अप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासइ ॥१२॥
कलहडमरवज्जए, बुद्धे अभिजाइगे।
हिरिमं पडिसंलीणे, सुविणीए त्ति वुच्चइ ॥१३॥
वसे गुरुकुले निच्चं, जोगवं उवहाणवं।
पियंकरे पियंवाई, से सिक्खं लद्धुमरिहइ ॥१४॥
जहा संखम्मि पयं, निहियं दुहओ वि विरायइ।
एवं बहुस्सुए भिक्खू, धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥१५॥
जहा से कम्बोयाणं, आइण्णे कन्थए सिया।
आसे जवेण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१६॥
जहाइण्णसमारूढे, सूरे दढपरक्कमे।
उभओ नन्दिघोसेणं, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१७॥
जहा करेणुपरिकिण्णे, कुंजरे सट्ठिहायणे।
बलवन्ते अप्पडिहए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१८॥
जहा से तिक्खसिंगे, जायखन्धे विरायइ।
वसहे जूहाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१९॥
जहा से तिक्खदाढे, उदग्गे दुप्पहंसए।
सीहे मियाण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२०॥
जहा से वासुदेवे, संखचक्कगयाधरे।
अप्पडिहयबले जोहे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२१॥
जहा से चाउरन्ते, चक्कवट्टी महिड्ढिए।
चोद्दसरयणाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२२॥
जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरन्दरे।
सक्के देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२३॥
जहा से तिमिरविद्धंसे, उत्तिट्ठन्ते दिवायरे।
जलन्ते इव तेएण, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२४॥

जहा से उडुवई चन्दे, नक्खत्तपरिवारिए ।
पडिपुण्णे पुण्णमासिए, एव हवइ बहुस्सुए ॥२५॥
जहा से समाइयाण, कोट्ठागारे सुरक्खिए ।
नाणाधन्नपडिपुण्णे, एव हवइ बहुस्सुए ॥२६॥
जहा सा दुमाण पवरा, जबू नाम सुदंसणा ।
अणाढियस्स देवस्स, एव हवइ बहुस्सुए ॥२७॥
जहा सा नईण पवरा, सलिला सागरगमा ।
सीया नीलवन्तपवहा, एव हवइ बहुस्सुए ॥२८॥
जहा से नगाण पवरे, सुमहं म दरे गिरी ।
नाणोसहिपज्जलिए, एव हवइ बहुस्सुए ॥२९॥
जहा से सयंभुरमणे, उदही अक्खओदए ।
नाणारयणपडिपुण्णे एव हवइ बहुस्सुए ॥३०॥
समुद्दगभीरसमा दुरासया
अचक्किया केणइ दुप्पहसया ।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो,
खवित्तु कम्म गइमुत्तम गया ॥३१॥

तम्हा सुयमहिट्ठिज्जा, उत्तमट्ठगवेसए ।
जेणप्पाण पर चेव, सिद्धिं सपाउणेज्जासि ॥३२॥ त्ति बेमि

॥ बहुस्सुयपुज्ज समत्त ॥११॥

॥ अह हरिएसिज्ज बारह अज्झयण ॥

सोवागकुलसभूओ, गुणुत्तरधरो मुणी ।
हरिएसबलो नाम आसी भिक्खू जिइन्दिओ ॥१॥
हरिएसणभासाए, उच्चारसमिईसु य ।
जओ आयाणनिक्खेवे, सजओ सुसमाहिओ ॥२॥

मणगुत्तो, वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
भिक्खट्ठा बम्भइज्जम्मि, जन्नवाडमुवट्ठिओ ॥३॥
तं पासिऊण एज्जन्तं, तवेण परिसोसियं ।
पन्तोवहिउवगरणं, उवहसन्ति अणारिया ॥४॥
जाइमयपडिथद्धा, हिंसगा अजिइन्दिया ।
अबम्भचारिणो बाला, इमं वयणमब्बवी ॥५॥

कयरे आगच्छइ दित्तरूवे ?
काले विगराले फोक्कनासे ।
ओमचेलए पंसुपिसायभूए,
संकरदूसं परिहरिय कण्ठे ॥६॥
कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे ?
काए व आसा इहमागओसि ?
ओमचेलगा पंसुपिसायभूया,
गच्छ क्खलाहि किमिह ठिओ सि ॥७॥
जक्खो तहिं तिन्दुयरुक्खवासी,
अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स ।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं,
इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥८॥
समणो अहं संजओ, बम्भयारी,
विरओ धणपयणपरिग्गहाओ ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले,
अन्नस्स अट्ठा इहमागओमि ॥९॥
वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ य,
अन्नं पभूयं भवयाणमेयं ।
जाणाहि मे जायणजीविणु त्ति,
सेसावसेसं लहउ तवस्सी ॥१०॥

उवक्खड भोयण माहणाणं,
अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं,
दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ॥११॥
थलेसु बीयाइं ववन्ति कासगा,
तहेव निन्नेसु य आससाए ।
एयाए सद्धाए दलाह मज्झं,
आराहए पुण्णमिणं खु खित्तं ॥१२॥
खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए,
जहिं पकिण्णा विरुहन्ति पुण्णा ।
जे माहणा जाइविज्जोववेया,
ताइं तु खित्ताइं सुपेसलाइं ॥१३॥
कोहो य माणो य वहो य जेसिं,
मोसं अदत्तं च परिग्गहं च ।
ते माहणा जाइविज्जाविहीणा,
ताइं तु खित्ताइं सुपावयाइं ॥१४॥
तुब्भेत्थ भो भारधरा गिराणं,
अट्ठं न जाणेह अहिज्ज वेए ।
उच्चावयाइं मुणिणो चरन्ति,
ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥१५॥
अज्झावयाणं पडिकूलभासी,
पभाससे किं तु सगासि अम्हं ।
अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं,
न य णं दाहामु तुमं नियण्ठा ! ॥१६॥
समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स,
गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स ।

जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं,
किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ॥१७॥
के एत्थ खत्ता उवजोइया वा,
अज्झावया वा सह खण्डिएहिं ।
एयं तु दण्डेण फलेण हन्ता,
कण्ठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ॥१८॥
अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता,
उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव
समागया तं इसि तालयन्ति ॥१९॥
रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया,
भद्द त्ति नामेण अणिन्दियङ्गी ।
तं पासिया संजयहम्ममाणं,
कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥२०॥
देवाभिओगेण निओइएणं,
दिन्ना मु रन्ना मणसा न झाया ।
नरिन्ददेविन्दभिवन्दिएणं,
जेणम्हि वन्ता इसिणा स एसो ॥२१॥
एसो हु सो उग्गतवो महप्पा,
जिइन्दिओ संजओ बम्भयारी ।
जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणिं,
पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥२२॥
महाजसो एस महाणुभागो,
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।

मा एयं हीलह अहीलणिज्जं
　　मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥२३॥
एयाइं तीसे वयणाइं सोच्चा,
　　पत्तीइ भद्दाइ सुहासियाइं।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए,
　　जक्खा कुमारे विणिवाडयन्ति ॥२४॥
ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्खे,
　　असुरा तहिं तं जणं तालयन्ति।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते,
　　पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥२५॥
गिरिं नहेहिं खणह,
　　अयं दन्तेहिं खायह।
जायतेयं पाएहिं हणह,
　　जे भिक्खुं अवमन्नह ॥२६॥
आसीविसो उग्गतवो महेसी,
　　घोरव्वओ घोरपरक्कमो य।
अगणिं व पक्खन्द पयंगसेणा,
　　जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥२७॥
सीसेण एयं सरणं उवेह,
　　समागया सव्वजणेण तुब्भे।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा,
　　लोगं पि एसो कुविओ डहेज्जा ॥२८॥
अवहेडियपिट्ठिसउत्तमंगे,
　　पसारिया बाहु अकम्मचेट्ठे।
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमन्ते,
　　उड्ढंमुहे निग्गयजीहनेत्ते ॥२९॥

ते पासिया खण्डिय कट्ठभूए,
विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
इसिं पसाएइ सभारियाओ,
हीलं च निन्दं च खमाह भन्ते ! ॥३०॥
बालेहि मूढेहि अयाणएहिं,
जं हीलिया तस्स खमाह भन्ते !
महप्पसाया इसिणो हवन्ति,
न हु मुणी कोवपरा हवन्ति ॥३१॥
पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च,
मणप्पओसो न मे अत्थि कोइ ।
जक्खा हु वेयावडियं करेन्ति,
तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥३२॥
अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा,
तुब्भे न वि कुप्पह भूइपन्ना ।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो
समागया सव्वजणेण अम्हे ॥३३॥
अच्चेमु ते महाभाग
न ते किंचि न अच्चिमो ।
भुंजाहि सालिमं कूरं,
नाणा-वंजण-संजुयं ॥३४॥
इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं
तं भुंजसु अम्ह अणुग्गहट्ठा ।
बाढं ति पडिच्छइ भत्तपाणं,
मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥३५॥
तहियं गन्धोदयपुप्फवासं,
दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा ।

पइयाओ दुंदुहीओ सुरेहिं,
आगासे अहो दाण च घुट्ठं ॥३६॥
सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो,
न दीसइ जाइविसेस कोई।
सोवागपुत्त हरिएससाहुं,
जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा ॥३७॥
किं माहणा जोइसमारभन्ता,
उदएण सोहिं बहिया विमग्गह।
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं,
न तं सुदिट्ठं कुसला वयन्ति ॥३८॥
कुसं च जूवं तणकट्ठमग्गिं,
सायं च पायं उदगं फुसन्ता।
पाणाइ भूयाइं विहेडयन्ता,
भुज्जो वि मन्दा पगरेह पावं ॥३९॥
कहं चरे भिक्खु ! वयं जयामो,
पावाइ कम्माइ पुणोल्लयामो।
अक्खाहि णे संजय ! जक्खपूइया,
कहं सुजट्ठं कुसला वयन्ति ॥४०॥
छज्जीवकाए असमारभन्ता,
मोसं अदत्तं च असेवमाणा।
परिग्गहं इत्थिओ माणमायं,
एयं परिन्नाय चरंति दन्ता ॥४१॥
सुसंवुडा पंचहिं संवरेहिं,
इह जीवियं अणवकंखमाणा।
वोसट्ठकाया सुइचत्तदेहा,
महाजयं जयइ जन्नसिट्ठं ॥४२॥

के ते जोई के व ते जोइठाणे ?
कासं सुया किं व ते कारिसंगं ?
एहा य ते कयरा संति भिक्खू ?
कयरेण होमेण हुणासि जोइं ? ॥४३॥

तवो जोई जीवो जोइठाणं,
जोगा सुया सरीरं कारिसंगं ।
कम्मेहा संजमजोगसंती,
होमं हुणामि इसिणं पसत्थं ॥४४॥

के ते हरए के य ते संतितित्थे ?
कहिं सिणाओ व रयं जहासि ?
आइक्ख णे संजय ! जक्खपूइया,
इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥४५॥

धम्मे हरए बंभे संतितित्थे,
अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।
जहिं सिणाओ विमलो विसुद्धो,
सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥४६॥

एयं सिणाणं कुसलेहिं दिट्ठं,
महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।
जहिं सिणाया विमला विसुद्धा,
महारिसी उत्तमं ठाणं पत्त ॥४७॥ त्ति बेमि

॥ हरिएसिज्जं समत्तं ॥१२॥

॥ अह चित्तसम्भूइज्जं तेरहमं अज्झयणं ॥

जाईपराजिओ खलु, कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि
चुलणीए बंभदत्तो उववन्नो पउमगुम्माओ ॥१॥

कम्पिल्ले सम्भूओ, चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि ।
सेट्ठिकुलम्मि विसाले, धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥२॥
कम्पिल्लम्मि य नयरे, समागया दो वि चित्तसम्भूया ।
सुहदुक्खफलविवागं कहेन्ति ते एक्कमेक्कस्स ॥३॥
चक्कवट्टी महिड्ढीओ, बम्भदत्तो महायसो ।
भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमब्बवी ॥४॥
आसीमु भायरा दोवि, अन्नमन्नवसाणुगा ।
अन्नमन्नमणुरत्ता, अन्नमन्नहिएसिणो ॥५॥
दासा दसण्णे आसी, मिया कालिंजरे नगे ।
हंसा मयगतीराए, सोवागा कासिभूमिए ॥६॥
देवा य देवलोगम्मि, आसि अम्हे महिड्ढिया ।
इमा नो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ॥७॥
कम्मा नियाणपयडा, तुमे राय ! विचिन्तिया ।
तेसिं फलविवागेण, विप्पओगमुवागया ॥८॥
सच्चसोयप्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा ।
ते अज्ज परिभुंजामो , किं नु चित्ते वि से तहा ? ॥९॥

सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं,
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं,
आया ममं पुण्णफलोववेए ॥१०॥
जाणाहि सम्भूय ! महाणुभागं,
महिड्ढियं पुण्णफलोववेयं ।
चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं,
इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया ॥११॥
महत्थरूवा वयणप्पभूया
गाहाणुगीया नरसंघमज्झे ।

जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया,
इह जयन्ते समणो मि जाओ ॥१२॥
उच्चोदए महु कक्के य बम्भे,
पवेइया आवसहा य रम्मा ।
इमं गिहं चित्तधणप्पभूयं,
पसाहि पञ्चालगुणोववेयं ॥१३॥
नट्टेहि गीएहि य वाइएहिं,
नारीजणाइं परिवारयन्तो ।
भुञ्जाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू !
मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥१४॥
तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं,
नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं ।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही,
चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था ॥१५॥
सव्वं विलवियं गीयं,
सव्वं नट्टं विडम्बियं ।
सव्वे आभरणा भारा,
सव्वे कामा दुहावहा ॥१६॥
बालाभिरामेसु दुहावहेसु,
न तं सुहं कामगुणेसु राय !
विरत्तकामाण तवोधणाणं,
जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥१७॥
नरिंद ! जाई अहमा नराणं,
सोवागजाई दुहओ गयाणं ।
जहिं वयं सव्वजणस्स वेस्सा,
वसीय सोवागनिवेसणेसु ॥१८॥

तीसे य जाईइ उ पावियाए,
बुच्छामु सोवागनिवेसणेसु ।
सव्वस्स लोगस्स दुगछणिज्जा,
इहं तु कम्माइ पुरे कडाइ ॥१६॥
सो दाणिसिं राय ! महाणुभागो,
महिड्ढिओ पुण्णफलोववेओ।
चइत्तु भोगाइ असासयाइ,
आदाणहेउं अभिणिक्खमाहि ॥२०॥
इह जीविए राय ! असासयम्मि,
धणियं तु पुण्णाइ अकुव्वमाणो ।
से सोयइ मच्चुमुहोवणीए,
धम्मं अकाऊण परंसि लोए ॥२१॥
जहेह सीहो व मियं गहाय,
मच्चू नरं नेइ हु अन्तकाले ।
न तस्स माया व पिया व भाया,
कालम्मि तम्मंसहरा भवन्ति ॥२२॥
न तस्स दुक्खं विभयन्ति नाइओ,
न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा ।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं,
कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं ॥२३॥
चिच्चा दुपयं च चउप्पयं च,
खेत्तं गिहं धणधन्नं च सव्वं ।
सकम्मबीओ अवसो पयाइ,
परं भवं सुंदरपावगं वा ॥२४॥
त एक्कग तुच्छसरीरगं से,
चिईगयं दहिय उ पावगेणं ।

भज्जा य पुत्तावि य नायओ य,
दायारमन्नं अणुसंकमन्ति ॥२५॥
उवणिज्जई जीवियमप्पमायं,
वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं।
पंचालराया ! वयणं सुणाहि,
मा कासि कम्माइं महालयाइं ॥२६॥
अहं पि जाणामि जहेह साहू,
जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं।
भोगा इमे संगकरा हवंति,
जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ॥२७॥
हत्थिणपुरम्मि चित्ता,
दट्ठूण नरवइं महिड्ढियं।
कामभोगेसु गिद्धेणं,
नियाणमसुहं कडं ॥२८॥
तस्स मे अपडिकंतस्स,
इमं एयारिसं फलं।
जाणमाणो वि जं धम्मं,
कामभोगेसु मुच्छिओ ॥२९॥
नागो जहा पंकजलावसन्नो,
दट्ठुं थलं नाभिसमेइ तीरं।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा,
न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥३०॥
अच्चेइ कालो तूरंति राइओ,
न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा।
उविच्च भोगा पुरिसं चयंति,
दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥३१॥

जइ त सि भोगे चइउं असत्तो,
अज्जाइ कम्माइ करेहि राय !
धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकम्पी,
तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥३२॥
न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी,
गिद्धो सि आरम्भपरिग्गहेसु !
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो,
गच्छामि राय ! आमन्तिओसि ॥३३॥
पचालराया वि य बम्भदत्तो,
साहुस्स तस्स वयणं अकाउं ।
अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे,
अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥३४॥
चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो,
उदग्गचारित्ततवो महेसी ।
अणुत्तरं संजमं पालइत्ता,
अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥३५॥ त्ति बेमि

॥ चित्तसम्भूइज्जं समत्तं ॥

॥ अह उसुयारिज्जं चोद्दहमं अज्झयणं ॥

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मि,
केइ चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे,
खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥१॥
सकम्मसेसेण पुराकएणं,
कुलेसुदग्गेसु य ते पसूया ।

निविण्णसंसारभया जहाय,
जिणिंदमग्गं सरणं पवन्ना ॥२॥
पुमत्तमागम्म कुमार दो वि,
पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहोसुयारो,
रायत्थ देवी कमलावई य ॥३॥
जाईजरामच्चुभयाभिभूया,
बहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
संसारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा,
दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥४॥
पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स,
सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं,
तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ॥५॥
ते कामभोगेसु असज्जमाणा,
माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा,
तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥६॥
असासयं दट्ठु इमं विहारं,
बहुअन्तरायं न य दीहमाउं ।
तम्हा गिहंसि न रइं लहामो,
आमन्तयामो चरिस्सामु मोणं ॥७॥
अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं,
तवस्स वाघायकरं वयासी ।
इमं वयं वेयविओ वयन्ति,
जहा न होई असुयाण लोगो ॥८

अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे,
पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं
आरण्णगा होह मुणी पसत्था ॥९॥
सोयग्गिणा आयगुणिन्धणेणं,
मोहाणिला पज्जलणाहिएणं।
संतत्तभावं परितप्पमाणं,
लालप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥१०॥
पुरोहियं तं कमसोऽणुणन्तं,
निमंतयन्तं च सुए धणेणं।
जहक्कमं कामगुणेहि चेव,
कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥११॥
वेया अहीया न भवन्ति ताणं,
भुत्ता दिया निन्ति तमं तमेणं।
जाया य पुत्ता न हवन्ति ताणं,
को णाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ॥१२॥
खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा,
पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया,
खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥१३॥
परिव्वयन्ते अणियत्तकामे,
अहो य राओ परितप्पमाणे।
अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे,
पप्पोति मच्चु पुरिसे जरं च ॥१४॥
इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि,
इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं।

तं एवमेवं लालप्पमाणं,
हरा हरंति त्ति कहं पमाओ ॥१५॥
धणं पभूयं, सह इत्थियाहिं,
सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
तवं कए तप्पइ जस्स लोगो,
तं सव्वसाहीणमिहेव तुब्भं ॥१६॥
धणेण किं धम्मधुराहिगारे,
सयणेण वा कामगुणेहि चेव ।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी,
बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं ॥१७॥
जहा य अग्गी अरणी असन्तो,
खीरे घयं तेल्लमहातिलेसु ।
एमेव जाया सरीरंसि सत्ता,
समुच्छई नासइ नावचिट्ठे ॥१८॥
नो इन्दियग्गेज्झ अमुत्तभावा,
अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
अज्झत्थहेउं निययस्स बन्धो,
संसारहेउं च वयन्ति बन्धं ॥१९॥
जहा वयं धम्ममजाणमाणा,
पावं पुरा कम्ममकासि मोहा ।
ओरुज्झमाणा परिरक्खयन्ता,
तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥२०॥
अब्भाहयम्मि लोगम्मि,
सव्वओ परियारिए ।
पडन्तीहिं,
गिहंसि न रइं लभे ॥२१

केण अब्भाहओ लोगो ?
केण वा परिवारिओ ?
का वा अमोहा वुत्ता ?
जाया चिन्तावरो हुमि ॥२२॥

मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो,
जराए परिवारिओ ।
अमोहा रयणी वुत्ता,
एवं ताय ! वियाणह ॥२३॥

जा जा वच्चइ रयणी,
न सा पडिनियत्तइ ।
अहम्मं कुणमाणस्स,
अफला जन्ति राइओ ॥२४॥

जा जा वच्चइ रयणी,
न सा पडिनियत्तइ ।
धम्मं च कुणमाणस्स,
सफला जन्ति राइओ ॥२५॥

एगओ संवसित्ताणं,
दुहओ सम्मत्तसंजुया ।
पच्छा जाया गमिस्सामो,
भिक्खमाणा कुले कुले ॥२६॥

जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं,
जस्स वऽत्थि पलायणं ।
जो जाणे न मरिस्सामि,
सो हु कंखे सुए सिया ॥२७॥

अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो,
जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो ।

अणागयं नेव य अत्थि किंचि,
सद्धाखमं णो विणइत्तु रागं ॥२८॥
पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो
वासिट्ठि ! भिक्खायरियाइ कालो ।
साहाहि रुक्खो लहए समाहिं,
छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं ॥२९॥
पंखाविहूणो व्व जहेव पक्खी,
भिच्चविहूणो व्व रणे नरिन्दो ।
विवन्नसारो वणिओ व्व पोए,
पहीणपुत्तो मि तहा अहंपि ॥३०॥
सुसंभिया कामगुणे इमे ते,
संपिण्डिया अग्गरसप्पभूया ।
भुंजामु ता कामगुणे पगामं,
पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्गं ॥३१॥
भुत्ता रसा भोइ ! जहाइ णे वओ,
न जीवियट्ठा पजहामि भोए ।
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं ।
संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ॥३२॥
मा हू तुमं सोयरियाण सम्भरे,
जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी ।
भुंजाहि भोगाइ मए समाणं,
दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ॥३३॥
जहा य भोई तणुयं भुयंगो,
निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो ।
एमेए जाया पयहन्ति भोए,
ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्को ? ॥३४॥

छिन्दित्तु जालं अबलं व रोहिया,
मच्छा जहा कामगुणे पहाए।
धोरेयसीला तवसा उदारा,
धीरा हु भिक्खाचरियं चरन्ति ॥३५॥
नहेव कुंचा समइक्कमन्ता
तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा।
पलेन्ति पुत्ता य पई य मज्झ,
ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्का ? ॥३६॥
पुरोहियं तं ससुयं सदारं,
सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए।
कुडुम्बसारं विउलुत्तमं च,
रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥३७॥
वन्तासी पुरिसो राय !
न सो होई पसंसिओ ।
माहणेण परिच्चत्तं,
धणं आदाउमिच्छसि ॥३८॥
सव्वं जगं जइ तुहं,
सव्वं वावि धणं भवे ।
सव्वं पि ते अपज्जत्तं,
नेव ताणाय तं तव ॥३९॥
मरिहिसि राय ! जया तया वा,
मणोरमे कामगुणे पहाय ।
एक्को हु धम्मो नरदेव ! ताणं,
न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ॥४०॥
नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा
सन्ताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं ।

अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा,
परिग्गहारम्भनियत्तदोसा ॥४१॥
दवग्गिणा जहा रण्णे, डज्झमाणेसु जन्तुसु ।
अन्ने सत्ता पमोयन्ति रागद्दोसवसं गया ॥४२॥
एवमेव वय मूढा, कामभोगेसु मुच्छिया ।
डज्झमाणं न बुज्झामो, रागद्दोसग्गिणा जगं ॥४३॥
भोगे भोच्चा वमित्ता य लहुभूयविहारिणो ।
आमोयमाणा गच्छन्ति, दिया कामकमा इव ॥४४॥
इमे य बद्धा फन्दन्ति, मम हत्थऽज्जमागया ।
वयं च सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे ॥४५॥
सामिसं कुललं दिस्स, बज्झमाणं निरामिसं ।
आमिसं सव्वमुज्झित्ता, विहरिस्सामि निरामिसा ॥४६॥
गिद्धोवमा उ नच्चाणं, कामे संसारवड्ढणे ।
उरगो सुवण्णपासेव्व, संकमाणो तणुं चरे ॥४७॥
नागोव्व बन्धणं छित्ता, अप्पणो वसहिं वए ।
एयं पत्थं महारायं, उसुयारि त्ति मे सुयं ॥४८॥
चइत्ता विउलं रज्जं, कामभोगे य दुच्चए ।
निव्विसया निरामिसा, निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥४९॥
सम्मं धम्मं वियाणित्ता, चिच्चा कामगुणे वरे ।
तवं पगिज्झहक्खायं, घोरं घोरपरक्कमा ॥५०॥
एवं ते कमसो बुद्धा, सव्वे धम्मपरायणा ।
जम्ममच्चुभउव्विग्गा, दुक्खस्सन्तगवेसिणो ॥५१॥
सासणे विगयमोहाणं, पुव्विं भावणभाविया ।
अचिरेणेव कालेणं, दुक्खस्सन्तमुवागया ॥५२॥
राया माहणो य पुरोहिओ ।

॥ अह सभिक्खू पंचदह अज्झयणं ॥

मोणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं,
सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने।
संथवं जहिज्ज अकामकामे,
अन्नायएसी परिव्वए स भिक्खू॥१॥
राओवरयं चरेज्ज लाढे,
विरए वेयवियायरक्खिए।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी जे
कम्हिवि न मुच्छिए स भिक्खू॥२॥
अक्कोसवहं विइत्तु धीरे,
मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे,
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू॥३॥
पंतं सयणासणं भइत्ता,
सीउण्हं विविहं च दंसमसगं।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे,
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू॥४॥
नो [1]सक्कइमिच्छई न पूयं,
नो वि य वंदणगं कुओ पसंसं?
से संजए सुव्वए तवस्सी,
सहिए आयगवेसए स भिक्खू॥५॥
जेण पुण जहाइ जीवियं,
मोहं वा कसिणं नियच्छइ।

1 सक्कियं।

नरनारिं पजहे सया तवस्सी,
न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥६॥
छिन्नं सरं भोमअन्तलिक्खं,
सुमिणं लक्खणदण्डवत्थुविज्जं ।
अंगवियारं सरस्स विजयं,
जे विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू ॥७॥
मन्तं मूलं विविहं वेज्जचिन्तं,
वमणविरेयणधूमनेत्तसिणाणं ।
आउरे सरणं तिगिच्छियं च,
तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥८॥
खत्तियगणउग्गरायपुत्ता,
माहणभोइ य विविहा य सिप्पिणो ।
नो तेसिं वयइ सिलोगपूयं,
तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥९॥
गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा,
अप्पव्वइएण व संथुया हविज्जा ।
तेसिं इहलोइयफलट्ठा,
जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥१०॥
सयणासणपाणभोयणं,
विविहं खाइमसाइमं परेसिं ।
अदए पडिसेहिए नियण्ठे,
जे तत्थ न पउस्सइ स भिक्खू ॥११॥
जं किंचि आहारपाणगं,
विविहं खाइमसाइमं परेसिं लद्धुं ।

जो न तिविहेण नाणुकम्पे,
मणवयकायसुसंवुडे स भिक्खू ॥१२॥
आयामगं चेव जवोदगं च,
सीयं सोवीरजवोदगं च ।
नो हीलए पिण्ड नीरसं तु,
पन्तकुलाइं परिव्वए स भिक्खू ॥१३॥
सद्दा विविहा भवन्ति लोए,
दिव्वा माणुस्सगा तिरिच्छा ।
भीमा भयभेरवा उराला,
सोच्चा न विहिज्जइ स भिक्खू ॥१४॥
वादं विविहं समिच्च लोए,
सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी,
उवसन्ते अविहेडए स भिक्खू ॥१५॥
असिप्पजीवी अगिहे अमित्ते
जिइन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहुअप्पभक्खी,
चिच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥१६॥

॥ इअ सभिक्खुय समत्तं ॥ १५ ॥

॥ अह बम्भचेरसमाहिठाणा णाम सोलसमं अज्झयणं ॥

सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु
थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू
सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते
गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ?

इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरठाणा पन्नता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा तंजहा —

विवित्ताई सयणासणाई सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे। नो इत्थी पसुपण्डगसंसत्ताई सयणासणाई सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे ? आयरियाह-निग्गन्थस्स खलु इत्थिपसुपण्डगसंसत्ताई सयणासणाई सेवमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा नो इत्थिपसुपण्डगसंसत्ताई सयणासणाई सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे ॥ १

नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे ? आयरियाह-निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा नो इत्थीणं कहं कहेज्जा ॥२॥

नो इत्थीणं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे ? आयरियाह-निग्गन्थस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा,

उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गथे इत्थीहिं सद्धिं सनिसेज्जागए विहरेज्जा ॥३॥

नो इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ से निग्गन्थे। त कहमिति चे? आयरियाह निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं आलोएमाणस्स निज्झायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएज्जा निज्झाएज्जा ॥४॥

नो इत्थीणं कुड्डन्तरसि वा दूसन्तरसि वा भित्तन्तरसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कन्दियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणित्ता हवइ से निग्गन्थे। त कहमिति चे? आयरियाह निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं कुड्डन्तरसि वा दूसन्तरसि भित्तन्तरसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कन्दियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेदं वा लभेज्जा उम्माय वा पाउणिज्जा दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीणं कुड्डन्तरसि वा दूसन्तरसि भित्तन्तरसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कन्दियसद्दं वा सुणेमाणे विहरेज्जा ॥५॥

नो निग्गन्थे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ से

निग्गन्थे। त कहमिति चे? आयरियाह-निग्गन्थस्स खलु पुव्व रयं पुव्वकीलिय अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद व लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे पुव्वरय पुव्वकीलिय अणुसरेज्जा ॥६॥

नो पणीय आहार आहरित्ता हवइ से निग्गन्थे। त कहमिति चे? आयरियाह निग्गन्थस्स खलु पणीय आहार आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेद वा लभेज्जा उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे पणीय आहार आहारेज्जा ॥७॥

नो अइमायाए पाणभोयण आहारत्ता हवइ से निग्गन्थे। त कहमिति चे? आयरियाह-निग्गथस्स खलु अइमायाए पाणभोयण आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय व रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे अइमायाए पाणभोयण आहारेज्जा ॥८॥

नो विभूसाणुवाई हवइ से निग्गन्थे। त कहमिति चे? आयरियाह-विभूसावत्तिए विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ तओ ण इत्थिजणेण अभिलसिज्जमाणस्स बम्भ-

खेरे सका वा कसा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे विभूसाणुवाई हविज्जा ॥६॥

नो सद्दरुवरसगन्धफासाणुवाई हवइ से निग्गन्थे। त कहमिति चे? आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु सद्दरुवगन्धफासाणुवाईस्स बम्भचेरे सका वा कसा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाइ भवेज्जा। दसमे बम्भचेरसमाहिठाणे हवइ ॥१०॥

भवन्ति इत्थ सिलोगा तजहा—

ज विवित्तमणाइण्ण, रहिय इत्थिजणेण य।
बम्भचेरस्स रक्खट्ठा, आलय तु निसेवए ॥१॥
मणपल्हायजणणी, कामरागविवड्ढणी।
बम्भचेररओ भिक्खू, थीकह तु विवज्जए ॥२॥
सम च सथव थीहि, सकह च अभिक्खण।
बम्भचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥३॥
अंगपच्चगसठाण चारुल्लवियपेहिय।
बम्भचेररओ थीण, चक्खुगिज्झ विवज्जए ॥४॥
कुइय रुइय गीय, हसिय थणियकन्दिय।
बम्भचेररओ थीण, सोयगेज्झ विवज्जए ॥५॥
हास किड्ड रइ दप्प सहसावित्तासियाणि य।
बम्भचेररओ थीण, नाणुचिन्ते कयाइ वि ॥६॥

पणीय भत्तपाण तु खिप्प मयविवड्ढण ।
बम्भचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥७॥
धम्मलद्ध मिय काले जत्तत्थ पणिहाणव ।
नाइमत्त तु भुंजेज्जा, बम्भचेररओ सया ॥८॥
विभूस परिवज्जेज्जा, सरीरपरिमण्डण ।
बम्भचेररओ भिक्खू, सिंगारत्थ न धारए ॥९॥
सद्दे रूवे य गन्धे य रसे फासे तहेव य ।
पचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए ॥१०॥
आलओ थीजणाइण्णो, थीकहा य मणोरमा ।
सथवो चेव नारीण, तासि इन्दियदरिसण ॥११॥
कूइय रुइय गीय, हासभुत्तासियाणि य ।
पणीय भत्तपाण च, अइमाय पाणभोयण ॥१२॥
गत्तभूसणमिट्ठ च, कामभोगा य दुज्जया ।
नरस्सत्तगवेसिस्स, विस तालउड जहा ॥१३॥
दुज्जए कामभोगे य निच्चसो परिवज्जए ।
सकट्ठाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणव ॥१४॥
धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइम धम्मसारही ।
धम्मारामरते दन्ते, बम्भचेरसमाहिए ॥१५॥
देवदाणवगन्धव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा ।
बम्भयारिं नमसन्ति दुक्कर जे करन्ति त ॥१६॥
एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए ।
सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण, सिज्झिस्सन्ति तहावरे ॥१७॥

॥ बम्भचेरसमाहिठाणा समत्ता ॥

॥ अह पावसमणिज्ज सत्तदह अज्झयण ॥

जे केइ उ पव्वइए नियण्ठे,

सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं,
विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥१॥
सेज्जा दढा पाउरणं मि अत्थि,
उप्पज्जई भोत्तु तहेव पाउं।
जाणामि जं वट्टइ आउसु त्ति,
किं नाम काहामि सुएण भंते[1] ॥२॥
जे केई पव्वइए, निद्दासीले पगाममो।
भोच्चा पिच्चा सुहं सुवइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥३॥
आयरियउवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए।
ते चेव खिंसई बाले, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥४॥
आयरियउवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पइ।
अप्पडिपूयए थद्धे पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥५॥
सम्मद्दमाणे पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य।
असंजए संजयमन्नमाणे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥६॥
संथारं फलगं पीढं, निसेज्जं पायकम्बलं।
अप्पमज्जियमारुहइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥७॥
दवदवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खणं।
उल्लंघणे य चण्डे य, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥८॥
पडिलेहेइ पमत्ते, अवउज्झइ पायकम्बलं।
पडिलेहाअणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥९॥
पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु निसामिया।
गुरुं परिभावए निच्चं पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१०॥
बहुमाई पमुहरी, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अचियत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥११॥

[1] अवियत्त।

विवाद च उदीरेइ, अहम्मे अत्तपन्नहा ।
वुग्गहे कलहे रत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१२॥
अथिरासणे कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीयइ ।
आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१३॥
ससरक्खपाए सुवइ सेज्जं न पडिलेहइ ।
संथारए अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१४॥
दुद्धदहीविगईओ आहारेइ अभिक्खणं ।
अरए य तवोकम्मे पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१५॥
अत्थंतम्मि य सूरम्मि आहारेइ अभिक्खणं ।
चोइओ पडिचोएइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१६॥
आयरियपरिच्चाई परपासण्डसेवए ।
गाणंगणिए दुब्भूए, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१७॥
सयं गेहं परिच्चज्ज, परगेहंसि वावरे ।
निमित्तेण य ववहरइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१८॥
सन्नाइपिण्डं जेमेइ नेच्छई सामुदाणियं ।
गिहिनिसेज्जं च वाहेइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१९॥

एयारिसे पंचकुसीलसंवुडे,
रूवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे ।
अयंसि लोए विसमेव गरहिए
न से इह नेव परत्थ लोए ॥२०॥

जे वज्जए एए सया उ दोसे,
से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे ।
अयंसि लोए अमयं व पूइए,
आराहए लोगमिणं तहा परं ॥२१॥ त्ति बेमि ।

॥ पावसमणिज्जं समत्तं ॥१७॥

॥ अह संजइज्जं अट्ठारहमं अज्झयणं ॥

कम्पिल्ले नयरे राया, उदिण्णबलवाहणे ।
नामेण संजए नाम, मिगव्वं उवणिग्गए ॥१॥
हयाणीए गयाणीए, रहाणीए तहेव य ।
पायत्ताणीए महया, सव्वओ परिवारिए ॥२॥
मिए छुहित्ता हयगओ, कम्पिल्लुज्जाणकेसरे ।
भीए सन्ते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छिए ॥३॥
अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे ।
सज्झायज्झाणसंजुत्ते, धम्मज्झाणं झियायई ॥४॥
अप्फोवमण्डवम्मि, झायई क्खवियासवे ।
तस्सागए मिए पासं, वहेइ से नराहिवे ॥५॥
अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं ।
हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासई ॥६॥
अह राया तत्थ संभन्तो, अणगारो मणाहओ ।
मए उ मन्दपुण्णेणं, रसगिद्धेण घन्तुणा ॥७॥
आसं विसज्जइत्ताणं, अणगारस्स सो निवो ।
विणएण वन्दए पाए, भगवं ! एत्थ मे खमे ॥८॥
अह मोणेण सो भगवं, अणगारे झाणमस्सिए ।
रायाणं न पडिमन्तेइ, तओ राया भयद्दुओ ॥१०॥
संजओ अहमम्मीति, भगवं ! वाहराहि मे ।
कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज नरकोडिओ ॥१०॥
अभओ पत्थिवा ! तुब्भं, अभयदाया भवाहि य ।
अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं हिंसाए पसज्जसि ? ॥११॥
जया सव्वं परिच्चज्ज, गन्तव्वमवसस्स ते ।
अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं रज्जम्मि पसज्जसि ? ॥१२॥

जीविय चेव रूव च, [illegible]
जत्थ त मुज्झसि राय ! [illegible]
दाराणि य सुया चेव, [illegible]
जीवन्तमणुजीवन्ति मय [illegible]
नीहरति मय पुत्ता पियर [illegible]
पियरो वि तहा पुत्ते, [illegible] राय ! [illegible]
तओ तेणऽज्जिए [illegible]
कीलन्तिऽन्ने नरा राय ! [illegible]
तेणावि ज कय कम्म, सुह [illegible]
कम्मुणा तेण सजुत्तो, [illegible]
सोऊण तस्स सो धम्म [illegible]
महया सवेगनिव्वेय [illegible]
सजओ चइउ रज्ज, [illegible]
गद्दभालिस्स भगवओ, [illegible]
चिच्चा रट्ठ पव्वइए, [illegible]
जहा ते दीसइ रूव, [illegible]
किं नामे किं गोत्ते [illegible]
कह पडियरसि बुद्धे, [illegible]
सजओ नाम नामेण, [illegible]
गद्दभाली ममायरिया [illegible]
किरिय अकिरिय [illegible]
एएहि चउहिं ठाणेहिं, [illegible]
इइ पाउकरे बुद्धे [illegible]
विज्जाचरणसम्प [illegible]
पडन्ति नरए घोरे, [illegible]
[illegible] गइ [illegible]

मायावुइयमेय तु मुसा भासा निरत्थिया ।
संजममाणो वि अहं, वसामि इरियामि य ॥२६॥
सव्वेए विइया मज्झ, मिच्छादिट्ठी अणारिया ।
विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पगं ॥२७॥
अहमासि महापाणे, जुइमं वरिससओवमे ।
जा सा पालिमहापाली, दिव्वा वरिससओवमा ॥२८॥
से चुए बम्भलोगाओ, माणुस्सं भवमागए ।
अप्पणो य परेसिं च, आउं जाणे जहा तहा ॥२९॥
नाणारुइं च छन्दं च, परिवज्जेज्ज संजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था, इइ विज्जामणुसंचरे ॥३०॥
पडिक्कमामि पसिणाणं, परमंतेहिं वा पुणो ।
अहो उट्ठिए अहोरायं, इइ विज्जा तवं चरे ॥३१॥
जं च मे पुच्छसी काले, सम्मं सुद्धेण चेयसा ।
ताइं पाउकरे बुद्धे, तं नाणं जिणसासणे ॥३२॥
किरियं च रोयए धीरे, अकिरियं परिवज्जए ।
दिट्ठीए दिट्ठिसम्पन्ने, धम्मं चरसु दुच्चरं ॥३३॥
एयं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थधम्मोवसोहियं ।
भरहो वि भारहं वासं, चिच्चा कामाइ पव्वए ॥३४॥
सगरो वि सागरन्तं, भरहवासं नराहिवो ।
इस्सरियं केवलं हिच्चा, दयाइ परिनिव्वुडे ॥३५॥
चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
पव्वज्जमब्भुवगओ, मघवं नाम महाजसो ॥३६॥
सणंकुमारो मणुस्सिन्दो, चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
पुत्तं रज्जे ठवेऊणं, सो वि राया तवं चरे ॥३७॥
चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
सन्ती सन्तिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३८॥

इक्खागरायवसभो, कुन्थू नाम नरीसरो ।
विक्खायकित्ती भगवं, [1]पत्तो गइमणुत्तरं ॥३९॥
सागरन्तं चइत्ताणं, भरहं नरवरीसरो ।
अरो य अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४०॥
चइत्ता भारहं वासं, [2]चइत्ता बलवाहणं ।
चइत्ता उत्तमे भोए, महापउमे तवं चरे ॥४१॥
एगच्छत्तं पसाहित्ता, महिं माणनिसूरणो ।
हरिसेणो मणुस्सिन्दो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४२॥
अन्निओ रायसहस्सेहिं, सुपरिच्चाई दमं चरे ।
जयनामो जिणक्खायं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४३॥
दसण्णरज्जं मुदियं, चइत्ताणं मुणी चरे ।
दसण्णभद्दो निक्खन्तो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥४४॥
नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥४५॥
करकण्डू कलिंगेसु, पंचालेसु य दुम्मुहो ।
नमी राया विदेहेसु, गन्धारेसु य नग्गई ॥४६॥
एए नरिन्दवसभा, निक्खन्ता जिणसासणे ।
पुत्ते रज्जे ठवेऊणं, सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥४७॥
सोवीररायवसभो, चइत्ताण मुणी चरे ।
उद्दायणो पव्वइओ, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४८॥
तहेव कासिराया, सेओ सच्चपरक्कमे ।
कामभोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्ममहावणं ॥४९॥
तहेव विजओ राया, [3]अणट्ठाकित्ति पव्वए ।
रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महाजसो ॥५०॥

१ सुक्खंगओ अणुत्तरं । २ चक्कवट्टी महिड्ढिओ । ३ अणट्ठा० ।

तहेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
महब्बलो रायरिसी, अद्दाय सिरसा सिरिं ॥५१॥
कहं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व महिं चरे ?
एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ॥५२॥
अच्चन्तनियाणखमा, सच्चा मे भासिया वई ।
अतरिंसु तरन्तेगे, तरिस्सन्ति अणागया ॥५३॥
कहिं धीरे अहेऊहिं अत्ताणं परियावसे ।
सव्वसंगविनिम्मुक्के, सिद्धे भवइ नीरए ॥५४॥ त्ति बेमि ॥

॥ संजइज्जं समत्तं ॥ १८ ॥

॥ मियापुत्तीयं एगूणवीसइमं समत्तं ॥

सुग्गीवे नयरे रम्मे, काणणुज्जाणसोहिए ।
राया बलभद्दित्ति, मिया तस्सग्गमाहिसी ॥१॥
तेसिं पुत्ते बलसिरी, मियापुत्ते त्ति विस्सुए ।
अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ॥२॥
नन्दणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं ।
देवो दोगुन्दगो चेव, निच्चं मुइयमाणसो ॥३॥
मणिरयणकोट्टिमतले, पासायालोयणट्ठिओ ।
आलोएइ नगरस्स, चउक्कतियचच्चरे ॥४॥
अह तत्थ अइच्छन्तं, पासइ समणसंजयं ।
तवनियमसंजमधरं, सीलड्ढं गुणआगरं ॥५॥
तं पेहई मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
कहिं मन्नेरिसं रूवं, दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥ ॥
साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे ।
मोहं गयस्स सन्तस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ॥७॥

(देवलोगचुओ संतो माणुसं भवमागओ ।
सन्निनाणसमुप्पन्ने जाइं सरइ पुराणियं ॥)
जाईसरणे समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिड्ढिए ।
सरइ पोराणियं जाइं, सामण्णं च पुरा कयं ॥८॥
विसएहिं अरज्जंतो, रज्जंतो संजममि य ।
अम्मापियरमुवागम्म, इमं वयणमब्बवी ॥९॥
सुयाणि मे पंच महव्वयाणि,
नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।
निव्विण्णकामो मि महण्णवाओ,
अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ! ॥१०॥
अम्मताय ! मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा ।
पच्छा कडुयविवागा, अणुबंधदुहावहा ॥११॥
इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभवं ।
असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥१२॥
असासए सरीरंमि, रइं नोवलभामहं ।
पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेणबुब्बुयसन्निभे ॥१३॥
माणुसत्ते असारंमि, वाहीरोगाण आलए ।
जरामरणघत्थंमि, खणंपि न रमामहं ॥१४॥
जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य ।
अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसन्ति जन्तुणो ॥१५॥
खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च, पुत्तदारं च बन्धवा ।
चइत्ताणं इमं देहं, गन्तव्वमवसस्स मे ॥१६॥
जहा किम्पागफलाणं, परिणामो न सुन्दरो ।
एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुन्दरो ॥१७॥
अद्धाणं जो महंतं तु अप्पाहेओ पवज्जइ ।
गच्छन्तो सो दुही होइ, छुहातण्हाए पीडिओ ॥१८॥

एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छन्तो सो दुही होइ, वाहीरोगेहिं पीडिओ ॥१९॥
अद्धाणं जो महंतं तु, सपाहेओ पवज्जइ ।
गच्छन्तो सो सुही होइ, छुहातण्हाविवज्जिओ ॥२०॥
एवं धम्मं पि काऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छन्तो सो सुही होइ, अप्पकम्मे अवेयणे ॥२१॥
जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहू ।
सारभण्डाणि नीणेइ, असारं अवउज्झइ ॥२२॥
एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य ।
अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥२३॥
तं बिन्तऽम्मापियरो, सामण्णं पुत्त ! दुच्चरं ।
गुणाणं तु सहस्साइं, धारेयव्वाइं [1]भिक्खुणा ॥२४॥
समया सव्वभूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे ।
पाणाइवायविरई, जावज्जीवाए दुक्करं ॥२५॥
निच्चकालऽप्पमत्तेणं, मुसावायविवज्जणं ।
भासियव्वं हियं सच्चं, निच्चाउत्तेणं दुक्करं ॥२६॥
दन्तसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्जणं ।
अणवज्जेसणिज्जस्स, गिण्हणा अवि दुक्करं ॥२७॥
विरई अबम्भचेरस्स, कामभोगरसन्नुणा ।
उग्गं महव्वयं बम्भं, धारेयव्वं सुदुक्करं ॥२८॥
धणधन्नपेसवग्गेसु, परिग्गहविवज्जणं ।
सव्वारम्भपरिच्चाओ निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥२९॥
चउव्विहे वि आहारे, राईभोयणवज्जणा ।
सन्निहीसंचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्करं ॥३०॥

---

१ भिक्खुणो ।

छुहा तण्हा य सीउण्हं दंसमसगवेयणा ।
अक्कोसा दुक्खसेज्जा य, तणफासा जल्लमेव य ॥३१॥
तालणा तज्जणा चेव, वहबन्धपरीसहा ।
दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ॥३२॥
कावोया जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो ।
दुक्खं बम्भव्वयं घोरं, धारेउं य 'महप्पणो ॥३३॥
सुहोइओ तुमं पुत्ता, ' सुकुमालो सुमज्जिओ ।
न हुसि पभू तुमं पुत्ता, सामण्णमणुपालिया ' ॥३४॥
जावज्जीवमविस्सामो, गुणाणं तु महब्भरो ।
गुरुओ लोहभारुव्व, जो पुत्ता होइ दुव्वहो ॥३५॥
आगासे गंगसोउ व्व, पडिसोउ व्व दुत्तरो ।
बाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो गुणोदही । ३६॥
वालुया कवले चेव, निरस्साए उ संजमे ।
असिधारागमणं चेव, दुक्करं चरिउं तवो ॥३७॥
अहीवेगन्तदिट्ठीए, चरित्ते पुत्त ! दुक्करे ।
जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्करं ॥३८॥
जहा अग्गिसिहा दित्ता, पाउं होइ सुदुक्करा ।
तहा दुक्करं करेउं जे, तारुण्णे समणत्तणं ॥३९॥
जहा दुक्खं भरेउं जे, होइ वायस्स कोत्थलो ।
तहा दुक्खं करेउं जे, कीवेणं समणत्तणं ॥४०॥
जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करो मन्दरो गिरी ।
तहा निहुयनीसंकं, दुक्करं समणत्तणं ॥४१॥
जहा भुयाहिं तरिउं, दुक्करं रयणायरो ।
तहा अणुवसन्तेणं दुक्करं दमसागरो ॥४२॥

भुंज माणुस्सए भोगे, पंचलक्खणए तुमं ।
भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥४३॥

सो बेइ अम्मापियरो, एवमेयं जहा फुडं ।
इह लोए निप्पिवासस्स, नत्थि किंचिवि दुक्करं ॥४४॥

सारीरमाणसा चेव, वेयणाओ अनन्तसो ।
मए सोढाओ भीमाओ, असइं दुक्खभयाणि य ॥४५॥

जरामरणकन्तारे, चाउरन्ते भयागरे ।
मए सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ॥४६॥

जहा इहं अगणी उण्हो, एत्तोऽणन्तगुणो तहिं ।
नरएसु वेयणा उण्हा, अस्साया वेइया मए ॥४७॥

जहा इहं इमं सीयं, एत्तोऽणन्तगुणं तहिं ।
नरएसु वेयणा सीया, अस्साया वेइया मए ॥४८॥

कन्दन्तो कंदुकुम्भीसु, उड्ढपाओ अहोसिरे ।
हुयासणे जलन्तम्मि, पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥४९॥

महादवग्गिसंकासे, मरुम्मि वइरवालुए ।
कलम्बवालुयाए य, दड्ढपुव्वो अणन्तसो ॥५०॥

रसन्तो कंदुकुम्भीसु, उड्ढं बद्धो अबन्धवो ।
करवत्तकरकयाईहिं, छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥५१॥

अइतिक्खकण्टगाइण्णे, तुंगे सिम्बलिपायवे ।
खेवियं पासबद्धेणं, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥५२॥

महाजन्तेसु उच्छू वा, आरसन्तो सुभेरवं ।
पीलिओ मि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणन्तसो ॥५३॥

कूवन्तो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य ।
पाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरन्तो अणेगसो ॥५४॥

असीहि अयसिवण्णाहिं, भल्लेहिं पट्टिसेहि य ।
छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य, ¹ओइण्णो पावकम्मुणा ॥५५॥
अवसो लोहरहे जुत्तो, जलन्ते समिलाजुए ।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ ॥५६॥
हुयासणे जलन्तम्मि, चियासु महिसो विव ।
दड्ढो पक्को य अवसो पावकम्मेहि पाविओ ॥५७॥
बला संडासतुण्डेहिं, लोहतुण्डेहिं पक्खिहिं ।
विलुत्तो विलवन्तोऽहं, ढङ्कगिद्धेहिऽणन्तसो ॥५८॥
तण्हाकिलन्तो धावन्तो, पत्तो वेयरणिं नदिं ।
जलं पाहंति चिंतन्तो, खुरधाराहिं विवाइओ ॥५९॥
उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं ।
असिपत्तेहिं पडन्तेहिं, छिन्नपुव्वो अणेगसो ॥६०॥
मुग्गरेहिं मुसंढीहिं, सूलेहिं मुसलेहि य ।
गयासंभग्गगत्तेहिं, पत्तं दुक्खं अणन्तसो ॥६१॥
खुरेहिं तिक्खधाराहिं, छुरियाहिं कप्पणीहि य ।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो य अणेगसो ॥६२॥
पासेहिं कूडजालेहि, मिओ वा अवसो अहं ।
वाहिओ बद्धरुद्धो य, ²बहुसो चेव विवाइओ ॥६३॥
गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं ।
उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणन्तसो ॥६४॥
विदंसएहि जालेहि लेप्पाहिं सउणो विव ।
गहिओ लग्गो बद्धो य, मारिओ य अणन्तसो ॥६५॥
कुहाडफरसुमाईहि, वड्ढईहिं दुमो विव ।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो तच्छिओ य अणन्तसो ॥६६॥

१ उववन्नो । २ विवन्नो ।

चवेडमुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं, अय पिव ।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो, चुण्णिओ य अणन्तसो ॥६७॥
तत्ताइ तम्बलोहाइ, तउयाइ सीसयाणि य ।
पाइओ कलकलन्ताइ, आरसंतो सुभेरवं ॥६८॥
तुह पियाइ मसाइ, खण्डाइ सोल्लगाणि य ।
खाविओ मि समंसाइ, अग्गिवण्णाइऽणेगसो ॥६९॥
तुह पिया सुरा सीहू, मेरओ य महूणि य ।
पाइओ मि जलन्तीओ, वसाओ रुहिराणि य ॥७०॥
निच्च भीएण तत्थेण दुहिएण वहिएण य ।
परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेइया मए ॥७१॥
तिव्वचण्डप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा ।
महब्भयाओ भीमाओ, नरएसु वेइया मए ॥७२॥
जारिसा माणुसे लोए, ताया ! दीसन्ति वेयणा ।
एत्तो अणन्तगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ॥७३॥
सव्वभवेसु अस्साया, वेयणा वेइया मए ।
निमेसन्तरमित्तं पि, ज साता नत्थि वेयणा ॥७४॥
त बिन्तऽम्मापियरो, छन्देण पुत्त ! पव्वया ।
नवर पुण सामण्णे, दुक्ख निप्पडिकम्मया ॥७५॥
सो बेइ अम्मापियरो ! एवमेय जहा फुड ।
पडिकम्म को कुणइ, अरण्णे मियपक्खिणं ॥७६॥
एगभूए अरण्णे व जहा उ चरइ मिगे ।
एवं धम्मं चरिस्सामि संजमेण तवेण य ॥७७॥
जया मिगस्स आयंको महारण्णम्मि जायइ ।
अच्छंतं रुक्खमूलम्मि को ण ताहे तिगिच्छइ ॥७८॥
को वा से ओसहं देइ, को वा से पुच्छइ सुहं ?
को से भत्तं च पाणं वा, आहरित्तु पणामए ? ॥७९॥

जया से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं ।
भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि य ॥८०॥
खाइत्ता पाणियं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि य ।
मिगचारियं चरित्ताणं, गच्छइ मिगचारियं ॥८१॥
एवं समुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव ¹अणेगए ।
मिगचारियं चरित्ताणं, उड्ढं पक्कमइ दिसं ॥८२॥
जहा मिए एग अणेगचारी,
अणेगवासे धुवगोयरे य ।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे,
नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा ॥८३॥
मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता ! जहासुहं ।
अम्मापिऊहिंऽणुन्नाओ, जहाइ उवहिं तओ ॥८४॥
मियचारियं चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
तुब्भेहिं ²अब्भणुन्नाओ, गच्छ पुत्ता जहासुहं ॥८५॥
एवं सो अम्मापियरो अणुमाणित्ताण बहुविहं ।
ममत्तं छिन्दइ ताहे, महानागो व्व कंचुयं ॥८६॥
इड्ढी वित्तं च मित्ते य, पुत्तदारं च नायओ ।
रेणुयं व पडे लग्गं, निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥८७॥
पंचमहव्वयजुत्तो पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।
सब्भिन्तरबाहिरए तवोकम्मंमि उज्जुओ ॥८८॥
निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तगारवो ।
समो य सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥८९॥
लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा ।
समो निन्दापसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥९०॥

१ अणिएयणे । २ अम्म ! ऽणुन्नाओ

गारवेसु कसाएसु, दण्डसल्लभएसु य।
नियत्तो हाससोगाओ, अनियाणो अबन्धणो ॥९१॥
अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ।
वासीचन्दणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥९२॥
अप्पसत्थेहिं दारेहिं, सव्वओ पिहियासवे।
अज्झप्पज्झाणजोगेहिं, पसत्थदमसासणे ॥९३॥
एवं नाणेण चरणेण, दंसणेण तवेण य।
भावणाहिं य सुद्धाहिं, सम्मं भावित्तु अप्पयं ॥९४॥
बहुयाणि उ वासाणि सामण्णमणुपालिया।
मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥९५॥
एवं करन्ति संबुद्धा पण्डिया पवियक्खणा।
विणियट्टन्ति भोगेसु, मियापुत्ते जहारिसी ॥९६॥

महापभावस्स महाजसस्स,
मियाइपुत्तस्स निसम्म भासियं।
तवप्पहाणं चरियं च उत्तमं
गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुतं ॥९७॥
वियाणिया दुक्खविवद्धणं धणं,
ममत्तबन्धं च महाभयावहं।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं,
धारेज्ज निव्वाणगुणावहं महं ॥९८॥

॥मियापुत्तीय समत्तं ॥१९॥

॥अह महानियण्ठिज्जं वीसइमं अज्झयणं॥

सिद्धाण नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ।
अत्थधम्मगइं तच्चं अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥१॥

पभूयरयणो राया, सेणिओ मगहाहिवो ।
विहारजत्तं निज्जाओ, मण्डिकुच्छिंसि चेइए ॥२॥
नाणादुमलयाइण्णं, नाणापक्खिनिसेवियं ।
नाणाकुसुमसंछन्नं उज्जाणं नन्दणोवमं ॥३॥
तत्थ सो पासई साहुं संजयं सुसमाहियं ।
निसन्नं रुक्खमूलम्मि, सुकुमालं सुहोइयं ॥४॥
तस्स रूवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि संजए ।
अच्चन्तपरमो आसी, अउलो रूवविम्हओ ॥५॥
अहो वण्णो अहो रूवं, अहो अज्जस्स सोमया ।
अहो खन्ती अहो मुत्ती, अहो भोगे असंगया ॥६॥
तस्स पाए उ वन्दित्ता, काऊण य पयाहिणं ।
नाइदूरमणासन्ने, पंजली पडिपुच्छइ ॥७॥
तरुणो सि अज्जो [1] पव्वइओ भोगकालम्मि संजया ।
उवट्ठिओ सि सामण्णे एयमट्ठं सुणेमि ता ॥८॥
अणाहोमि महाराय, नाहो मज्झ न विज्जइ ।
अणुकम्पगं सुहिं वावि कंचि नाभिसमेमहं ॥९॥
तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो ।
एवं ते इड्ढिमन्तस्स, कहं [2] नाहो न विज्जइ ॥१०॥
होमि नाहो भयन्ताणं, भोगे भुंजाहि संजया ।
मित्तनाइपरिवुडो माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥११॥
अप्पणा वि अणाहो सि, सेणिया ! मगहाहिवा !
अप्पणा अणाहो सन्तो, कहं नाहो भविस्ससि ? ॥१२॥
एवं वुत्तो नरिन्दो सो, सुसंभन्तो सुविम्हिओ ।
वयणं अस्सुयपुव्वं, साहुणा विम्हयन्निओ ॥१३॥

---

१ माहि तुम मह । २ कस्स ।

अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अन्तेउरं च मे ।
भुंजामि माणुसे भोगे, आणा इस्सरियं च मे ॥१४॥
एरिसे सम्पयग्गम्मि, सव्वकामसमप्पिए ।
कहं अणाहो भवइ, मा हु भन्ते ! मुसं वए ॥१५॥
न तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा !
जहा अणाहो भवइ, सणाहो वा नराहिया ॥१६॥
सुणेह मे महाराय, अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
जहा अणाहो भवई, जहा मेअ पवत्तियं ॥१७॥
कोसम्बी नाम नयरी, पुराणपुरभेयणी ।
तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूयधणसंचओ ॥१८॥
पढमे वए महाराय, अउला मे अच्छिवेयणा ।
अहोत्था विउलो दाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा ॥१९॥
सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीरविवरन्तरे ।
[1]आवीलिज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छिवेयणा ॥२०॥
तियं मे अन्तरिच्छं च, उत्तमंगं च पीडइ ।
इन्दासणिसमा घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥२१॥
उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जामंततिगिच्छया ।
अधीया सत्थकुसला, मंतमूलविसारया ॥२२॥
ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति, चाउप्पायं जहाहियं ।
न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥२३॥
पिया मे सव्वसारंपि, दिज्जाहि मम कारणा ।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२४॥
माया य मे महाराय, पुत्तसोगदुहट्टिया ।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२५॥

---

1 पविसिज्ज ।

भायरो मे महाराय, सगाजेट्टकणिट्ठगा ।
न य दुक्खा विमोयन्ति, एसा मज्झ अणाहया ॥२६॥
भइणीओ मे महाराय, सगा जेट्ठकणिट्ठगा ।
न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥२७॥
भारिया मे महाराय, अणुरत्ता अणुव्वया ।
अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिंचइ ॥२८॥
अन्नं पाणं च ण्हाणं च, गन्धमल्लविलेवणं ।
मए नायमणाय वा, सा बाला नोवभुञ्जइ ॥२९॥
खणं पि मे महाराय, पासाओ वि न फिट्टइ ।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥३०॥
तओ हं एवमाहंसु, दुक्खमाहु पुणो पुणो ।
वेयणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणन्तए ॥३१॥
सइं च जइ मुच्चेज्जा, वेयणा विउला इओ ।
खन्तो दन्तो निरारम्भो, पव्वए अणगारियं ॥३२॥
एवं च चिन्तइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा ।
परियत्तन्तीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥३३॥
तओ कल्ले पभायम्मि, आपुच्छित्ताण बन्धवे ।
खन्तो दन्तो निरारम्भो, पव्वइओऽणगारियं ॥३४॥
ततो हं नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य ।
सव्वेसिं चेव भूयाणं, तसाणं थावराण य ॥३५॥
अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली ।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नन्दणं वणं ॥३६॥
अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥३७॥

इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा
तामेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।

सोच्चाण मेहावि ! सुभासियं इमं,
अणुसासणं नाणगुणोववेयं ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं,
महानियण्ठाण वए पहेणं ॥५१॥
चरित्तमायारगुणन्निए तओ,
अणुत्तरं संजम पालियाणं ।
निरासवे संखवियाण कम्मं,
उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥५२॥
एवुग्गदन्ते वि महातवोधणे,
महामुणी महापइन्ने महायसे ।
महानियण्ठिज्जमिणं महासुयं,
से काहए महया वित्थरेणं ॥५३॥
तुट्ठो य सेणिओ राया,
इणमुदाहु कयंजली ।
अणाहत्तं जहाभूयं,
सुट्ठु मे उवदंसियं ॥५४॥
तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं,
लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ।
तुब्भे सणाहा य सबन्धवा य,
जं भे ठिया मग्गि जिणुत्तमाणं ॥५५॥
तं सि नाहो अणाहाणं,
सव्वभूयाण संजया ।
खामेमि ते महाभाग,
इच्छामि अणुसासिउं ॥५६॥
पुच्छिऊण मए तुब्भं,
झाणविग्घो उ जो कओ ।

निमन्तिया य भोगेहिं,
तं सव्वं मरिसेहि मे ॥५७॥
एवं थुणित्ताण स रायसीहो,
अणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।
सओरोहो सपरियणो सबन्धवो,
धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥५८॥
ऊससियरोमकूवो,
काऊण य पयाहिणं ।
अभिवन्दिऊण सिरसा,
अइयाओ नराहिवो ॥५९॥
इयरो वि गुणसमिद्धो,
तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।
विहग इव विप्पमुक्को,
विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥६०॥ त्ति बेमि

॥ महानियण्ठिज्जं समत्तं ॥

॥ अह समुद्दपालीयं एगवीसइमं अज्झयणं ॥

चम्पाए पालिए नामं, सावए आसि वाणिए ।
महावीरस्स भगवओ सीसे सो उ महप्पणो ॥१॥
निग्गन्थे पावयणे, सावए से वि कोविए ।
पोएण ववहरन्ते, पिहुण्डं नगरमागए ॥२॥
पिहुण्डे ववहरन्तस्स, वाणिओ देइ धूयरं ।
तं ससत्तं पइगिज्झ, सदेसमह पत्थिओ ॥३॥
अह पालियस्स घरिणी, समुद्दम्मि पसवई ।
अह बालए तहिं जाए, समुद्दपालि त्ति नामए ॥४॥
खेमेण आगए चम्पं, सावए वाणिए घरं ।
संवड्ढई तस्स घरे, दारए से सुहोइए ॥५॥

बावत्तरी कलाओ य, सिक्खिए नीइकोविए।
जोव्वणेण य सपन्ने, सुरूवे पियदसणे ॥६॥
तस्स रूववइ भज्ज, पिया आणेइ रूविणिं।
पासाए कीलए रम्मे, देवो दोगुन्दओ जहा ॥७॥
अह अन्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ।
वज्झमण्डणसोभाग, वज्झ पासइ वज्झग ॥८॥
त पासिऊण सवेग[1], समुद्दपालो इणमब्बवी।
अहोऽसुहाण कम्माण, निज्जाण पावग इम ॥९॥
सबुद्धो सो तहिं भगव, परमसवेगमागओ।
आपुच्छऽम्मापियरो, पव्वए अणगारिय ॥१०॥

जहित्तु सग च महाकिलेस,
महन्तमोह कसिण भयावह।
परियायधम्म चऽभिरोयएज्जा,
वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥११॥

अहिंससच्च च अतेणग च,
तत्तो य बम्भ अपरिग्गह च।
पडिवज्जिया पचमहव्वयाणि,
चरिज्ज धम्म जिणदेसिय विऊ ॥१२॥

सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकम्पी,
खन्तिक्खमे सजयबम्भयारी।
सावज्जजोग परिवज्जयन्तो,
चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए ॥१३॥

कालेण काल विहरेज्ज रट्ठे
बलाबल जाणिय अप्पणो य।

1 सविग्गो।

सीहो व सद्देण न सतसेज्जा,
वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥१४॥
उवेहमाणो उ परिव्वइज्जा,
पियमप्पियं सव्व तितिक्खइज्जा।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोयइज्जा,
न यावि पूय गरह च सजए ॥१५॥
अणेगछन्दामिह माणवेहिं,
जे भावओ सपगरेइ भिक्खू।
भयभेरवा तत्थ उइन्ति भीमा,
दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥१६॥
परीसहा दुव्विसहा अणेगे,
सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू,
सगामसीसे इव नागराया ॥१७॥
सीओसिणा दसमसा य फासा,
आयका विविहा फुसन्ति देह।
अकुक्कुओ तत्थऽहियासहेज्जा,
रयाइ खेविज्ज पुरे कयाइ ॥१८॥
पहाय राग च तहेव दोस,
मोह च भिक्खू सयय वियक्खणो।
मेरुव्व वाएण अकम्पमाणो,
परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥१९॥
अणुन्नए नावणए महेसी,
न यावि पूय गरह च सजए।
स उज्जुभाव पडिवज्ज सजए,
निव्वाणमग्ग विरए उवेइ ॥२०॥

अरइरइसहे पहीणसंथवे,
विरए आयहिए पहाणव ।
परमट्ठपएहिं चिट्ठइ,
छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥२१॥
विवित्तलयणाइ भएज्ज ताइ
निरोवलेवाइ असंथडाइ ।
इसीहिं चिण्णाइ महायसेहिं,
कायेण फासेज्ज परीसहाइ ॥२२॥
सन्नाणनाणोवगए महेसी,
अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं ।
अणुत्तरे नाणधरे जसंसी,
ओभासई सूरिए वऽन्तलिक्खे ॥२३॥
दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं,
निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
तरित्ता समुद्दं व महाभवोहं,
समुद्दपाले अपुणागमं गए ॥२४॥ त्ति बेमि

॥ समुद्दपालिय समत्तं ॥

॥ अह रहनेमिज्जं बावीसइमं अज्झयणं ॥

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए ।
वसुदेवु त्ति नामेणं, रायलक्खणसंजुए ॥१॥
तस्स भज्जा दुवे आसी, रोहिणी देवई तहा ।
तासिं दोण्हं दुवे पुत्ता, इट्ठा रामकेसवा ॥२॥
सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए ।
समुद्दविजए नामं, रायलक्खणसंजुए ॥३॥

तस्स भज्जा सिवा नाम, तीसे पुत्तो महायसो ।
भगवं अरिट्ठनेमि त्ति, लोगनाहे दमीसरे ॥४॥
सोऽरिट्ठनेमिनामो उ लक्खणस्सरसंजुओ ।
अट्ठसहस्सलक्खणधरो, गोयमो कालगच्छवी ॥५॥
वज्जरिसहसंघयणो, समचउरंसो झसोयरो ।
तस्स रायमइकन्नं, भज्जं जायइ केसवो ॥६॥
अह सा रायवरकन्ना, सुसीला चारुपेहणी ।
सव्वलक्खणसंपन्ना, विज्जुसोयामणिप्पभा ॥७॥
अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्ढियं ।
इहागच्छउ कुमारो, जा से कन्नं दलामिऽहं ॥८॥
सव्वोसहीहिं ण्हविओ, कयकोउयमंगलो ।
दिव्वजुयलपरिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ ॥९॥
मत्तं च गंधहत्थिं, वासुदेवस्स जेट्ठगं ।
आरूढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणि जहा ॥१०॥
अह ऊसिएण छत्तेण चामराहि य सोहिए ।
दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥११॥
चउरंगिणीए सेणाए, रइयाए जहक्कमं ।
तुरियाण सन्निनाएण, दिव्वेण गगणं फुसे ॥१२॥
एयारिसाए इड्ढिए, जुत्तीए उत्तमाइ य ।
नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥१३॥
अह सो तत्थ निज्जंतो, दिस्स पाणे भयद्दुए ।
वाडेहिं पंजरेहि च, सन्निरुद्धे सुदुक्खिए ॥१४॥
जीवियंतं तु संपत्ते, मंसट्ठा भक्खियव्वए ।
पासित्ता से महापन्ने, सारहिं इणमब्बवी ॥१५॥
कस्स अट्ठा इमे पाणा एए सव्वे सुहेसिणो ।
वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धा य अच्छहिं ! ॥१६॥

धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो त जीवियकारणा ।
वन्त इच्छसि आवेउ, सेय ते मरण भवे ॥४२॥
अह च भोगरायस्स त च सि अन्धगवण्हिणो ।
मा कुले गधणा होमो, सजम निहुओ चर ॥४३॥
जइ त काहिसि भाव, जा जा दच्छसि नारिओ ।
वायाइद्धो व्व हढो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥४४॥
गोवालो भण्डवालो वा जहा तद्दव्वणिस्सरो ।
एव अणिस्सरो त पि सामण्णस्स भविस्ससि ॥४५॥
(कोह माण निगिण्हित्ता, माय लोभ च सव्वसो ।
इदियाइ वसे काउ, अप्पाण उवसहरे ॥)
तीसे सो वयण सोच्चा, सययाए सुभासिय ।
अकुसेण जहा नागो, धम्मे सपडिवाइओ ॥४६॥
मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइन्दिए ।
सामण्ण निचल फासे, जावज्जीव दढव्वओ ॥४७॥
उग्ग तव चरित्ताण, जाया दुण्णि वि केवली ।
सव्व कम्म खवित्ताण, सिद्धि पत्ता अणुत्तर ॥४८॥
एव करेन्ति सबुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु, जहा सो पुरिसोत्तमो ॥४९॥ त्ति बेमि

॥ रहनेमिज्ज समत्त ॥

॥ अह केसिगोयमिज्ज तेवीसइम अज्झयण ॥

जिणे पासित्ति नामेण, अरहा लोगपूइओ ।
सबुद्धप्पा य सव्वन्नू धम्मतित्थयरे जिणे ॥१॥

१ कोयविरमण । । सन्न नु सन्वदसीय, धम्मतित्थसदेस ।

तस्स लोगपईवस्स, आसि सीसे महायसे ।
केसी कुमारसमणे, विज्जाचरणपारगे ॥२॥
ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते सावत्थिं [1]पुरमागए ॥३॥
तिन्दुयं नाम उज्जाणं, तम्मि नगरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥४॥
अह तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे ।
भगवं वद्धमाणि त्ति, सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥५॥
तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे ।
भगवं गोयमे नाम , विज्जाचरणपारए ॥६॥
बारसंगविऊ बुद्धे, सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयंते, से वि सावत्थिमागए ॥७॥
कोट्ठगं नाम उज्जाणं, तम्मि नगरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥८॥
केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
उभओ वि तत्थ विहरिंसु अल्लीणा सुसमाहिया ॥९॥
उभओ सीससंघाणं, संजयाणं तवस्सिणं ।
तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना, गुणवंताण ताइणं ॥१०॥
केरिसो वा इमो धम्मो, इमो धम्मो व केरिसो ?
आयारधम्मपणिही, इमा वा सा व केरिसी ? ॥११॥
चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥१२॥
अचेलओ य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ? ॥१३॥

1 नगरिमागए ।

अह ते तत्थ सीसाणं, विन्नाय पवितक्कियं ।
समागमे कयमई उभओ केसिगोयमा ॥१४॥
गोयमे पडिरूवन्नू, सीससंघसमाउले ।
जेट्ठं कुलमवेक्खन्तो, तिन्दुयं वणमागओ ॥१५॥
केसी कुमारसमणे गोयमं दिस्समागयं ।
पडिरूवं पडिवत्तिं, सम्मं संपडिवज्जई ॥१६॥
पलालं फासुयं तत्थ, पंचमं कुसतणाणि य ।
गोयमस्स निसेज्जाए, खिप्पं संपणामए ॥१७॥
केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
उभओ निसण्णा सोहन्ति, चन्दसूरसमप्पभा ॥१८॥
समागया बहू तत्थ पासण्डा कोउगा मिया[1] ।
गिहत्थाणं अणेगाओ, साहस्सीओ समागया ॥१९॥
देवदाणवगन्धव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा ।
अदिस्साण य भूयाणं, आसी तत्थ समागमो ॥२०॥
पुच्छामि ते महाभाग ! केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥२१॥
पुच्छ भन्ते ! जहिच्छं ते, [2]केसिं गोयममब्बवी ।
तओ केसी अणुन्नाए, गोयमं इणमब्बवी ॥२२॥
चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥२३॥
एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ?
धम्मे दुविहे मेहावी कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥२४॥
तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ।
पन्ना समिक्खए धम्मं तत्तं तत्तविणिच्छियं ॥२५॥

1 मिगा । 2 गोयमो केसिम ब्बवी ।

पुरिमा उज्जुजडा उ, वंकजडा य पच्छिमा ।
मज्झिमा उज्जुपन्ना उ, तेण धम्मे दुहा कए ॥२६॥
पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ, चरिमाणं दुरणुपालओ ।
कप्पो मज्झिमगाणं तु, सुविसोज्झो सुपालओ ॥२७॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥२८॥
अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महाजसा ॥२९॥
एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ।
लिंगे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥३०॥
केसिमेवं बुवाणं तु, गोयमो इणमब्बवी ।
विन्नाणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छियं ॥३१॥
पच्चयत्थं च लोगस्स, नाणाविहविगप्पणं ।
जत्तत्थं गहणत्थं च, लोगे लिंगपओयणं ॥३२॥
अह भवे पइन्ना उ मोक्खसब्भूयसाहणा ।
नाणं च दंसणं चेव चरित्तं चेव निच्छए ॥३३॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥३४॥
अणेगाण सहस्साणं, मज्झे चिट्ठसि गोयमा !
ते य ते अभिगच्छंति, कहं ते निज्जिया तुमे ? ॥३५॥
एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस ।
दसहा उ जिणित्ताणं, सव्वसत्तू जिणामहं ॥३६॥
सत्तू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥३...
एगप्पा अजिए सत्तू कसाया इंदियाणि य
[illegible]नायं, विहरामि अहं मुणी ॥

साहु गोयम! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा॥३९॥
दीसन्ति बहवे लोए, पासबद्धा सरीरिणो।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं तं विहरसि मुणी?॥४०॥
ते पासे सव्वसो छित्ता, निहन्तूण उवायओ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, विहरामि अहं मुणी॥४१॥
पासा य इइ के वुत्ता? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी॥४२॥
रागद्दोसादओ तिव्वा, नेहपासा भयंकरा।
ते छिन्दित्ता जहानायं, विहरामि जहक्कमं॥४३॥
साहु गोयम! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा॥४४॥
अन्तोहिययसंभूया, लया चिट्ठइ गोयमा।
फलेइ विसभक्खीणि, सा उ उद्धरिया कहं?॥४५॥
तं लयं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलियं।
विहरामि जहानायं, मुक्को मि विसभक्खणं॥४६॥
लया य इइ का वुत्ता? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी॥४७॥
भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया।
तमुच्छित्ता[1] जहानायं, विहरामि जहासुहं॥४८॥
साहु गोयम! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा॥४९॥
संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा!
जे डहन्ति सरीरत्था, कहं विज्झाविया तुमे?॥५०॥

१ तमुच्छित्ता।

महामेहप्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तम ।
सिंचामि सयय तेउ, सित्ता नो य डहन्ति मे ॥५१॥
अग्गी य इइ के वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेव बुवन्त तु गोयमो इणमब्बवी ॥५२॥
कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुयसीलतवा जलं ।
सुयधाराभिहया सन्ता, भिन्ना हु न डहन्ति मे ॥५३॥
साहु गोयम पन्ना ते ! छिन्नो मे ससओ इमो ।
अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ! ॥५४॥
अय साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई ।
जसि गोयम ! आरूढो, कह तेण न हीरसि ? ॥५५॥
पधावन्त निगिण्हामि, सुयरस्सीसमाहिय ।
न मे गच्छइ उम्मग्ग मग्ग च पडिवज्जइ ॥ ५६॥
आसे य इइ के वुत्त ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेव बुवन्त तु, गोयमो इणमब्बवी ॥५७॥
मणो साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावइ ।
त सम्म तु निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कन्थग ॥५८॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।
अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥५९॥
कुप्पहा बहवो लोए, जेहिं नासन्ति जन्तुणो ।
अद्धाणे कह वट्टन्ते, त न नाससि गोयमा ? ॥६०॥
जे य मग्गेण गच्छन्ति, जे य उम्मग्गपट्ठिया ।
त सव्वे वेइया मज्झ, तो न नस्सामह मुणी ॥६१॥
मग्गे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।

कुप्पवयणपासंडी, सव्वे उम्मग्गपट्ठिया।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ॥६३॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥६४॥
महाउदगवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणिणं।
सरणं गई पइट्ठा य, दीवं कं मन्नसि मुणी ? ॥६५॥
अत्थि एगो महादीवो, वारिमज्झे महालओ।
महाउदगवेगस्स गई तत्थ न विज्जइ ॥६६॥
दीवे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥६७॥
जरामरणवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणिणं।
धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ॥६८॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥६९॥
अण्णवंसि महोहंसि, नावा विपरिधावइ।
जंसि गोयम ! आरूढो, कहं पारं गमिस्ससि ? ॥७०॥
जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी।
जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥७१॥
नावा य इइ का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥७२॥
सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ।
संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरंति महेसिणो ॥७३॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥७४॥
अंधयारे तमे घोरे, चिट्ठंति पाणिणो बहू।
को करिस्सइ उज्जोयं ? सव्वलोयंमि पाणिणं ॥७५॥

उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोयपभंकरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयम्मि पाणिणं ॥७८॥
भाणू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥७७॥
उग्गओ खीणसंसारो, सव्वन्नू जिणभक्खरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयम्मि पाणिणं ॥७८॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥७९॥
सारीरमाणसे दुक्खे बज्झमाणाण पाणिणं ।
खेमं सिवमणाबाहं, ठाणं किं मन्नसे मुणी ? ॥८०॥
अत्थि एगं धुवं ठाणं, लोगग्गम्मि दुरारुहं ।
जत्थ नत्थि जरा मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ॥८१॥
ठाणे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥८२॥
निव्वाणं ति अबाहं ति, सिद्धी लोगग्गमेव य ।
खेमं सिवं अणाबाहं, जं चरंति महेसिणो ॥८३॥
तं ठाणं सासयं वासं, लोयग्गम्मि दुरारुहं ।
जं संपत्ता न सोयंति, भवोहन्तकरा मुणी ॥८४॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
नमो ते संसयातीत ! सव्वसुत्तमहोयही ॥८५॥
एवं तु संसए छिन्ने ! केसी घोरपरक्कमे ।
अभिवंदित्ता सिरसा, गोयमं तु महायसं ॥८६॥
पंचमहव्वयधम्मं, पडिवज्जइ भावओ
पुरिमस्स पच्छिमम्मि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥८७॥
केसीगोयमओ निच्चं, तम्मि आसि समागमे ।
सुयसीलसमुक्करिसो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥८८॥

तोसिया परिसा सव्वा, सम्मग्गं समुवट्ठिया ।
संथुया ते पसीयंतु, भयवं केसिगोयमे ॥८९॥

॥ केसिगोयमिज्जं समत्तं ॥ २३ ॥

॥ अह समिईओ णाम चउवीसइमं अज्झयणं ॥

अट्ठ पवयणमायाओ समिई गुत्ती तहेव य ।
पंचेव य समिईओ, तओ गुत्तीउ आहिया ॥१॥
इरियाभासेसणादाणे, उच्चारे समिई इय ।
मणगुत्ती वयगुत्ती, कायगुत्ती य अट्ठमा ॥२॥
एयाओ अट्ठ समिईओ, समासेण वियाहिया ।
दुवालसंग जिणक्खायं, मायं जत्थ उ पवयणं ॥३॥
आलम्बणेण कालेण, मग्गेण जयणाइ य ।
चउकारणपरिसुद्धं, संजए इरियं रिए ॥४॥
तत्थ आलम्बणं नाणं, दंसणं चरणं तहा ।
काले य दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ॥५॥
दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा ।
जयणा चउव्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥६॥
दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्तं च खेत्तओ ।
कालओ जाव रीइज्जा, उवउत्ते य भावओ ॥७॥
इंदियत्थे विवज्जित्ता, सज्झायं चेव पंचहा ।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, उवउत्ते रियं रिए ॥८॥
कोहे माणे य मायाए, लोभे य उवउत्तया ।
हासे भए मोहरिए, विकहासु तहेव य ॥९॥
एयाइं अट्ठ ठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए ।
असावज्जं मियं काले, भासं भासिज्ज पन्नवं ॥१०॥

गवेसणाए गहणे य, परिभोगेसणा य जा ।
आहारोवहिसेज्जाए, एए तिन्नि विसोहए ॥११॥
उग्गमुप्पायणं पढमे, बीए सोहेज्ज एसणं ।
परिभोयम्मि चउक्कं, विसोहेज्ज जयं जई ॥१२॥
ओहोवहोवग्गहियं, भण्डगं दुविहं मुणी ।
गिण्हन्तो निक्खिवन्तो वा, पउंजेज्ज इमं विहिं ॥१३॥
चक्खुसा पडिलेहित्ता, पमज्जेज्ज जयं जई ।
आयए निक्खिवेज्जा वा, दुहओ वि समिए सया ॥१४॥
उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाणजल्लियं ।
आहारं उवहिं देहं, अन्नं वावि तहाविहं ॥१५॥
अणावायमसंलोए, अणावाए चेव होइ संलोए ।
आवायमसंलोए, आवाए चेव संलोए ॥१६॥
अणावायमसंलोए, परस्साणुवघाइए ।
समे अज्झुसिरे यावि, अचिरकालकयम्मि य ॥१७॥
विच्छिण्णे दूरमोगाढे, नासन्ने बिलवज्जिए ।
तसपाणबीयरहिए, उच्चाराईणि वोसिरे ॥१८॥
एयाओ पंच समिईओ, समासेण वियाहिया ।
इत्तो य तओ गुत्तीओ, वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥१९॥
सच्चा तहेव मोसा य, सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा य, मणगुत्ती चउव्विहा ॥२०॥
संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
मणं पवत्तमाणं तु, नियत्तिज्ज जयं जई ॥२१॥
सच्चा तहेव मोसा य, सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा य, वइगुत्ती चउव्विहा ॥२२॥
संरम्भसमारम्भे, आरम्भे य तहेव य ।
वयं पवत्तमाणं तु, नियत्तिज्ज जयं जई ॥२३॥

ठाणे निसीयणे चेव, तहेव य तुयट्टणे ।
उल्लंघणपल्लंघणे, इन्दियाण य जुंजणे ॥२४॥
सरम्भसमारम्भे, आरम्भम्मि तहेव य ।
कायं पवत्तमाणं तु, नियत्तिज्ज जयं जई ॥२५॥
एयाओ पंच समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे ।
गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ॥२६॥
एसा पवयणमाया, जे सम्मं आयरे मुणी ।
सो खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पण्डिए ॥२७॥ त्ति बेमि

॥ समिईओ समत्ताओ ॥

॥ अह जन्नइज्जं पचवीसइमं अज्झयणं ॥

माहणकुलसंभूओ, आसि विप्पो महायसो ।
जायाई जमजन्नम्मि, जयघोसि त्ति नामओ ॥१॥
इन्दियग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महामुणी ।
गामाणुगामं रीयन्ते, पत्तो वाणारसिं पुरिं ॥२॥
वाणारसीए बहिया, उज्जाणम्मि मणोरमे ।
फासुए सेज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥३॥
अह तेणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माहणे ।
विजयघोसि त्ति नामेण, जन्नं जयइ वेयवी ॥४॥
अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स जन्नम्मि, भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ॥५॥
समुवट्ठियं तहिं सन्तं, जायगो पडिसेहए ।
न हु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खू ! जायाहि अन्नओ ॥६॥
जे य वेयविऊ विप्पा, जन्नट्ठा य जे दिया ।
जोइसंगविऊ जे य, जे य धम्माण पारगा ॥७॥

जे समत्था समुद्धत्तु, परमप्पाणमेव य ।
तेसिं अन्नमिणं देय, भो भिक्खू ! सव्वकामियं ॥८॥
सो तत्थ एव पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी ।
न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो, उत्तमट्ठगवेसओ ॥९॥
नन्नट्ठं पाणहेउं वा, नवि निव्वाहणाय वा ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए, इमं वयणमब्बवी ॥१०॥
नवि जाणसि वेयमुहं, नवि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं ॥११॥
जे समत्था समुद्धत्तु, परमप्पाणमेव य ।
न ते तुमं वियाणासि, अह जाणासि तो भण ॥१२॥
तस्सक्खेवपमुक्खं तु, अचयन्तो तहिं दिओ ।
सपरिसो पंजली होउं, पुच्छइ तं महामुणिं ॥१३॥
वेयाणं च मुहं बूहि, बूहि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं बूहि, बूहि धम्माण वा मुहं ॥१४॥
जे समत्था समुद्धत्तु, परमप्पाणमेव य ।
एयं मे संसयं सव्वं, साहू ! कहसु पुच्छिओ ॥१५॥
अग्गिहुत्तमुहा वेया, जन्नट्ठी वेयसां मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं चन्दो, धम्माणं कासवो मुहं ॥१६॥
जहा चन्दं गहाईया, चिट्ठन्ति पंजलीउडा ।
वन्दमाणा नमसन्ता, उत्तमं मणहारिणो ॥१७॥
अजाणगा जन्नवाई, विज्जामाहणसंपया ।
गूढा सज्झायतवसा, भासच्छन्ना इवग्गिणो ॥१८॥
जो लोए बम्भणो वुत्तो, अग्गी वा महिओ जहा ।
सया कुसलसंदिट्ठं, तं वयं बूम माहणं ॥१९॥
जो न सज्जइ आगन्तुं, पव्वयन्तो न सोयइ ।
रमइ अज्जवयणम्मि, तं वयं बूम माहणं ॥२०॥

जायरूवं जहामट्ठं, निद्धन्तमलपावगं ।
रागदोसभयाईयं, तं वयं बूम माहणं ॥२१॥
तवस्सियं किसं दन्तं अवचियमंससोणियं ।
सुव्वयं पत्तनिव्वाणं, तं वयं बूम माहणं ॥२२॥
तसपाणे वियाणेत्ता, संगहेण य थावरे ।
जो न हिंसइ तिविहेण, तं वयं बूम माहणं ॥२३॥
कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया ।
मुसं न वयई जो उ, तं वयं बूम माहणं ॥२४॥
चित्तमन्तमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं ।
न गिण्हइ अदत्तं जो, तं वयं बूम माहणं ॥२५॥
दिव्वमाणुस्सतेरिच्छं जो न सेवइ मेहुणं ।
मणसा कायवक्केणं, तं वयं बूम माहणं ॥२६॥
जहा पोमं जले जायं, नोवलिप्पइ वारिणा ।
एवं अलित्तो कामेहिं, तं वयं बूम माहणं ॥२७॥
अलोलुयं मुहाजीविं, अणगारं अकिंचणं ।
असंसत्तं गिहत्थेसु, तं वयं बूम माहणं ॥२८॥
जहित्ता पुव्वसंजोगं, नाइसंगे य बन्धवे ।
जो न सज्जइ [1]एएसु, तं वयं बूम माहणं ॥२९॥
पसुबन्धा सव्ववेया य, जट्ठं च पावकम्मुणा ।
न तं तायन्ति दुस्सीलं, कम्माणि बलवन्ति हि ॥३०॥
न वि मुण्डिएण समणो, न ओंकारेण बम्भणो ।
न मुणी रण्णवासेणं, कुसचीरेण न तावसो ॥३१॥
समयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो ।
नाणेण उ मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥३२॥

1 भोगेसु । २-६ ।

कम्मुणा बम्भणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा । ३३॥
एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ ।
सव्वकम्मविणिम्मुक्कं तं वयं बूम माहणं ॥३४॥
एव गुणसमाउत्ता, जे भवन्ति दिउत्तमा ।
ते समत्था उ उद्धत्तु, परमप्पाणमेव य ॥३५॥
एव तु संसए छिन्ने, विजयघोसे य माहणे ।
समुदाय तओ तं तु जयघोस महामुणिं ॥३६॥
तुट्ठे य विजयघोसे, इणमुदाहु कयंजली ।
माहणत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ॥३७॥
तुब्भे जइया जन्नाणं तुब्भे वेयविऊ विऊ ।
जोइसंगविऊ तुब्भे, तुब्भे धम्माण पारगा ॥३८॥
तुब्भे समत्था उद्धत्तु, परमप्पाणमेव य ।
तमणुग्गहं करेहऽम्हं भिक्खेणं भिक्खुउत्तमा ॥३९॥
न कज्जं मज्झ भिक्खेणं, खिप्पं निक्खमसू दिया ।
मा भमिहिसि भयावट्टे, घोरे संसारसागरे ॥४०॥
उवलेवो होइ भोगेसु, अभोगी नोवलिप्पइ ।
भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चइ ॥४१॥
उल्लो सुक्को य दो छूढा, गोलया मट्टियामया ।
दो वि आवडिया कुड्डे, जो उल्लो सोऽत्थ लग्गइ ॥४२॥
एवं लग्गन्ति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा ।
विरत्ता उ न लग्गन्ति, जहा से सुक्कगोलए ॥४३॥
एवं से विजयघोसे, जयघोसस्स अन्तिए ।
अणगारस्स निक्खन्तो, धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ॥४४॥
खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ।
जयघोसविजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४५॥ त्ति बेमि

॥ अह सामायारी णाम छव्वीसइम अज्झयणं ॥

सामायारिं पवक्खामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
जं चरित्ताण निग्गन्था, तिण्णा संसारसागरं ॥१॥
पढमा आवस्सिया नाम, बिइया य निसीहिया ।
आपुच्छणा य तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा ॥२॥
पंचमी छन्दणा नाम, इच्छाकारो य छट्ठओ ।
सत्तमो मिच्छाकारो य, तहक्कारो य अट्ठमो ॥३॥
अब्भुट्ठाणं च नवमं, दसमा उवसंपदा ।
एसा दसंगा साहूणं सामायारी पवेइया ॥४॥
गमणे आवस्सियं कुज्जा, ठाणे कुज्जा निसीहियं ।
आपुच्छणा सयंकरणे, परकरणे पडिपुच्छणा ॥५॥
छन्दणा दव्वजाएणं इच्छाकारो य सारणे ।
मिच्छाकारो य निन्दाए, तहक्कारो पडिस्सुए ॥६॥
अब्भुट्ठाणं गुरुपूया, अच्छणे उवसंपदा ।
एवं दुपंचसंजुत्ता, सामायारी पवेइया ॥७॥
पुव्विल्लम्मि चउब्भाए आइच्चम्मि समुट्ठिए ।
भण्डयं पडिलेहित्ता, वन्दित्ता य तओ गुरुं ॥८॥
पुच्छिज्जा पंजलीउडो, किं कायव्वं मए इहं ।
इच्छं निओइउं भन्ते ! वेयावच्चे व सज्झाए ॥९॥
वेयावच्चे निउत्तेणं, कायव्वं अगिलायओ ।
सज्झाए वा निउत्तेणं, सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥१०॥
दिवसस्स चउरो भागे, कुज्जा भिक्खू वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु वि ॥११॥
पढमं पोरिसिं सज्झायं, बीयं झाणं झियायई ।
तइयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थीए सज्झायं ॥१२॥

आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउप्पया ।
चित्तासोएसु मासेसु, तिप्पया हवइ पोरिसी ॥१३॥
अंगुलं सत्तरत्तेणं, पक्खेण य दुअंगुलं ।
वड्ढए हायए वावि मासेणं चउरंगुलं ॥१४॥
आसाढबहुलपक्खे, भद्दवए कत्तिए य पोसे य ।
फग्गुणवइसाहेसु य, [1]नायव्वा ओमरत्ताओ ॥१५॥
जेट्ठामूले आसाढसावणे छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा ।
अट्ठहिं बिइयतियंमि, तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥१६॥
रत्तिं पि चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राइभाएसु चउसु वि ॥१७॥
पढमं पोरिसिं सज्झायं, बीयं झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु, चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं ॥१८॥
जं नेइ जया रत्तिं, नक्खत्तं तम्मि नहचउब्भाए ।
संपत्ते विरमेज्जा, सज्झाय पओसकालम्मि ॥१९॥
तम्मेव य नक्खत्ते, गयणचउब्भागसावसेसम्मि ।
वेरत्तियंपि कालं, पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥२०॥
पुव्विल्लम्मि चउब्भाए, पडिलेहित्ताण भंडयं ।
गुरुं वन्दित्तु सज्झायं कुज्जा दुक्खविमोक्खणिं ॥२१॥
पोरिसीए चउब्भाए, वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायणं पडिलेहए ॥२२॥
मुहपोत्तिं पडिलेहित्ता, पडिलेहिज्ज गोच्छगं ।
गोच्छगलइयंगुलिओ, वत्थाइं पडिलेहए ॥२३॥
उड्ढं थिरं अतुरियं, पुव्वं ता वत्थमेव पडिलेहे ।
तो बिइयं पप्फोडे, तइयं च पुणो पमज्जिज्जा ॥२४॥

1 नायव्व

अणच्चावियं अवलियं, अणाणुबन्धिममोसलिं चेव।
छप्पुरिमा नव खोडा, पाणीपाणिविसोहणं ॥२५॥
आरभडा सम्मद्दा, वज्जेयव्वा य मोसली तइया।
पप्फोडणा चउत्थी, विक्खित्ता वेइया छट्ठी ॥२६॥
पसिढिलपलम्बलोला, एगा मोसा अणेगरूवधुणा।
कुणइ पमाणिपमायं, संकियगणणोवगं कुज्जा ॥२७॥
अणूणाइरित्तपडिलेहा अविवच्चासा तहेव य।
पढमं पयं पसत्थं, सेसाणि य अप्पसत्थाइं ॥२८॥
पडिलेहणं कुणन्तो, मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा।
देइ व पच्चक्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥२९॥
पुढवी आउक्काए तेऊ वाऊ वणस्सइ तसाणं।
पडिलेहणापमत्तो, छण्हं पि विराहओ होइ ॥३०॥
पुढवी आउक्काए, तेऊ वाऊ वणस्सइ तसाणं।
पडिलेहणाआउत्तो, छण्हं संरक्खओ होइ ॥३१॥
तइयाए पोरिसीए, भत्तं पाणं गवेसए।
छण्हं अन्नयरागम्मि, कारणम्मि समुट्ठिए ॥३२॥
वेयणवेयावच्चे, इरियट्ठाए य संजमट्ठाए।
तह पाणवत्तियाए, छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥३३॥
निग्गन्थो धिइमन्तो, निग्गन्थी वि न करेज्ज छहिं चेव।
ठाणेहिं उ इमेहिं, अणइक्कमणाइ से होइ ॥३४॥
आयंके उवसग्गे तितिक्खया बम्भचेरगुत्तीसु।
पाणिदया तवहेउं, सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥३५॥
अवसेसं भण्डगं गिज्झ, चक्खुसा पडिलेहए।
परमद्धजोयणाओ विहारं विहरए मुणी ॥३६॥
चउत्थीए पोरिसीए, निक्खिवित्ताण भायणं।
सज्झायं तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं ॥३७॥

पोरिसीए चउब्भाए, वन्दित्ताण तओ गुरु ।
पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्जं तु पडिलेहए ॥३८॥
पासवणुच्चारभूमिं च, पडिलेहिज्ज जयं जई ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥३९॥
देवसियं च अइयारं, चिंतिज्जा अणुपुव्वसो ।
नाणे य दंसणे चेव, चरित्तम्मि तहेव य ॥४०॥
पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरु ।
देवसियं तु अइयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥४१॥
पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरु ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥४२॥
[1]पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरु ।
थुइमंगलं च काऊण, कालं संपडिलेहए ॥४३॥
पढमं पोरिसिं सज्झायं, बितियं झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु सज्झायं तु चउत्थिए ॥४४॥
पोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिया ।
सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहन्तो असंजए ॥४५॥
पोरिसीए चउब्भाए, वन्दिऊण तओ गुरु ।
पडिक्कमित्तु कालस्स, कालं तु पडिलेहए ॥४६॥
आगए कायवुस्सग्गे, सव्वदुक्खविमोक्खणे ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥४७॥
राइयं च अइयारं चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणम्मि दंसणम्मि य, चरित्तम्मि तवम्मि य ॥४८॥
पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरु ।
राइयं तु अइयारं, आलोएज्ज जहक्कमं ॥४९॥

---

१ सिद्धाणसंथवं किच्चा ।

पडिक्कमित्त निस्सल्लो, वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमुक्खणं ॥५०॥
किं तवं पडिवज्जामि, एवं तत्थ विचिन्तए ।
काउस्सग्गं तु पारित्ता, [1]वन्दए य तओ गुरुं ॥५१॥
पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
तवं तु पडिवज्जेज्जा, कुज्जा सिद्धाण संथवं ॥५२॥
एसा सामायारी, समासेण वियाहिया ।
जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं ॥५३॥

॥ सामायारी समत्ता ॥२६॥

॥ अह खलुंकिज्जं सत्तवीसइमं अज्झयणं ॥

थेरे गणहरे गग्गे, मुणी आसि विसारए ।
आइण्णे गणिभावम्मि समाहिं पडिसंधए ॥१॥
वहणे वहमाणस्स, कन्तारं अइवत्तए ।
जोगे वहमाणस्स, संसारो अइवत्तए ॥२॥
खलुंके जो उ जोएइ, विहम्माणो किलिस्सइ ।
असमाहिं य वेएइ, तोत्तओ से य भज्जइ ॥३॥
एगं डसइ पुच्छम्मि, एगं विन्धइऽभिक्खणं ।
एगो भंजइ समिलं एगो उप्पहपट्ठिओ ॥४॥
एगो पडइ पासेणं निवेसइ निवज्जइ ।
उक्कुद्दइ उप्फिडइ, सढे बालगवी वए ॥५॥
माई मुद्धेण पडइ, कुद्धे गच्छइ पडिप्पहं ।
मयलक्खेण चिट्ठइ वेगेण य पहावइ ॥६॥
छिन्नाले छिन्दइ सेल्लिं, दुद्दन्तो भंजए जुगं ।
सेवि य सुस्सुयाइत्ता उज्जहित्ता पलायए ॥७॥

१ करिज्जा जिणसंथवं ।

खलुंका जारिसा जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिसा ।
जोइया धम्मजाणम्मि भज्जंति धिइदुब्बला ॥८॥
इड्ढीगारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे ।
सायागारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे ॥९॥
भिक्खालसिए एगे, एगे ओमाणभीरुए थद्धे
एगं च अणुसासम्मि, हेऊहि कारणेहि य ॥१०॥
सो वि अन्तरभासिल्लो दोसमेव पकुव्वइ ।
आयरियाणं तु वयणं पडिकूलेइऽभिक्खणं ॥११॥
न सा ममं वियाणाइ, न य सा मज्झ दाहिइ ।
निग्गया होहिई मन्ने, साहू अन्नो य वच्चउ ॥१२॥
पलिया पलिउंचन्ति, ते परियन्ति समन्तओ ।
रायविट्ठिं च मन्नन्ता, करन्ति भिउडिं मुहे ॥१३॥
वाइया संगहिया चेव, भत्तपाणेहि पोसिया ।
जायपक्खा जहा हंसा, पक्कमंति दिसो दिसिं ॥१४॥
अह सारही विचिन्तेइ, खलुंकेहिं समागओ ।
किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं, अप्पा मे अवसीयइ ॥१५॥
जारिसा मम सीसाओ, तारिसा गलिगद्दहा ।
गलिगद्दहे जहित्ताणं, दढं पगिण्हइ तवं ॥१६॥
मिउमद्दवसंपन्नो गम्भीरो सुसमाहिओ ।
विहरइ महिं महप्पा, सीलभूएण अप्पणा ॥१७॥

॥ खलुंकिज्जं समत्तं ॥२७॥

॥ अह मोक्खमग्गगई णाम अट्ठावीसइम अज्झयणं ॥

मोक्खमग्गगइं तच्चं, सुणेह जिणभासियं ।
 ... नाणदंसणलक्खणं ॥१॥

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
एस मग्गुत्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥२॥
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
एयं मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छन्ति सोग्गइं ॥३॥
तत्थ पंचविहं नाणं सुयं आभिनिबोहियं ।
ओहिनाणं तु तइयं, मणनाणं च केवलं ॥४॥
एयं पंचविहं नाणं, दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाणं य सव्वेसिं, नाणं नाणीहिं दंसियं ॥५॥
गुणाणमासओ दव्वं एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ अस्सिया भवे ॥६॥
धम्मो अहम्मो आगासं, कालो पुग्गलजन्तवो ।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥७॥
धम्मो अहम्मो आगासं, दव्वं इक्किक्कमाहियं ।
अणन्ताणि य दव्वाणि, कालो पुग्गलजन्तवो ॥८॥
गइलक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाणलक्खणो ।
भायणं सव्वदव्वाणं, नहं ओगाहलक्खणं ॥९॥
वत्तणालक्खणो कालो, जीवो उवओगलक्खणो ।
नाणेणं दंसणेणं च, सुहेण य दुहेण य ॥१०॥
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
वीरियं उवओगो य, एयं जीवस्स लक्खणं ॥११॥
सद्दन्धयार-उज्जोओ, पहा छायातवे इ वा ।
वण्णरसगन्धफासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥१२॥
एगत्तं च पुहत्तं च, संखा संठाणमेव य ।
संजोगा य विभागा य पज्जवाणं तु लक्खणं ॥१३॥
जीवाजीवा य बन्धो य, पुण्णं पावासवो तहा ।
संवरो निज्जरा मोक्खो, सन्तेए तहिया नव ॥१४॥

तहियाण तु भावाण, सब्भावे उवएसण ।
भावेण सद्दहन्तस्स, सम्मत्त त वियाहिय ॥१५॥
निसग्गुवएसरुई, आणरुई सुत्तबीयरुइमेव ।
अभिगमवित्थाररुइ, किरिया-संखेव-धम्मरुई ॥१६॥
भूयत्थेणाहिगया, जीवाजीवा य पुण्णपाव च ।
सहसम्मुइयासवसंवरो य रोएइ उ निस्सग्गो ॥१७॥
जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव ।
एमेव नन्नह त्ति य, स निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥१८॥
एए चेव उ भावे, उवइट्ठे जो परेण सद्दहइ ।
छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥१९॥
रागो दोसो मोहो, अन्नाण जस्स अवगय होइ ।
आणाए रोयतो, सो खलु आणारुई नाम ॥२०॥
जो सुत्तमहिज्जन्तो सुएण ओगाहइ उ सम्मत्त ।
अगेण बाहिरेण वा सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥२१॥
एगेण अणेगाइ, पयाइ जो पसरइ उ सम्मत्ते ।
उदए व्व तेल्लबिन्दू, सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥२२॥
सो होइ अभिगमरुई, सुयनाण जेण अत्थओ दिट्ठ ।
एक्कारस अगाइ पइण्णग दिट्ठिवाओ य ॥२३॥
दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा ।
सव्वाहि नयविहीहिं य, वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥२४॥
दसणनाणचरित्ते, तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु ।
जो किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुइ नाम ॥२५॥
अणभिग्गहियकुदिट्ठी, संखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो ।
अविसारओ पवयणे, अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥२६॥
जो अत्थिकायधम्म, सुयधम्म खलु चरित्तधम्म च ।
सद्दहइ [illegible], सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥२७॥

परमत्थसंथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वा वि।
वावण्णकुदंसणवज्जणा, य सम्मत्तसद्दहणा ॥२८॥
नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं, दंसणे उ भइयव्वं।
सम्मत्तचरित्ताइं, जुगवं पुव्वं व सम्मत्तं ॥२९॥

नादंसणिस्स नाणं,
नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो,
नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं ॥३०॥

निस्संकिय-निक्कंखिय निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य।
उववूह-थिरीकरणे, वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ ॥३१॥
सामाइयत्थ पढमं, छेओवट्ठावणं भवे बिइयं।
परिहारविसुद्धीयं, सुहुमं तह संपरायं च ॥३२॥
अकसायमहक्खायं, छउमत्थस्स जिणस्स वा।
एयं चयरित्तकरं, चारित्तं होइ आहियं ॥३३॥
तवो य दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भन्तरो तहा।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भन्तरो तवो ॥३४॥
नाणेण जाणई भावे, दंसणेण य सद्दहे।
चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झई ॥३५॥
खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य।
सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो ॥३६॥ त्ति बेमि

॥ मोक्खमग्गगई समत्ता ॥२८॥

॥ अह सम्मत्तपरक्कमं एगूणतीसइमं अज्झयणं ॥

सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु सम्मत्तपरक्कमे नाम अज्झयणे समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइयं, जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तइत्ता रोयइत्ता

फासित्ता पालइत्ता तीरित्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्तं करेन्ति । तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ, तंजहा —

संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६ गरिहणया ७ सामाइए ८ चउव्वीसत्थवे ९ वन्दणए १० पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुइमङ्गले १४ कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया १९ पडिपुच्छणया २० पडियट्टणया २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणसंनिवेसणया २५ संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडिबद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२ संभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसायपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहायपच्चक्खाणे ३९ भत्तपच्चक्खाणे ४० सब्भावपच्चक्खाणे ४१ पडिरूवणया ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपण्णया ४४ वीयरागया ४५ खन्ती ४६ मुत्ती ४७ मद्दवे ४८ अज्जवे ४९ भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया ५८ नाणसंपन्नया ५९ दंसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१ सोइन्दियनिग्गहे ६२ चक्खिन्दियनिग्गहे ६३ घाणिन्दियनिग्गहे ६४ जिब्भिन्दियनिग्गहे ६५ फासिन्दियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जदोसमिच्छादंसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ॥७३॥

संवेगेणं ... किं जणयइ? संवेगेण अणुत्तर धम्म-

सद्ध जणयइ । अणुत्तराए धम्मसद्धाए सवेग हव्वमागच्छइ । अणन्ताणुबन्धिकोहमाणमायालोभे खवेइ । नव च कम्म न बन्धइ । तप्पच्चइय च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण दसणाराहए भवइ । दसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेण [1]सिज्झइ । सोहीए य णं विसुद्धाए तच्च पुणो भवग्गहण नाइक्कमइ ॥१॥

निव्वेएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? निव्वेएण दिव्वमाणुसतेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेय हव्वमागच्छइ, सव्वविसएसु विरज्जइ । सव्वविसएसु विरज्जमाणे [2]आरम्भपरिच्चाय करेइ । आरम्भपरिच्चाय करेमाणे ससारमग्ग वोच्छिन्दइ, सिद्धिमग्ग पडिवन्ने य भवइ ॥२॥

धम्मसद्धाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? धम्मसद्धाए णं सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ । आगारधम्म च णं चयइ । अणगारिए णं जीवे सारीरमाणसाण दुक्खाणं छेयणभेयणसजोगाईण वोच्छेय करेइ अव्वाबाह च णं सुह निव्वत्तेइ ॥३॥

गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए विणयपडिवत्ति जणयइ । विणयपडिवन्ने य णं जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवदुग्गईओ निरुम्भइ । वण्णसजलणभत्तिबहुमाणयाए मणुस्सदेवग्गईओ निबन्धइ, सिद्धि सोग्गइ च विसोहेइ । पसत्थाइ च णं विणयमूलाइ सव्वकज्जाइ साहेइ अन्ने य बहवे जीवे विणिइत्ता भवइ ॥४॥

---

१ सिज्झन्ति, बुज्झन्ति, मुच्चन्ति, परिनिव्वायन्ति, सव्वदुक्खाणमंतं करेंति । २ आरम्भपरिग्गहपरि० ।

आलोयणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? आलोयणाए णं मायानियाणमिच्छादंसणसल्लाणं मोक्खमग्गविग्घाणं अणन्तसंसारवन्धणाणं उद्धरणं करेइ। उज्जुभावं च जणयइ। उज्जुभावपडिवन्ने य णं जीवे अमाई इत्थीवेयनपुंसगवेयं च न बन्धइ। पुव्वबद्धं च णं निज्जरेइ ॥५॥

निन्दणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? निन्दणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ। पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करणगुणसेढिं पडिवज्जइ। करणगुणसेढीपडिवन्ने य णं अणगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ॥६॥

गरहणयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ ? गरहणयाए अपुरक्कारं जणयइ। अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ, पसत्थे य पडिवज्जइ। पसत्थजोगपडिवन्ने य णं अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ ॥७॥

सामाइएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? सामाइएणं सावज्जजोगविरइं जणयइ ॥८॥

चउवीसत्थएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ। चउव्वीसत्थएणं दंसणविसोहिं जणयइ ॥९॥

वन्दणएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वन्दणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ। उच्चागोयं कम्मं निबन्धइ। सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ। दाहिणभावं च णं जणयइ ॥१०॥

पडिक्कमणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? पडिक्कमणेणं

१—बद्धगाणं।

वयछिद्दाणि पिहेइ । पिहियवयछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते [1]सुप्पणिहिंदिए विहरइ ॥११॥

काउसग्गेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? काउसग्गेण तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ । विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए ओहरियभरु व्व भारवहे [2]पसत्थज्झाणोवगए सुहं सुहेणं विहरइ ॥१२॥

पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरुम्भइ । पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ । इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीइभूए विहरइ ॥१३॥

थयथुइमंगलेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? थ० नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ । नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ने य णं जीवे अन्तकिरियं कप्पविमाणोववत्तिगं आराहणं आराहेइ ॥१४॥

कालपडिलेहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? का० नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥१५॥

पायच्छित्तकरणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? पा० पावविसोहिं जणयइ, निरइयारे यावि भवइ । सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयारं च आयारफलं च आराहेइ ॥१६॥

खमावणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? ख० पल्हायणभावं जणयइ । पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाणभूय-

1 सुप्पणिहिए । 2 धम्मज्झाणो० ।

जीवमत्तसु मित्तीभावमुप्पाएइ। मित्तीभावमुवगए य जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ ॥१७॥

सज्झाएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? स० णाणावरणिज्ज कम्म खवेइ ॥१८॥

वायणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वा० निज्जरं जणयइ। सुयस्स य अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्टए। सुयस्स अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ। तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ १९

पडिपुच्छणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? प० सुत्तत्थतदुभयाइं विसोहेइ। कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिन्दइ ॥२०॥

परियट्टणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? प० वञ्जणाइं जणयइ, वञ्जणलद्धिं च उप्पाएइ ॥२१॥

अणुप्पेहाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अ० आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ धणियबन्धणबद्धाओ सिढिलबन्धणबद्धाओ पकरेइ। दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ। तिव्वाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ। (बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ) आउयं च णं कम्मं सिया य बन्धइ, सिया नो बन्धइ। असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो २ उवचिणइ। अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं खिप्पामेव वीइवयइ ॥२२॥

धम्मकहाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? ध० कम्मनिज्जरं जणयइ। धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ। पवयणपभावेणं जीवे आगमेसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबन्धइ ॥२३॥

सुयस्स आराहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? सु०

अप्पाणं रक्खेइ न य संकिलिस्सइ ॥२४॥

एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? ए० चित्तनिरोहं करेइ ॥२५॥

संजमेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? सं० अणण्हयत्तं जणयइ ॥२६॥

तवेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? तवेणं वोदाणं जणयइ ॥२७॥

वोदाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वो० अकिरियं जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥२८॥

सुहसाएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? सु० अणुस्सुयत्तं जणयइ । अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकम्पए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥२९॥

अप्पडिबद्धयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अ० निस्संगत्तं जणयइ । निस्संगत्तेणं जीवे एगे एगग्गचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ॥३०॥

विवित्तसयणासणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वि० चरित्तगुत्तिं जणयइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपडिवन्ने अट्ठविहकम्मगंठिं निज्जरेइ ॥३१॥

विणियट्टणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वि० पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ । पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए

पाउ नियत्तइ। तओ पच्छा चाउरंतं संसारकंतारं वीइ-वयइ ॥३२॥

सम्भोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? सं० आल-म्बणाइं खवेइ। निरालम्बणस्स य आययट्ठिया जोगा भवन्ति। सएणं लाभेणं संतुस्सइ, परलाभं नो आसादेइ, परलाभं नो तक्केइ, नो पीहेइ, नो पत्थेइ, नो अभिलसइ। परलाभं अणा-सायमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे अणभिलस-माणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥३३॥

उवहिपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? उ० अपलि-मन्थं जणयइ। निरुवहिए णं जीवे निक्कंखी उवहिमन्तरेण य न संकिलिस्सइ ॥३४॥

आहारपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? आ० जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दइ। जीवियासंसप्पओगं वोच्छि-न्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न संकिलिस्सइ ॥३५॥

कसायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? क० वीय-रागभावं जणयइ। वीयरागभावपडिवन्ने वि य णं जीवे सम-सुहदुक्खे भवइ ॥३६॥

जोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? जो० अजो-गत्तं जणयइ। अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं निज्जरेइ ॥३७॥

सरीरपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? स० सिद्धा-इसयगुणकित्तणं निव्वत्तेइ। सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य णं जीवे लोगग्गमुवगए [illegible] भवइ ॥३८॥

सहायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? स० एगीभावं जणयइ । एगीभावभूए य णं जीवे एगग्गं भावेमाणे अप्पसद्दे, अप्पझंझे, अप्पकलहे अप्पकसाए, अप्पतुमंतुमे, संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिए यावि भवइ ॥३९॥

भत्तपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? भ० अणेगाइं भवसयाइं निरुम्भइ ॥४०॥

सब्भावपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? स० अनियट्टिं जणयइ । अनियट्टिपडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलीकम्मंसे खवेइ तंजहा—वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं । तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ मुच्चइ जाव सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥४१॥

पडिरूवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? प० लाघवियं जणयइ । लघुभूए णं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्जरूवे अ पडिलेहे जिइन्दिए विउलतवसमिइसमन्नागए यावि भवइ ॥४२॥

वेयावच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वे० तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबन्धइ ॥४३॥

सव्वगुणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? स० अपुणरावत्तिं जणयइ । अपुणरावत्तिं पत्तए य णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ ॥४४॥

वीयरागयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वी० नेहाणुबन्धणाणि तण्हाणुबन्धणाणि य वोच्छिन्दइ, मणुन्नामणुन्नेसु सद्दफरिसरूवगन्धेसु[१] चेव विरज्जइ ॥४५॥

१-सु सचित्ताचित्तमीसएसु ।

खन्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? खन्तीए परीसहे जिणइ ॥४६॥

मुत्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? मु० अकिंचणं जणयइ । अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाणं पुरिसाणं अपत्थणिज्जो भवइ ॥४७॥

अज्जवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अ० काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं अविसंवायणं जणयइ । अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥४८॥

मद्दवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? म० अणुस्सियत्तं जणयइ । अणुस्सियत्तेणं जीवे मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठ मयट्ठाणाइं निट्ठावेइ ॥४९॥

भावसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? भा० भावविसोहिं जणयइ । भावविसोहिए वट्टमाणे जीवे अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ । अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता परलोगधम्मस्स आराहए भवइ ॥५०॥

करणसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ । क० करणसत्तिं जणयइ । करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहा वाई तहा कारी यावि भवइ ॥५१॥

जोगसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ । जो० जोगं विसोहेइ ॥५२॥

मणगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? म० जीवे एगग्गं जणयइ । एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ

वयगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? व० निव्वियारत्तं जणयइ । निव्वियारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते यावि विहरइ ॥५४॥

कायगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? का० संवरं जणयइ । संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ ॥५५॥

मणसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? म० एगग्गं जणयइ । एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ । नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेइ ॥५६॥

वयसमाहारणयाए भंते ! जीवे किं जणयइ ? व० वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ । वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहित्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ, दुल्लहबोहियत्तं निज्जरेइ ॥५७॥

कायसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? का० चरित्तपज्जवे विसोहेइ । चरित्तपज्जवे विसोहित्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ । अहक्खायचरित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥५८॥

नाणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? ना० जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ । नाणसंपन्ने जीवे चाउरन्ते संसारकन्तारे न विणस्सइ ।

जहा सूई ससुत्ता पडिया न विणस्सइ ।
तहा जीवे ससुत्ते संसारे न विणस्सइ ॥

नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ, ससमयपरसमयविसारए य असंघायणिज्जे भवइ ॥५९॥

दसणसपन्नयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? द० भव-मिच्छत्तछेयण करेइ, पर न विज्झायइ । पर अनिज्झायमाणे अणुत्तरेण नाणदसणेण अप्पाण सजोएमाणे सम्म भावेमाणे विहरइ ॥६०॥

चरित्तसपन्नयाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ? च० सेलेसीभाव जणयइ । सेलेसिं पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वायइ, सव्वदुक्खाणमन्त करेइ ॥६१॥

सोइन्दियनिग्गहेणं भते ! जीवे किं जणयइ ? सो० मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागदोसनिग्गह जणयइ, तप्पच्चइय कम्म च ण न बन्धइ, पुव्वबद्ध च निज्जरेइ ॥६२॥

चक्खिन्दियनिग्गहेण भते ! जीवे किं जणयइ ? च० मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु रागदोसनिग्गह जणयइ तप्पच्चइय च ण कम्म न बन्धइ, पुव्वबद्ध च निज्जरेइ ॥६३॥

घाणिन्दियनिग्गहेण भते ! जीवे किं जणयइ ? घा मणुन्नामणुन्नेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गह जणयइ, तप्पच्चइय च णं कम्म न बन्धइ, पुव्वबद्ध च निज्जरेइ ॥६४॥

जिब्भिन्दियनिग्गहेण भते ! जीवे किं जणयइ ? जि० मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गह जणयइ, तप्पच्चइय च ण कम्म न बन्धइ, पुव्वबद्ध च निज्जरेइ ॥६५॥

फासिन्दियनिग्गहेण भते ! जीवे किं जणयइ ? फा० मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गह जणयइ, तप्पच्चइय च ण कम्म न बन्धइ, पुव्वबद्ध च निज्जरेइ ॥६६॥

कोहविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? को० खन्ति जण-यइ, कोहवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६७॥

माणविजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? मा० मद्दवं जणयइ, माणवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६८॥

मायाविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? मा० अज्जवं जण-यइ, मायावेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६९॥

लोभविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? लो० संतोसं जणयइ, लोभवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ७०

पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? पि० नाणदंसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ । अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगंठिविमोयणयाए तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठावीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ पञ्चविहं नाणावर-णिज्जं, नवविहं दंसणावरणिज्जं, पंचविहं अन्तराइयं एए तिन्नि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ । तओ पच्छा अणुत्तरं कसिणं पडिपुण्णं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभावं केवल-वरनाणदंसणं समुप्पाडेइ । जाव सजोगी भवइ, ताव ईरिया-वहियं कम्मं नियन्धइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं । तं पढम-समए बद्धं, बिइयसमए वेइयं तइयसमए निज्जिण्णं, तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं सेयाले य अकम्मं यावि भवइ ७१

अहाउयं पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्धावसेसाए जोगनिरो-हं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइं सुक्कज्झाणं झायमा-णे तप्पढमयाए मणजोगं निरुम्भइ, वयजोगं निरुम्भइ, कायजो-गं निरुम्भइ आणपाणनिरोहं करेइ, ईसि पञ्चहस्सक्खरुच्चारणद्धा

य ण अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ ॥७२॥

तओ ओरालियतेयकम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ जाव अंतं करेइ ॥७३॥

एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेण आघविए, पन्नविए, परूविए, दंसिए, निदंसिए उवदंसिए ॥७४॥ त्ति बेमि ॥

॥ सम्मत्तपरक्कमे समत्ते ॥२९॥

॥ अह तवमग्गं तीसइमं अज्झयणं ॥

जहा उ पावगं कम्मं, रागदोससमज्जियं ।
खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥१॥
पाणिवहमुसावाया अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ ।
राईभोयणविरओ, जीवो भवइ अणासवो ॥२॥
पंचसमिओ तिगुत्तो, अकसाओ जिइन्दिओ ।
अगारवो य निस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो ॥३॥
एएसिं तु विवच्चासे, रागदोससमज्जियं ।
खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥४॥
जहा महातलायस्स, संनिरुद्धे जलागमे ।
उस्सिंचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे ॥५॥
एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसंचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ ॥६॥

सो तवो दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भन्तरो तहा ।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भन्तरो तवो ॥७॥
अणसणमूणोयरिया भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ ।
कायकिलेसो सलीणया य बज्झो तवो होइ ॥८॥
इत्तरियमरणकाला य, अणसणा दुविहा भवे ।
इत्तरिया सावकखा, निरवकखा उ बिइज्जिया ॥९॥
जो सो इत्तरियतवो, सो समासेण छव्विहो ।
सेढितवो पयरतवो, घणो य तह होइ वग्गो य ॥१०॥
तत्तो य वग्गवग्गो, पचमो छट्ठओ पइण्णतवो ।
मणइच्छियचित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥११॥
जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा वियाहिया ।
सवियारमवियारा, कायचिट्ठ पई भवे ॥१२॥
अहवा सपरिकम्मा, अपरिकम्मा य आहिया ।
नीहारिमनीहारी, आहारच्छेओ दोसु वि ॥१३॥
ओमोयरणं पंचहा, समासेण वियाहियं ।
दव्वओ खेत्तकालेण, भावेण पज्जवेहि य ॥१४॥
जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओमं तु जो करे ।
जहन्नेणेगसित्थाई, एव दव्वेण ऊ भवे ॥१५॥
गामे नगरे तह रायहाणिनिगमे य आगरे पल्ली ।
खेडे कब्बडदोणमुहपट्टणमडम्बसबाहे ॥१६॥
आसमपए विहारे, सन्निवेस समायघोसे य ।
थलिसेणाखन्धारे, सत्थे सवट्टकोट्टे य ॥१७॥
वाडेसु य रत्थासु व, घरेसु वा एवमित्तिय खेत्तं ।
कप्पइ उ एवमाई, एव खेत्तेण ऊ
पेडा य अद्धपेडा, गोमुत्तिपयंगवी
सम्बुक्कावट्टायय गन्तुपच्चागया छट्ठा

दिवसस्स पोरुसीण, चउण्हंपि उ जत्तिओ भवे कालो।
एवं चरमाणो खलु कालोमाणं मुणेयव्वं ॥२०॥
अहवा तइयाए पोरिसीए, ऊणाइ घासमेसन्तो।
चउभागूणाए वा, एवं कालेण ऊ भवे ॥२१॥
इत्थी वा पुरिसो वा, अलंकिओ वा नलंकिओ वावि।
अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेणं व वत्थेणं ॥२२॥
अन्नेण विसेसेणं, वण्णेणं भावमणुमुयन्ते उ।
एवं चरमाणो खलु, भावोमाणं मुणेयव्वं ॥२३॥
दव्वे खेत्ते काले भावम्मि य आहिया उ जे भावा।
एएहि ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥२४॥
अट्ठविहगोयरग्गं तु, तहा सत्तेव एसणा।
अभिग्गहा य जे अन्ने, भिक्खायरियमाहिया ॥२५॥
खीरदहिसप्पिमाई, पणीयं पाणभोयणं।
परिवज्जणं रसाणं तु, भणियं रसविवज्जणं ॥२६॥
ठाणा वीरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा।
उग्गा जहा धरिज्जन्ति, कायकिलेसं तमाहियं ॥२७॥
एगन्तमणावाए, इत्थीपसुविवज्जिए।
सयणासणसेवणया, विवित्तसयणासणं ॥२८॥
एसो बाहिरगतवो, समासेण वियाहिओ।
अब्भिन्तरं तवं एत्तो, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥२९॥
पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ।
झाणं च विउस्सग्गो, एसो अब्भिन्तरो तवो ॥३०॥
आलोयणारिहाईयं, पायच्छित्तं तु दसविहं।
जं भिक्खू वहई सम्मं, पायच्छित्तं तमाहियं ॥३१॥
अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं, तहेवासणदायणं।
गुरुभत्तिभावसुस्सूसा, विणओ एस वियाहिओ ॥३२॥

आयरियमाईए, वेयावच्चम्मि दसविहे ।
आसेवणं जहाथामं, वेयावच्चं तमाहियं ॥३३॥
वायणा पुच्छणा चेव, तहेव परियट्टणा ।
अणुप्पेहा धम्मकहा, सज्झाओ पञ्चहा भवे ॥३४॥
अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, झाएज्जा सुसमाहिए ।
धम्मसुक्काइं झाणाइं, झाणं तं तु बुहा वए ॥३५॥
सयणासणठाणे वा जे उ भिक्खू न वावरे ।
कायस्स विउस्सग्गो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥३६॥
एवं तवं तु दुविहं, जे सम्मं आयरे मुणी ।
सो खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥३७॥ त्ति बेमि

॥ तवमग्गं समत्तं ॥३०॥

॥ अह चरणविही नाम एगतीसइमं अज्झयणं ॥

चरणविहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं ।
जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं ॥१॥
एगओ विरइं कुज्जा, एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियत्तिं च, संजमे य पवत्तणं ॥२॥
रागदोसे य दो पावे, पावकम्मपवत्तणे ।
जे भिक्खू रुम्भई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥३॥
दण्डाणं गारवाणं च, सल्लाणं च तियं तियं ।
जे भिक्खू चयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥४॥
दिव्वे य जे उवसग्गे, तहा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥५॥
विगहाकसायसन्नाणं झाणाणं च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥६॥

पयस्सु इन्दियत्थेसु, समिईसु किरियासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥७॥
लेसासु छसु काएसु छक्के आहारकारणे ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥८॥
पिण्डोग्गहपडिमासु, भयट्ठाणेसु सत्तसु ।
जे भिक्खू जयई निच्च से न अच्छइ मण्डले ॥९॥
मदेसु बम्भगुत्तीसु, भिक्खुधम्मम्मि दसविहे ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१०॥
उवासगाणं पडिमासु, भिक्खूणं पडिमासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥११॥
किरियासु भूयगामेसु, परमाहम्मिएसु य ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१२॥
गाहासोलसएहिं, तहा असंजमम्मि य ।
जे भिक्खू जयइ निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१३॥
बम्भम्मि नायज्झयणेसु, ठाणेसु य ऽसमाहिए ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१४॥
एगवीसाए सबले, बावीसाए परीसहे ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१५॥
तेवीसाइ सूयगडे, रूवाहिएसु सुरेसु अ
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१६॥
पणुवीसभावणासु, उद्देसेसु दसाइणं ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१७॥
अणगारगुणेहिं च, पगप्पम्मि तहेव य ।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१८॥
पावसुयपसंगेसु, मोहट्ठाणेसु चेव य ।
जे [illegible] इ निच्च, से न अच्छइ मण्डले

सिद्धाइगुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य ।
जे भिक्खू जयइ निश्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥२०॥
इय एएसु ठाणेसु, जे भिक्खू जयइ सया ।
खिप्पं सो सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥२१॥ त्ति बेमि
॥ चरणविही समत्ता ॥३१॥

॥ अह पमायट्ठाणं बत्तीसइमं अज्झयणं ॥

अच्चन्तकालस्स समूलगस्स,
सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता,
सुणेह एगन्तहियं हियत्थं ॥१॥
नाणस्स सव्वस्स पगासणाए,
अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं
एगन्तसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥२॥
तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा,
विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
सज्झायएगन्तनिसेवणा य,
सुत्तत्थसंचिन्तणया धिई य ॥३॥
आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं,
सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं ।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं,
समाहिकामे समणे तवस्सी ॥४॥
न वा लभेज्जा निउणं सहायं
गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।

१ पाठान्तर ।

पविन्दियग्गी वि पगामभोइणो,
न बम्भयारिस्स हियाय कस्सई ॥११॥
विवित्तसेज्जासणजन्तियाण,
ओमासणाण दमिइन्दियाण ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्त,
पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥१२॥
जहा बिरलावसहस्स मूले,
न मूसगाण वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे,
न बम्भयारिस्स खमो निवासो ॥१३॥
न रूवलावण्णविलासहास,
न जंपिय इंगियपहिय वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता,
ददठु ववस्से समणे तवस्सी ॥१४॥
अदसणं चेव अपत्थणं च,
अचिन्तणं चेव अकित्तणं च ।
इ थीजणस्सारियज्झाणजुग्गं,
हियं सया बम्भवए रयाणं ॥१५॥
काम तु देवीहि विभूसियाहिं,
न चाइया खोभइउ तिगुत्ता ।
तहा वि एगन्तहिय ति नच्चा,
विवित्तवासो मुणिण पसत्थो ॥१६॥
मोक्खाभिकखिस्स उ माणवस्स,
ससारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिस दुत्तरमत्थि लोए,
जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥१७॥

एए य संगे समइक्कमित्ता,
सुहुत्तरा चेव भवन्ति सेसा।
जहा महासागरमुत्तरित्ता,
नई भवे अवि गङ्गासमाणा ॥१८॥
कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं,
सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स।
जं काइयं माणसियं च किंचि,
तस्सन्तगं गच्छइ वीयरागो ॥१९॥
जहा य किम्पागफला मणोरमा,
रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा।
ते खुड्डए जीविए पच्चमाणा,
एओवमा कामगुणा विवागे ॥२०॥
जे इंदियाणं विसया मणुन्ना
न तेसु भावं निसिरे कयाइ।
न यामणुन्नेसु मणं पि कुज्जा,
समाहिकामे समणे तवस्सी ॥२१॥
चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति,
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥२२॥
रूवस्स चक्खुं गहणं वयन्ति,
चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥२३॥
रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणासं।

रागाउरे से जह वा पयंगे,
आलोयलोले समुवेइ मच्चु ॥२४॥
जे यावि दोस समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू,
न किंचि रूवं अवरज्झइ से ॥२५॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि रूवे,
अतालिसे से कुणइ पओसं।
दुक्खस्स सम्पीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥२६॥
रूवाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥२७॥
रूवाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से,
सम्भोगकाले य अतित्तलाभे ? ॥२८॥
रूवे अतित्ते य परिग्गहम्मि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥२९॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥३०॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एव अदत्ताणि समाययन्तो
रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥३१॥
रूवाणुरत्तस्स नरस्स एव,
कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥३२॥
एमेव रूवम्मि गओ पओस,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्म,
ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥३३॥
रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥३४॥
सोयस्स सद्द गहण वयन्ति,
त रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
त दोसहेउ अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥३५॥
सद्दस्स सोय गहण वयन्ति,
सोयस्स सद्द गहण वयन्ति ।
रागस्स हेउ समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥३६॥
सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्व,
अकालिय पावइ से विणास ।

रागाउरे ओसहगन्धगिद्धे,
सप्पे बिलाओ विव निक्खमंते ॥५०॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू,
न किंचि गन्धं अवरज्झई से ॥५१॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे,
अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥५२॥
गन्धाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥५३॥
गन्धाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से,
संभोगकाले य अतित्तिलाभे ? ॥५४॥
गन्धे अतित्ते य परिग्गहम्मि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥५५॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥५६॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एव अदत्ताणि समाययन्तो,
गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥५७॥
गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एव,
कुत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि ?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥५८॥
एमेव गन्धम्मि गओ पओस,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्म,
ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥५९॥
गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥६०॥
जिब्भाए रस गहण वयन्ति,
त रागहेउ तु मणुन्नमाहु।
त दोसहेउ अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥६१॥
रसस्स जिब्भ गहण वयन्ति,
जिब्भाए रस गहण वयन्ति।
रागस्स हेउ समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥६२॥
रसेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्व,
अकालिय पावइ से विणास।

रागाउरे बडिसविभिन्नकाए,
मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे ॥६३॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू,
न किंचि रसं अवरज्झई से ॥६४॥
एगन्तरत्ते रुइरंसि रसे,
अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥६५॥
रसाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥६६॥
रसाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खणसंनिओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से,
संभोगकाले य अतित्तलाभे ? ॥६७॥
रसे अतित्ते य परिग्गहम्मि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥६८॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
रसे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥६९॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो,
रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो॥७०॥
रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं।७१॥
एमेव रसम्मि गओ पओसं,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे॥७२॥
रसे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं॥७३॥
कायस्स फासं गहणं वयन्ति,
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो॥७४॥
फासस्स कायं गहणं वयन्ति,
कायस्स फासं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु॥७५॥
फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणासं।

रागाउरे सीयजलावसन्ने,
गाहग्गहीए महिसे विवन्ने ॥७६॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू,
न किंचि फासं अवरज्झई से ॥७७॥
एगन्तरत्ते रुइरंमि फासे,
अतालिसे से कुणइ पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥७८॥
फासाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥७९॥
फासाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से,
संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥८०॥
फासे अतित्ते य परिग्गहंमि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥८१॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
फासे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥८२॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरते ।
एव अदत्ताणि समाययन्तो,
फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ।८३॥
फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥८४॥
एमेव फासम्मि गओ पओसं,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥८५॥
फासे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥८६॥
मणस्स भावं गहणं वयन्ति,
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥८७॥
भावस्स मणं गहणं वयन्ति,
मणस्स भावं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥८८॥
भावेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणासं ।

रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे,
करेणुमग्गावहिए गजे वा ॥८९॥
जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेण सएण जन्तू,
न किंचि भावं अवरज्झई से ॥९०॥
एगंतरत्ते रुइरंसि भावे,
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥९१॥
भावाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥९२॥
भावाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खणसंनिओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से,
संभोगकाले य अतित्तलाभे ? ॥९३॥
भावे अतित्ते य परिग्गहम्मि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥९४॥
तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥९५॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो,
भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥९६॥
भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥९७॥
एमेव भावम्मि गओ पओसं,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥९८॥
भावे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥९९॥
एविन्दियत्था य मणस्स अत्था,
दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो ।
ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं,
न वीयरागस्स करेन्ति किंचि ॥१००॥
न कामभोगा समयं उवेन्ति,
न यावि भोगा विगइं उवेन्ति ।
जे तप्पओसी य परिग्गही य,
सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥१०१॥
कोहं च माणं च तहेव मायं,
लोहं दुगुंछं अरइं रइं च ।

चक्खुमचक्खू ओहिस्स, दंसणे केवले य आवरणे ।
एवं तु नवविगप्पं, नायव्वं दंसणावरणं ॥६॥
वेयणीयं पि य दुविहं, सायमसायं च आहियं ।
सायस्स उ बहू भेया, एमेव असायस्स वि ॥७॥
मोहणिज्जंपि च दुविह, दंसणे चरणे तहा ।
दंसणे तिविह वुत्तं, चरणे दुविहं भवे ॥८॥
सम्मत्तं चेव मिच्छत्तं, सम्मामिच्छत्तमेव य ।
एयाओ तिन्नि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दंसणे ॥९॥
चरित्तमोहणं कम्मं, दुविहं तु वियाहियं ।
कसायमोहणिज्जं तु, नोकसायं तहेव य ॥१०॥
सोलसविहभेएणं, कम्मं तु कसायजं ।
सत्तविहं नवविहं वा, कम्मं च नोकसायजं ॥११॥
नेरइयतिरिक्खाउं, मणुस्साउं तहेव य ।
देवाउयं चउत्थं तु, आउकम्मं चउव्विहं ॥१२॥
नामकम्मं तु दुविहं, सुहमसुहं च आहियं ।
सुहस्स उ बहू भेया, एमेव असुहस्स वि ॥१३॥
गोयं कम्मं दुविहं, उच्चं नीयं च आहियं ।
उच्चं अट्ठविहं होइ, एवं नीयं पि आहियं ॥१४॥
दाणे लाभे य भोगे य, उवभोगे वीरिए तहा ।
पंचविहमंतरायं, समासेण वियाहियं ॥१५॥
एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया ।
पएसग्गं खेत्तकाले य, भावं च उत्तरं सुण ॥१६॥
सव्वेसिं चेव कम्माणं, पएसग्गमणंतगं ।
[1]गंठियसत्ताईयं, अंतो सिद्धाण आहियं ॥१७॥

१ गंठि (य) सत्ताऽणाइं ।

सव्वजीवाण कम्म तु, संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेण बद्धग ॥१८॥
उदहीसरिसनामाण, तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९॥
आवरणिज्जाण दुण्हंपि, वेयणिज्जे तहेव य ।
अन्तराए य कम्मम्मि, ठिई एसा वियाहिया ॥२०॥
उदहीसरिसनामाण सत्तरिं कोडिकोडिओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥२१॥
तेत्तीस सागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥२२॥
उदहीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडिओ ।
नामगोत्ताण उक्कोसा, अट्ठमुहुत्ता जहन्निया ॥२३॥
सिद्धाणणन्तभागो य, अणुभागा हवन्ति उ ।
सव्वेसु वि पएसग्गं, सव्वजीवेसु इच्छियं ॥२४॥
तम्हा एएसि कम्माण अणुभागा वियाणिया ।
एएसि संवरे चेव, खवणे य जए बुहो ॥२५॥ त्ति बेमि

॥ कम्मप्पयडी समत्ता ॥३३॥

॥ अह लेसज्झयणं चउत्तीसइमं अज्झयणं ॥

लेसज्झयणं पवक्खामि, आणुपुव्विं जहक्कमं ।
छण्हंपि कम्मलेसाणं अणुभावे सुणेह मे ॥१॥
नामाइं वण्णरसगन्धफासपरिणामलक्खणं ।
ठाणं ठिइं गइं चाउं, लेसाणं तु सुणेह मे ॥२॥
किण्हा नीला य काऊ य, तेऊ पम्हा तहेव य ।
सुक्कलेसा य छट्ठा य, नामाइं तु जहक्कमं ॥३॥

जीमूयनिद्धसंकासा, गवलरिट्ठगसन्निभा ।
खंजंजणनयणनिभा किण्हलेसा उ वण्णओ ॥४॥
नीलासोगसंकासा, चासपिच्छसमप्पभा ।
वेरुलियनिद्धसंकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥५॥
अयसीपुप्फसंकासा, कोइलच्छदसन्निभा ।
पारेवयगीवनिभा, काऊलेसा उ वण्णओ ॥६॥
हिंगुलयधाउसंकासा तरुणाइच्चसन्निभा ।
सुयतुंडपईवनिभा, तेउलेसा उ वण्णओ ॥७॥
हरियालभेयसंकासा, हलिद्दाभेयसमप्पभा[१] ।
सणासणकुसुमनिभा, पम्हलेसा उ वण्णओ ॥८॥
संखंककुन्दसंकासा खीरपूरसमप्पभा ।
रययहारसंकासा, सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥९॥

जह कडुयतुम्बगरसो,
निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो,
रसो य किण्हाए नायव्वो ॥१०॥
जह तिकडुयस्स य रसो,
तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो,
रसो उ नीलाए नायव्वो ॥११॥
जह तरुणअम्बगरसो,
तुवरकविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो,
रसो उ काऊए नायव्वो ॥१२॥

---
१ हलिद्दाभेदसन्निभा ।

जह परिणयम्बगरसो,
पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ तेऊए नायव्वो ॥१३॥
वरवारुणीए व रसो,
विविहाण व आसवाण जारिसओ।
महुमेरगस्स व रसो,
एत्तो पम्हाए परएणं ॥१४॥
खज्जूरमुद्दियरसो, खीररसो खण्डसक्कररसो वा।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ सुक्काए नायव्वो ॥१५॥
जह गोमडस्स गन्धो सुणगमडस्स व जहा अहिमडस्स।
एत्तो वि अणन्तगुणो लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१६॥
जह सुरहिकुसुमगन्धो, गन्धवासाण पिस्समाणाणं।
एत्तो वि अणन्तगुणो पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥१७॥
जह करगयस्स फासो गोजिब्भाए य सागपत्ताणं।
एत्तो वि अणन्तगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१८॥
जह बूरस्स व फासो, नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं।
एत्तो वि अणंतगुणो पसत्थलेसाण तिण्हंपि ॥१९॥
तिविहो व नवविहो वा सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा।
दुसओ तेयालो वा, लेसाणं होइ परिणामो ॥२०॥
पंचासवप्पवत्तो, तीहिं अगुत्तो छसु अविरओ य।
तिव्वारम्भपरिणओ, खुद्दो साहसिओ नरो ॥२१॥
निद्धंधसपरिणामो, निस्संसो अजिइन्दिओ।
एयजोगसमाउत्तो, किण्हलेसं तु परिणमे ॥२२॥
इस्साअमरिसअतवो अविज्जमाया अहीरिया।
गिद्धी पओसे य सढे, पमत्ते रसलोलुए ॥२३॥

(सायगवेसए य) आरम्भाओ अविरओ, खुद्दो साहस्सिओ नरो
पयजोगसमाउत्तो, नीललेसं तु परिणमे ॥२४॥
वंके वक्कसमायारे, नियडिल्ले अणुज्जुए।
पलिउंचगओवहिए, मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥२५॥
उप्फालगदुट्ठवाई य, तेणे यावि य मच्छरी।
एयजोगसमाउत्तो, काऊलेसं तु परिणमे ॥२६॥
नीयावित्ती अचवले अमाई अकुऊहले।
विणीयविणए दन्ते, जोगवं उवहाणवं ॥२७॥
पियधम्मे दढधम्मेऽवज्जभीरू हिएसए।
एयजोगसमाउत्तो, तेउलेसं तु परिणमे ॥२८॥
पयणुकोहमाणे य, मायालोभे य पयणुए।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा, जोगवं उवहाणवं ॥२९॥
तहा पयणुवाई य, उवसन्ते जिइन्दिए।
एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेसं तु परिणमे ॥३०॥
अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, धम्मसुक्काणि झायए।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥३१॥
सरागे वीयरागे वा, उवसन्ते जिइन्दिए।
एयजोगसमाउत्तो, सुक्कलेसं तु परिणमे ॥३२॥
अस्सखिज्जाणोसप्पिणीण, उस्सप्पिणीण जे समया।
संखाईया लोगा, लेसाण हवन्ति ठाणाइं ॥३३॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तहिया।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा किण्हलेसाए ॥३४॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया।
उक्कोसा होई ठिई नायव्वा नीललेसाए ॥३५॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया।
[illegible] ठिई, नायव्वा काउलेसाए ॥३६॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दोण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा तेउलेसाए ॥३७॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस होन्ति य सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥३८॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥३९॥
एसा खलु लेसाणं, ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ ।
चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिइं तु वोच्छामि ॥४०॥
दस वाससहस्साइं, काऊए ठिई जहन्निया होइ ।
तिण्णुदही पलियोवम, असंखभागं च उक्कोसा ॥४१॥
तिण्णुदही पलिओवममसंखभागो जहन्नेण नीलठिई ।
दस उदही पलिओवममसंखभागं च उक्कोसा ॥४२॥
दसउदही पलिओवमअसंखभागं जहन्निया होइ ।
तेत्तीससागराइं उक्कोसा, होइ किण्हाए लेसाए ॥४३॥
एसा नेरइयाणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाणं ॥४४॥
अन्तोमुहुत्तमद्धं, लेसाण ठिई जहिं जहिं जाउ ।
तिरियाण नराणं वा, वज्जित्ता केवलं लेसं ॥४५॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना उक्कोसा होइ पुव्वकोडीओ ।
नवहि वरिसेहि ऊणा नायव्वा सुक्कलेसाए ॥४६॥

एसा तिरियनराणं,
लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि
लेसाण ठिइ उ देवाणं ॥४७॥

दस वाससहस्साइं
किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।

पलियमसंखिज्जइमो,
उक्कोसो होइ किण्हाए ॥४८॥
जा किण्हाए ठिई खलु,
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं नीलाए,
पलियमसंखं च उक्कोसा ॥४९॥
जा नीलाए ठिई खलु,
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं काऊए,
पलियमसंखं च उक्कोसा ॥५०॥
तेण परं वोच्छामि, तेऊलेसा जहा सुरगणाणं।
भवणवइवाणमंतरजोइसवेमाणियाणं च ॥५१॥
पलिओवमं जहन्ना, उक्कोसा सागरा उ दुन्नहिया।
पलियमसंखेज्जेणं, होइ भागेण तेऊए ॥५२॥
दसवाससहस्साइं, तेऊए ठिई जहन्निया होइ।
दुन्नुदही पलिओवमअसंखभागं च उक्कोसा ॥५३॥
जा तेऊए ठिई खलु,
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं पम्हाए,
दस उ मुहुत्ताहियाइं उक्कोसा ॥५४॥
जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं सुक्काए, तेत्तीसमुहुत्तमब्भहिया ॥५५॥
किण्हा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ।
एयाहिं तिहिं वि जीवो, दुग्गइं उववज्जइ ॥५६॥
तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि वि एयाओ धम्मलेसाओ।
एयाहिं तिहिं वि जीवो, सुग्गइं उववज्जइ ॥५७॥

लेसाहिं सव्वाहिं, पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ॥५८॥
लेसाहिं सव्वाहिं, चरिमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे होइ जीवस्स ॥५९॥
अन्तमुहुत्तम्मि गए, अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेव ।
लेसाहिं परिणयाहिं, जीवा गच्छन्ति परलोयं ॥६०॥
तम्हा एयासि लेसाणं, अणुभावं वियाणिया ।
अप्पसत्थाओ वज्जित्ता, पसत्थाओऽहिट्ठिए मुणी ॥६१॥ त्ति बेमि

॥ लेसज्झयणं समत्तं ॥३४॥

॥ अह अणगारिज्जं णाम पचतीसइमं अज्झयणं ॥

सुणेह मे, एगग्गमणा, मग्गं बुद्धेहि देसियं ।
जमायरन्तो भिक्खू, दुक्खाणन्तकरे भवे ॥१॥
गिहवासं परिच्चज्ज, पवज्जामस्सिए मुणी ।
इमे संगे वियाणिज्जा, जेहिं सज्जन्ति माणवा ॥२॥
तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अबम्भसेवणं ।
इच्छाकामं च लोभं च, संजओ परिवज्जए ॥३॥
मणोहरं चित्तघरं, मल्लधूवेण वासियं ।
सकवाडं पण्डुरुल्लोयं, मणसावि न पत्थए ॥४॥
इन्दियाणि उ भिक्खुस्स, तारिसम्मि उवस्सए ।
दुक्कराइं निवारेउं, कामरागविवड्ढणे ॥५॥
सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एक्कओ ।
पइरिक्के परकडे वा, वासं तत्थाभिरोयए ॥६॥
फासुयम्मि अणाबाहे, इत्थीहिं अणभिद्दुए ।
तत्थ संकप्पए वासं, भिक्खू परमसंजए ॥७॥

न सयं गिहाइं कुविज्जा, णेव अन्नेहिं कारए ।
गिहकम्मसमारम्भे, भूयाणं दिस्सए वहो ।।८।।
तसाण थावराण च, सुहुमाण बादराण य ।
तम्हा गिहसमारम्भं, संजओ परिवज्जए ।।९।।
तहेव भत्तपाणेसु, पयणे पयावणेसु य ।
पाणभूयदयट्ठाए, न पए न पयावए ।।१०।।
जलधन्ननिस्सिया जीवा, पुढवीकट्ठनिस्सिया ।
हम्मन्ति भत्तपाणेसु, तम्हा भिक्खू न पयावए ।।११।।
विसप्पे सव्वओ धारे, बहुपाणिविणासणे ।
नत्थि जोइसमे सत्थे, तम्हा जोइं न दीवए ।।१२।।
हिरण्णं जायरूवं च, मणसा वि न पत्थए ।
समलेट्ठुकंचणे भिक्खू, विरए कयविक्कए ।।१३।।
किणन्तो कइओ होइ, विक्किणन्तो य वाणिओ ।
कयविक्कयम्मि वट्टन्तो, भिक्खू न भवइ तारिसो ।।१४।।
भिक्खियव्वं न केयव्वं, भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा ।
कयविक्कओ महादोसो, भिक्खावित्ती सुहावहा ।।१५।।
समुयाणं उंछमेसिज्जा, जहासुत्तमणिन्दियं ।
लाभालाभम्मि संतुट्ठे, पिण्डवायं चरे मुणी ।।१६।।
अलोले न रसे गिद्धे, जिब्भादन्ते अमुच्छिए ।
न रसट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी ।।१७।।
अच्चणं रयणं चेव, वन्दणं पूयणं तहा ।
इड्ढीसक्कारसम्माणं, मणसा वि न पत्थए ।।१८।।
सुक्कज्झाणं झियाएज्जा, अणियाणे अकिंचणे ।
वोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ ।।१९।।

निज्जूहिऊण आहारं, कालधम्मे उवट्ठिए ।
¹जहिऊण माणुसं बोन्दिं, पहू दुक्खा विमुच्चई ॥२०॥
निम्ममो निरहंकारो, वीयरागो अणासवो ।
संपत्तो केवलं नाणं, सासयं परिणिव्वुए ॥२१॥ त्ति बेमि ।

॥ अणगारज्झयणं समत्तं ॥३५॥

॥ अह जीवाजीवविभत्ती णाम छत्तीसइमं अज्झयणं ॥

जीवाजीवविभत्तिं मे, सुणेहेगमणा इओ ।
जं जाणिऊण भिक्खू, सम्मं जयइ संजमे ॥१॥
जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए ।
अजीवदेसमागासे, अलोगे से वियाहिए ॥२॥
दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा ।
परूवणा तेसिं भवे, जीवाणमजीवाण य ॥३॥
रूविणो चेव रूवी य, अजीवा दुविहा भवे ।
अरूवी दसहा वुत्ता, रूविणो य चउव्विहा ॥४॥
धम्मत्थिकाए तद्देसे, तप्पएसे य आहिए ।
अहम्मे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए ॥५॥
आगासे तस्स देसे य, तप्पएसे य आहिए ।
अद्धासमए चेव अरूवी दसहा भवे ॥६॥
धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया ।
लोगालोगे य आगासे, समए समयखेत्तिए ॥७॥
धम्माधम्मागासा, तिन्निवि एए अणाइया ।
अपज्जवसिया चेव, सव्वद्धं तु वियाहिए ॥८॥
समएवि संतइं पप्प एवमेव वियाहिया ।
आएसं पप्प साईए, सपज्जवसिएवि य ॥९॥

1 चइऊण ।

खन्धा य खन्धदेसा य, तप्पएसा तहेव य।
परमाणुणो य बोधव्वा, रूविणो य चउव्विहा ॥१०॥
एगत्तेण पुहुत्तेण, खन्धा य परमाणु य।
लोएगदेसे लोए य भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥११॥
(सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा।)
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥१२॥
संतइं पप्प तेऽणाइ अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसिया वि य ॥१३॥
असंखकालमुक्कोसं, एक्को समओ जहन्नयं।
अजीवाण य रूवीणं, ठिई एसा वियाहिया ॥१४॥
अणन्तकालमुक्कोसं, एक्को समओ जहन्नयं।
अजीवाण य रूवीणं अन्तरेयं वियाहियं ॥१५॥
वण्णओ गन्धओ चेव, रसओ फासओ तहा।
संठाणओ य विन्नेओ, परिणामो तेसि पंचहा ॥१६॥
वण्णओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पकित्तिया।
किण्हा नीला य लोहिया हलिद्दा सुक्किला तहा ॥१७॥
गन्धओ परिणया जे उ, दुविहा ते वियाहिया।
सुब्भिगन्धपरिणामा, दुब्भिगन्धा तहेव य ॥१८॥
रसओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पकित्तिया।
तित्तकडुयकसाया, अम्बिला महुरा तहा ॥१९॥
फासओ परिणया जे उ, अट्ठहा ते पकित्तिया।
कक्खडा मउया चेव गरुया लहुया तहा ॥२०॥
सीया उण्हा य निद्धा य, तहा लुक्खा य आहिया।
इय फासपरिणया एए, पुग्गला समुदाहिया ॥२१॥
संठाणओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पकित्तिया।
परिमण्डला य वट्टा य, तसा चउरंसमायया ॥२२॥

वण्णओ जे भवे किण्हे, भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥२२॥
वण्णओ जे भवे नीले, भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥२३॥
वण्णओ लोहिए जे उ, भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओवि य ॥२४॥
वण्णओ पीयए जे उ, भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥२५॥
वण्णओ सुक्किले जे उ, भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ।२६॥
गन्धओ जे भवे सुब्भी, भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥२७॥
गन्धओ जे भवे दुब्भी, भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओवि य ॥२८॥
रसओ तित्तए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए सठाणओवि य ॥२९॥
रसओ कडुए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥३०॥
रसओ कसाए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥३१॥
रसओ अम्बिले जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ।३२॥
रसओ महुरए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥३३॥
फासओ कक्खडे जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ ---ओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥३४॥

फासओ मउए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥३६॥
फासओ गुरुए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥३७॥
फासओ लहुए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥३८॥
फासए सीयए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओवि य ॥३९॥
फासओ उण्हए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥४०॥
फासओ निद्धए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥४१॥
फासओ लुक्खए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥४२॥
परिमण्डलसठाणे, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए फासओवि य ॥४३॥
सठाणओ भवे वट्टे, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए फासओवि य ॥४४॥
सठाणओ भवे तसे, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए फासओवि य ॥४५॥
सठाणओ य चउरसे, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए फासओवि य ॥४६॥
जे आययसठाणे, भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव, भइए फासओवि य ॥४७॥
एसा अजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया ।
इत्तो जीवविभत्तिं, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥४८॥

ससारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा वियाहिया ।
सिद्धा णेगविहा वुत्ता, त मे कित्तयओ सुण ॥४६॥
इत्थीपुरिससिद्धा य तहेव य नपुसगा ।
सलिंगे अन्नलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ॥५०॥
उक्कोसोगाहणाए य, जहन्नमज्झिमाइ य ।
उड्ढ अहे य तिरिय च, समुद्दम्मि जलम्मि य ॥५१॥
दस य नपुसएसु, वीस इत्थियासु य ।
पुरिसेसु य अट्ठसय, समएणेगेण सिज्झइ ॥५२॥
चत्तारि य गिहलिंगे, अन्नलिंगे दसेव य ।
सलिंगेण अट्ठसयं समएणेगेण सिज्झइ ॥५३॥
उक्कोसोगाहणाए य, सिज्झन्ते जुगव दुवे ।
चत्तारि जहन्नाए मज्झे[1] अट्ठुत्तर सय ॥५४॥
चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे
तओ जले वीसमहे तहेव य ।
सय च अट्ठुत्तर तिरियलोए,
समएणेगेण सिज्झइ धुव ॥५५॥
कहिं पडिहया सिद्धा? कहिं सिद्धा पइट्ठिया?
कहिं बोन्दि, चइत्ताण? कत्थ गन्तूण सिज्झई? ॥५६॥
अलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया ।
इह बोन्दि चइत्ताण, तत्थ गन्तूण सिज्झइ ॥५७॥
बारसहिं जोयणेहिं सव्वट्ठस्सुवरिं भवे ।
ईसिपब्भारनामा उ, पुढवी छत्तसठिया ॥५८॥
पणयालसयसहस्सा, जोयणाण तु आयया ।
तावइय चेव वित्थिण्णा तिगुणो साहिय परिरओ ॥५९॥

1 अवमज्झे ।

अट्ठजोयणबाहल्ला, सा मज्झम्मि वियाहिया ।
परिहायन्ती चरिमन्ते, मच्छिपत्ताउ तणुयरी ॥६०॥
अज्जुणसुवण्णगमई,
सा पुढवी निम्मला सहावेण ।
उत्ताणगछत्तगसंठिया य
भणिया जिणवरेहिं ॥६१॥
संखंककुन्दसंकासा, पण्डुरा निम्मला सुहा ।
सीयाए जोयणे तत्तो लोयन्तो उ वियाहिओ ॥६२॥
जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसो उवरिमो भवे ।
तस्स कोसस्स छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६३॥
तत्थ सिद्धा महाभागा, लोयग्गम्मि पइट्ठिया ।
भवपवञ्चओ मुक्का, सिद्धिं वरगइं गया ॥६४॥
उस्सेहो जस्स जो होइ, भवम्मि चरिमम्मि उ ।
तिभागहीणा तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६५॥
एगत्तेण साइया, अपज्जवसियावि य ।
पुहत्तेण अणाइया, अपज्जवसियावि य ॥६६॥
अरूविणो जीवघणा नाणदंसणसन्निया ।
अउलं सुहं संपत्ता, उवमा जस्स नत्थि उ ॥६७॥
लोगेगदेसे ते सव्वे, नाणदंसणसन्निया ।
संसारपारनित्थिण्णा, सिद्धिं वरगइं गया ॥६८॥
संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते वियाहिया ।
तसा य थावरा चेव, थावरा तिविहा तहिं ॥६९॥
पुढवी आउजीवा य, तहेव य वणस्सई ।
इच्चेए थावरा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥७०॥
दुविहा उ पुढवीजीवा सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥७१॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया।
सण्हा खरा य बोधव्वा, सण्हा सत्तविहा तहिं ॥७२॥
किण्हा नीला य रुहिरा य, हलिद्दा सुक्किला तहा।
पंडुपणगमट्टिया, खरा छत्तीसईविहा ॥७३॥

पुढवी य सक्करा वालुया य,
उवले सिला य लोणूसे।
अय-तम्ब तउय-सीसग,
रुप्प-सुवण्णे य वइरे य ॥७४॥
हरियाल हिंगुलए,
मणोसिला सासगंजण-पवाले।
अब्भपडलब्भवालुय,
बायरकाए मणिविहाणे ॥७५॥

गोमेज्जए य रुयगे, अंके फलिहे य लोहियक्खे य।
मरगय मसारगल्ले, भुयमोयग-इन्दनीले य ॥७६॥
चन्दण गेरुय हंसगब्भे, पुलए सोगन्धिए य बोधव्वे।
चन्दप्पहवेरुलिए, जलकन्ते सूरकन्ते य ॥७७॥
एए खरपुढवीए, भेया छत्तीसमाहिया।
एगविहमनाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥७८॥
सुहुमा य सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा।
इत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥७९॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥८०॥
बावीससहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे।
आउट्ठिई पुढवीणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥८१॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायठिई पुढवीणं,

अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, पुढवीजीवाण अन्तरं ।।८३।।
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ।।८४।।
दुविहा आउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ।।८५।।
बायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया ।
सुद्धोदए य उस्से य हरतणू महिया हिमे ।।८६।।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा ।।८७।।
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साइया सपज्जवसियावि य ।।८८।।
सत्तेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई आऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ।।८९।।
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई आऊणं तं कायं तु अमुंचओ ।।९०।।
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, आऊजीवाण अन्तरं ।।९१।।
एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ।।९२।।
दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ।।९३।।
बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया ।
साहारणसरीरा य, पत्तेगा य तहेव य ।।९४।।
पत्तेगसरीराओऽणेगहा, ते पकित्तिया ।
रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तहा ।।९५।।

वलया पव्वगा कुहुणा, जलरुहा ओसही तहा।
हरियकाया बोधव्वा, पत्तेगा इह आहिया ॥९६॥
साहारणसरीराओऽणेगहा, ते पकित्तिया।
आलुए मूलए चेव, सिंगबेरे तहेव य ॥९७॥
हिरिली सिरिली सस्सिरिली, जावई केयकन्दली।
पलण्डुलसणकन्दे य, कन्दली य कुहुव्वए ॥९८॥
लोहिणीहूयथीहूय, कुहगा य तहेव य।
कण्हे य वज्जकन्दे य, कन्दे सूरणए तहा ॥९९॥
अस्सकण्णी य बोधव्वा, सीहकण्णी तहेव य।
मुसुण्ढी य हलिद्दा य, णेगहा एवमायओ ॥१००॥
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया।
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ॥१०१॥
संतइं पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१०२॥
दस चेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे।
वणप्फईण आउ तु, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१०३॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायठिई पणगाणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥१०४॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढम्मि सए काए, पणगजीवाण अन्तरं ॥१०५॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१०६॥
इच्चेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया।
इत्तो उ तसे तिविहे, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥१०७॥

तेऊ वाऊ य बोधव्वा, उराला य तसा तहा।
इच्चेए तसा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१०८॥
दुविहा तेउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥१०९॥
बायरा जे उ पज्जत्ताऽणेगहा ते वियाहिया।
इंगाले मुम्मुरे अगणी अच्चिजाला तहेव य ॥११०॥
उक्का विज्जू य बोधव्वा णेगहा एवमायओ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥११२॥
संतइं पप्पऽणाइया अपज्जवसियावि य।
ठिइं पडुच्च साइया सपज्जवसियावि य ॥११३॥
तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया।
आउठिई तेऊणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥११४॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायठिई तेऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥११५॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढम्मि सए काए, तेउजीवाण अन्तरं ॥११६॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥११७॥
दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥११८॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, पञ्चहा ते पकित्तिया।
उक्कलिया मण्डलिया घणगुञ्जा सुद्धवाया य ॥११९॥
संवट्टगवाये य, णेगहा एवमायओ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥१२०॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥१२१॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१२२॥
तिण्णेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई वाऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१२३॥
असंखकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई वाऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥१२४॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए वाउजीवाण अन्तरं ॥१२५॥
एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१२६॥
उराला तसा जे उ, चउहा ते पकित्तिया ।
बेइन्दिया-तेइन्दिया-चउरो पंचिन्दिया तहा ॥१२७॥
बेइन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१२८॥
किमिणो सोमंगला चेव, अलसा माइवाहया ।
वासीमुहा य सिप्पिया संखा संखणगा तहा ॥१२९॥
पल्लोयाणुल्लया चेव तहेव य वराडगा ।
जलूगा जालगा चेव चन्दणा य तहेव य ॥१३०॥
इइ बेइन्दिया एएऽणेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१३१॥
संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१३२॥
वासाइं बारसा चेव उक्कोसेण वियाहिया ।
बेइन्दिय आउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१३३॥

संखिज्जकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
बेइन्दियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥१३४॥
अणंतकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
बेइन्दियजीवाणं, अन्तरं च वियाहियं ॥१३५॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१३६॥
तेइन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१३७॥
कुन्थुपिवीलिउड्डंसा, उक्कलुद्देहिया तहा ।
तणहारकट्ठहारा य, मालुगा पत्तहारगा ॥१३८॥
कप्पासट्ठिमिंजा य, तिंदुगा तउसमिंजगा ।
सदावरी य गुम्मी य, बोधव्वा इन्दगाइया ॥१३९॥
इन्दगोवगमाइया, णेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१४०॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१४१॥
एगूणपण्णहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
तेइन्दियआउठिई, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१४२॥
संखिज्जकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
तेइन्दियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥१४३॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
तेइन्दियजीवाणं, अन्तरं तु वियाहियं ॥१४४॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१४५॥
चउरिन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१४६॥

अन्धिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तहा।
भमरे कीडपयंगे य, ढिंकुणे कुंकणे तहा ॥१४७॥
कुक्कुडे सिंगिरीडी य, नन्दावत्ते य विच्छुए।
डोले भिंगिरीडी य, विरिली अच्छिवेहए ॥१४८॥

अच्छिले माहए अच्छिरोडए,
विचित्ते चित्तपत्तए।
उहिंजलिया जलकारी य,
नीया [1]तन्तवगाइया ॥१४९॥

इय चउरिन्दिया एए, ऽणेगहा एवमायओ।
[2]लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१५०॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ॥१५१॥
छच्चेव य मासाऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
चउरिन्दियआउठिई, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१५२॥
संखिज्जकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
चउरिन्दियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥१५३॥
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
चउरिन्दियजीवाणं, अन्तरं च वियाहियं ॥१५४॥
एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ।
संठाणदेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१५५॥
पंचिन्दिया उ जे जीवा, चउव्विहा ते वियाहिया।
नेरइयतिरिक्खा य, मणुया देवा य आहिया ॥१५६॥
नेरइया सत्तविहा, पुढवीसु सत्तसु भवे।
रयणाभसक्कराभा, वालुयाभा य आहिया ॥१५७॥

---

१ तंतवगाइया। २ लोगस्स एगदेसम्मि सव्वे परिकित्तिया।

पङ्काभा धूमाभा, तमा तमतमा तहा ।
इइ नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥१५८॥
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे उ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१५९॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसियावि य ॥१६०॥
सागरोवममेगं तु उक्कोसेण वियाहिया ।
पढमाए जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥१६१॥
तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
दोच्चाए जहन्नेणं, एगं तु सागरोवमं ॥१६२॥
सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
तइयाए जहन्नेणं, तिण्णेव सागरोवमा ॥१६३॥
दस सागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
चउत्थीए जहन्नेणं सत्तेव सागरोवमा ॥१६४॥
सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
पंचमाए जहन्नेणं, दस चेव सागरोवमा ॥१६५॥
बावीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
छट्ठीए जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥१६६॥
तेत्तीस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
सत्तमाए जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा ॥१६७॥
जा चेव य आउठिई, नेरइयाणं वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई, जहन्नुक्कोसिया भवे ॥१६८॥
अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, नेरइयाणं तु अन्तरं ॥१६९॥
एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१७०॥

पंचिन्दियतिरिक्खाओ
दुविहा ते वियाहिया।
सम्मुच्छिमतिरिक्खाओ,
गब्भवक्कंतिया तहा ॥१७१॥

दुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा थलयरा तहा।
नहयरा य बोधव्वा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१७२॥

मच्छा य कच्छभा य गाहा य मगरा तहा।
सुसुमारा य बोधव्वा पंचहा जलयराहिया ॥ ७३॥

लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया।
एत्तो कालविभागं तु वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१७४॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य ॥१७५॥

एगा य पुव्वकोडी, उक्कोसेण वियाहिया।
आउठिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७६॥

पुव्वकोडिपुहत्तं तु उक्कोसेण वियाहिया।
कायठिई जलयराणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नय ॥१७७॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नय।
विजढंमि सए काए, जलयराणं तु अन्तरं ॥१७८॥

(एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥)

चउप्पया य परिसप्पा, दुविहा थलयरा भवे।
चउप्पया चउविहा उ, ते मे कित्तयओ सुण ॥१७९॥

एगखुरा दुखुरा चेव, गण्डीपयसणप्पया।
हयमाइगोणमाइगयमाइसीहमाइणो ॥१८०॥

भुओरगपरिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा भवे ।
गोहाई अहिमाई य, एक्केक्काणेगहा भवे ॥१८१॥
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१८२॥
संतइं पप्प ऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१८३॥
पलिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई थलयराणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१८४॥
पलिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
कायठिई थलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१८५॥
कालमणन्तमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, थलयराणं तु अन्तरं ॥१८६॥

चम्मे उ लोमपक्खी य,
तइया समुग्गपक्खिया ।
विययपक्खी य बोधव्वा,
पक्खिणो य चउव्विहा ॥१८७॥

लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१८८॥
संतइं पप्प ऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिय वि य ॥१८९॥
पलिओवमस्स भागो असंखेज्जइमो भवे ।
आउठिई खहयराणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९०॥
असंखभाग पलियस्स, उक्कोसेण उ साहिया ।
पुव्वकोडीपुहत्तेणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९१॥

कायठिई खहयराणं, अन्तरे तेसिमे भवे ।
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥१९२॥
वण्णओ गन्धओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१९३॥
मणुया दुविहभेया उ, ते मे कित्तयओ सुण ।
संमुच्छिमा य मणुया, गब्भवक्कन्तिया तहा ॥१९४॥
गब्भवक्कन्तिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया ।
कम्मअकम्मभूमा य, अन्तरद्दीवया तहा ॥१९५॥
पन्नरस तीसविहा, भेया अट्ठवीसइं ।
संखा उ कमसो तेसिं, इइ एसा वियाहिया ॥१९६॥
संमुच्छिमाण एसेव, भेओ होइ वियाहिओ ।
लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे वि वियाहिया ॥१९७॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१९८॥
पलिओवमाइं तिण्णिवि, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्ठिई मणुयाणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९९॥
पलिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
पुव्वकोडिपुहत्तेणं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥२००॥
कायठिई मणुयाणं, अन्तरं तेसिमं भवे ।
अणन्तकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥२०१॥
वण्णओ गन्धओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥२०२॥
देवा चउव्विहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण ।
भोमिज्जवाणमन्तरजोइसवेमाणिया तहा ॥२०३॥

हेट्ठिमाहेट्ठिमा चेव, हेट्ठिमामज्झिमा तहा।
हेट्ठिमाउवरिमा चेव, मज्झिमाहेट्ठिमा तहा ॥२१२॥

मज्झिमामज्झिमा चेव
मज्झिमाउवरिमा तहा।
उवरिमाहेट्ठिमा चेव,
उवरिमामज्झिमा तहा ॥२१३॥

उवरिमाउवरिमा चेव, इय गेविज्जगा सुरा।
विजया वेजयन्ता य जयन्ता अपराजिया ॥२१४॥

सव्वट्ठसिद्धगा चेव, पंचहाणुत्तरा सुरा।
इय वेमाणिया एएऽणेगहा एवमायओ ॥२१५॥

लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे वि वियाहिया।
इत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥२१६॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि य।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥२१७॥

साहियं सागरं एक्कं उक्कोसेण ठिई भवे।
भोमेज्जाणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥२१८॥

(पलिओवमं दो ऊणा उक्कोसेण वियाहिया।
असुरिन्दवज्जेताणं जहन्ना दससहस्सगा ॥)

पलिओवममेगं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
वन्तराणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥२१९॥

पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं।
पलिओवमट्ठभागो, जोइसेसु जहन्निया ॥२२०॥

दो चेव सागराइं, उक्कोसेण वियाहिया।
सोहम्मम्मि जहन्नेणं, एगं च पलिओवमं ॥२२१॥

सागरा साहिया दुन्नि, उक्कोसेण वियाहिया ।
ईसाणम्मि जहन्नेणं, साहियं पलिओवमं ॥२२२॥
सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे ।
सणंकुमारे जहन्नेणं, दुन्नि उ सागरोवमा ॥२२३॥
साहिया सागरा सत्त उक्कोसेण ठिई भवे ।
माहिन्दम्मि जहन्नेणं, साहिया दुन्नि सागरा ॥२२४॥
दस चेव सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
बम्भलोए जहन्नेणं सत्त ऊ सागरोवमा ॥२२५॥
चउद्दससागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
लन्तगम्मि जहन्नेणं, दस उ सागरोवमा ॥२२६॥
सत्तरससागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
महासुक्के जहन्नेणं, चोद्दस सागरोवमा ॥२२७॥
अट्ठारस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
सहस्सारम्मि जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥२२८॥
सागरा अउणवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
आणयम्मि जहन्नेणं, अट्ठारस सागरोवमा ॥२२९॥
वीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पाणयम्मि जहन्नेणं, सागरा अउणवीसई ॥२३०॥
सागरा इक्कवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
आरणम्मि जहन्नेणं, वीसई सागरोवमा ॥२३१॥
बावीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
अच्चुयम्मि जहन्नेणं, सागरा इक्कवीसई ॥२३२॥
तेवीससागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पढमम्मि जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा ॥२३३॥

चउवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
बिइयम्मि जहन्नेणं, तेवीसं सागरोवमा ॥२३३॥

पणवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
तइयम्मि जहन्नेणं, चउवीसं सागरोवमा ॥२३४॥

छव्वीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउत्थम्मि जहन्नेणं, सागरा पणुवीसई ॥२३५॥

सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पञ्चमम्मि जहन्नेणं, सागरा उ छवीसई ॥२३७॥

सागरा अट्ठवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
छट्ठम्मि जहन्नेणं, सागरा सत्तवीसई ॥२३८॥

सागरा अउणतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
सत्तमम्मि जहन्नेणं, सागरा अट्ठवीसई ॥२३९॥

तीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
अट्ठमम्मि जहन्नेणं, सागरा अउणतीसई ॥२४०॥

सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
नवमम्मि जहन्नेणं, तीसई सागरोवमा ॥२४१॥

तेत्तीसा सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउसुंपि विजयाईसु, जहन्नेणेक्कतीसई ॥२४२॥

अजहन्नमणुक्कोसा, तेत्तीसं सागरोवमा ।
महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ॥२४३॥

जा चेव उ आउठिई, देवाणं तु वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई, जहन्नमुक्कोसिया भवे ॥२४४॥

... अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
... ए काए, देवाणं हुज्ज अन्तरं ॥२४५॥

एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥२४६॥

(अणन्तकालमुक्कोसं वासपुहुत्तं जहन्नगं ।
आणयाईण कप्पाणं गेविज्जाणं तु अन्तरं ॥

संखिज्जसागरुक्कोसं वासपुहुत्तं जहन्नगं ।
अणुत्तराणं य देवाणं अन्तरं तु वियाहियं)

संसारत्था य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया ।
रूविणो चेवऽरूवी य, अजीवा दुविहा वि य ॥२४७॥

इय जीवमजीवे य, सोच्चा सद्दहिऊण य ।
सव्वनयाण अणुमए, रमेज्जा संजमे मुणी ॥२४८॥

तओ बहूणि वासाणि सामण्णमणुपालिय ।
इमेण कम्मजोगेण, अप्पाणं संलिहे मुणी ॥२४९॥

बारसेव उ वासाइं, संलेहुक्कोसिया भवे ।
संवच्छरं मज्झिमिया, छम्मासा य जहन्निया ॥२५०॥

पढमे वासचउक्कम्मि विगई-निज्जूहणं करे ।
बिइए वासचउक्कम्मि, विचित्तं तु तवं चरे ॥२५१॥

एगन्तरमायामं, कट्टु संवच्छरे दुवे ।
तओ संवच्छरद्धं तु, नाइविगिट्ठं तवं चरे ॥२५२॥

तओ संवच्छरद्धं तु, विगिट्ठं तु तवं चरे ।
परिमियं चेव आयामं, तम्मि संवच्छरे करे ॥२५३॥

कोडीसहियमायामं, कट्टु संवच्छरे मुणी ।
मासद्धमासिएणं तु, आहारेण तवं चरे ॥२५४॥

कन्दप्पमाभिओगं च,
किब्बिसियं मोहमासुरत्तं च ।

पयाउ दुग्गईओ,
मरणम्मि विराहिया होन्ति ॥२५५॥

मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा उ हिंसगा।
इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥२५६॥

सम्मद्दंसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा।
इय जे मरन्ति जीवा, तसिं सुलहा भवे बोही ॥२५७॥

मिच्छादंसणरत्ता,
सनियाणा कण्हलेसमोगाढा।
इय जे मरन्ति जीवा,
तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥२५८॥

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करेन्ति भावेण।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होन्ति परित्तसंसारी ॥२५९॥

बालमरणाणि बहुसो,
अकाममरणाणि चेव य बहूणि।
मरिहिन्ति ते वराया,
जिणवयणं जे न जाणन्ति ॥२६०॥

बहुआगमविन्नाणा, समाहिउप्पायगा य गुणगाही।
एएण कारणेणं अरिहा आलोयणं सोउं ॥२६१॥

कन्दप्पकुक्कुयाइं, तह सीलसहावहासविगहाहिं।
विम्हावेन्तो वि परं कन्दप्पं भावणं कुणइ ॥२६२॥

मन्ताजोगं काउं, भूईकम्मं च जे पउंजन्ति।
साय-रस-इड्ढिहेउं अभिओगं भावणं कुणइ ॥२६३॥

नाणस्स केवलीणं धम्मायरियस्स संघसाहूणं।
माई अवण्णवाई, किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥२६४॥

अणुबद्धरोसपसरो, तह य निमित्तम्मि होइ पडिसेवी।

सत्थग्गहणं विसभक्खणं च,
जलणं च जलप्पवेसो य।
अणायारभण्डसेवी,
जम्मणमरणाणि बंधंति ॥२६६॥
इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए।
छत्तीसं उत्तरज्झाए, भवसिद्धियसंवुडे[1] ॥२६७॥ त्ति बेमि

॥ जीवाजीवविभत्ती समत्ता ॥३६॥

॥ उत्तरज्झयणसुत्तं समत्तं ॥



१-सम्मत।

॥ सिरी नंदीसुत्तं ॥

जयइ जगजीवजोणीवियाणओ, जगगुरू जगाणंदो ।
जगणाहो जगबंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥१॥
जयइ सुआणं पभवो, तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ ।
जयइ गुरू लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो ॥२॥
भद्दं सव्वजगुज्जोयगस्स, भद्दं जिणस्स वीरस्स ।
भद्दं सुरासुरनमंसियस्स, भद्दं धुयरयस्स ॥३॥
गुणभवणगहण सुयरयणभरिय दंसणविसुद्धरत्थागा ।
संघनगर[1] भद्दं ते, अखंडचारित्तपागारा ॥४॥
संजम-तव-तुंबारयस्स, नमो सम्मत्तपारियल्लस्स ।
अप्पडिचक्कस्स जओ, होउ सया संघचक्कस्स ॥५॥
भद्दं सीलपडागूसियस्स, तवनियमतुरयजुत्तस्स ।
संघरहस्स भगवओ, सज्झायसुनंदिघोसस्स ॥६॥
कम्मरयजलोहविणिग्गयस्स, सुयरयणदीहनालस्स ।
पंचमहव्वयथिरकण्णियस्स, गुणकेसरालस्स ॥७॥
सावगजणमहुयरि-परिवुडस्स, जिणसूरतेयबुद्धस्स ।
संघपउमस्स भद्दं, समणगणसहस्सपत्तस्स ॥८॥

१—भद्दंति

तवसंजममयलंछण, अकिरियराहुमुहदुद्धरिस निच्चं।
जय संघचंद निम्मलसम्मत्तविसुद्धजोण्हागा ॥९॥
परतित्थियगहपहनासगस्स, तवतेयदित्तलेसस्स।
नाणुज्जोयस्स जए, भद्दं दमसंघसूरस्स ॥१०॥
भद्दं धिइवेलापरिगयस्स सज्झायजोगमगरस्स।
अक्खोहस्स भगवओ, संघसमुद्दस्स रुंदस्स ॥११॥
सम्मद्दंसणवरवइरदढरूढगाढावगाढपेढस्स।
धम्मवररयणमंडियचामीयरमेहलागस्स ॥१२॥
नियमूसियकणयसिलायलुज्जलजलंतचित्तकूडस्स।
नंदणवणमणहरसुरभिसील गंधुद्धुमायस्स ॥१३॥
जीवदयासुंदरकंदरुद्दरियमुणिवरमइंदइन्नस्स।
हेउसयधाउपगलंतरयणदित्तोसहिगुहस्स ॥१४॥
संवरवरजलपगलियउज्झरपविरायमाणहारस्स।
सावगजणपउररवंतमोरनच्चंतकुहरस्स ॥१५॥
विणयनयपवरमुणिवरफुरंतविज्जुज्जलंतसिहरस्स।
विविहगुणकप्परुक्खगफलभरकुसुमाउलवणस्स ॥१६॥
नाणवररयणदिप्पंतकंतवेरुलियविमलचूलस्स।
वंदामि विणयपणओ, संघमहामंदरगिरिस्स ॥१७॥
*गुणरयणुज्जलकडयं सीलसुगंधितवमंडिउद्देसं।
सुयबारसंगसिहरं संघमहामंदरं वंदे ॥१८॥
नगररहचक्कपउमे चंदे सूरे समुद्दमेरुम्मि।
जो उवमिज्जइ सययं, तं संघगुणायरं वंदे ॥१९॥
[वंदे] उसभं अजियं संभवमभिनंदणसुमइसुप्पभसुपासं।
ससिपुप्फदंतसीयलसिज्जंसं वासुपुज्जं च ॥२०॥

*टीकायां तु म।

विमलमणंतं य धम्मं संतिं कुंथुं अरं च मल्लिं च ।
मुणिसुव्वयनमिनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥२०॥
पढमित्थ इंदभूई बीए पुण होइ अग्गिभूइत्ति ।
तइए य वाउभूई, तओ वियत्ते सुहम्मे य ॥२१॥
मंडिअ-मोरियपुत्ते अकंपिए चेव अयलभाया य ।
मेयज्जे य पहासे गणहरा हुंति वीरस्स ॥२२॥
निव्वुइपहसासणयं, जयइ सया सव्वभावदेसणयं ।
कुसमयमयनासणयं जिणिंदवरवीरसासणयं ॥२३॥
सुहम्मं अग्गिवेसाणं, जंबुनामं च कासवं ।
पभवं कच्चायणं वंदे, वच्छं सिज्जंभवं तहा ॥२४॥
जसभद्दं तुंगियं वंदे संभूयं चेव माढरं ।
भद्दबाहुं च पाइन्नं, थूलभद्दं च गोयमं ॥२५॥
एलावच्चसगोत्तं, वंदामि महागिरिं सुहत्थिं च ।
तत्तो कोसियगोत्तं, बहुलस्स सरिव्वयं वंदे ॥२६॥
हारियगुत्तं साइं च, वंदिमो हारियं च सामज्जं ।
वंदे कोसियगोत्तं, संडिल्लं अज्जजीयधरं ॥२७॥
तिसमुद्दखायकित्तिं, दीवसमुद्देसु गहियपेयालं ।
वंदे अज्जसमुद्दं अक्खुभियसमुद्दगंभीरं ॥२८॥
भणगं करगं झरगं, पभावगं णाणदंसणगुणाणं ।
वंदामि अज्जमंगुं सुयसागरपारगं धीरं ॥२९॥
*वंदामि अज्जधम्मं, तत्तो वंदे य भद्दगुत्तं च ।
तत्तो य अज्जवइरं तवनियमगुणेहिं वइरसमं ॥३०॥
*वंदामि अज्जरक्खियखमणे रक्खियचरित्तसव्वस्से ।
रयणकरंडगभूओ, अणुओगो रक्खिओ जेहिं ॥३२॥

* वृत्तौ टीकायां न [illegible] ।

नाणम्मि दंसणम्मि य, तवविणए णिच्चकालमुज्जुत्तं ।
अज्जं नंदिलखमणं, सिरसा वंदे पसन्नमणं ॥३३॥
वड्ढउ वायगवंसो, जसवंसो अज्जनागहत्थीणं ।
वागरणकरणभंगियकम्मप्पयडीपहाणाणं ॥३४॥
जच्चंजणधाउसमप्पहाणमुद्दियकुवलयनिहाणं ।
वड्ढउ वायगवंसो रेवइनक्खत्तनामाणं ॥३५॥
अयलपुरा णिक्खंते कालियसुयआणुओगिए धीरे ।
बंभद्दीवगसीहे वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥३६॥
जेसिं इमो अणुओगो पयरइ अज्जावि अड्ढभरहम्मि ।
बहुनयरनिग्गयजसे, ते वंदे खंदिलायरिए ॥३७॥
तत्तो हिमवंतमहंतविक्कमे धिइपरक्कममणंते ।
सज्झायमणंतधरे, हिमवंते वंदिमो सिरसा ॥३८॥
कालियसुयअणुओगस्स धारए धारए य पुव्वाणं ।
हिमवंतखमासमणे, वंदे णागज्जुणायरिए ॥३९॥
मिउमद्दवसंपन्ने, अणुपुव्विं[1] वायगत्तणं पत्ते ।
ओहसुयसमायारे नागज्जुणवायए वंदे ॥४०॥
"गोविंदाणं पि नमो अणुओगविउलधारिणिंदाणं ।
णिच्चं खंतिदयाणं परूवणे दुल्लभिंदाणं ॥४१॥
*तत्तो य भूयदिन्नं निच्चं तवसंजमे अनिव्विण्णं ।
पंडियजणसामण्णं वंदामि संजमविहिण्णु ॥४२॥
वरकणगतवियचंपगविमउलवरकमलगब्भसरिवन्ने ।
भवियजणहिययदइए दयागुणविसारए धीरे ॥४३॥
अड्ढभरहप्पहाणे बहुविहसज्झायसुमुणियपहाणे ।
अणुओगियवरवसभे नाइलकुलवंसनंदिकरे ॥४४॥

1 अणुपुव्वी ।

[1]अगमुयहियपगब्भे वन्देऽहं भूयदिन्नमायरिए।
भवभयवुच्छेयकरे सीसे नागज्जुणरिसीणं ॥४५॥
सुमुणियनिच्चानिच्चं सुमुणियसुत्तत्थधारयं वन्दे।
[2]सब्भावुब्भावणया तत्थं लोहिच्चणामाणं ॥४६॥
अत्थमहत्थक्खाणिं सुसमणवक्खाणकहणनिव्वाणिं।
पयईए महुरवाणिं पयओ पणमामि दूसगणिं ॥४७॥
तवनियमसच्चसंजमविणयज्जवखंतिमद्दवरयाणं।
सील गुणगद्दियाणं अणुओगजुगप्पहाणाणं ॥४८॥
सुकुमालकोमलतले तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे।
पाए पावयणीणं पडिच्छयसएहिं पणिवइए ॥४९॥
जे अन्ने भगवन्ते कालियसुयआणुओगिए धीरे।
ते पणमिऊण सिरसा नाणस्स परूवणं वोच्छं ॥५०॥

इति।

सेल घण[1], कुडग[2], चालणि[3], परिपूणग[4], हंस[5], महिस[6], मेसे य[7] मसग[8], जलूग[9], बिराली[10], जाहग[11], गो[12], भेरी[13], आभीरी[14], ॥१॥

सा समासओ तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जाणिया, अजाणिया, दुव्वियड्ढा। जाणिया जहा गाहा-खीरमिव जहा हंसा जे घुट्टन्ति इह गुरुगुणसमिद्धा। दोसे य विवज्जन्ति तं जाणसु जाणियं परिसं ॥२॥

अजाणिया जहा—जा होइ पगइमहुरा मियछावयसीह कुक्कुडयभूआ। रयणमिव असंठविया अजाणिया सा भवे परिसा ॥३॥

१ भूयहियप्पगब्भे। २ वंदेऽहं लोहिच्चं सब्भावुब्भावणया। लिच्चं।

दुविहम्मा जहा—न य कथइ निम्माओ न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेण। वत्थि व्व वायपुण्णो फुट्टइ गामिल्लयवियड्ढो[1]॥४

(सूत्र) नाणं पंचविहं पण्णत्तं तंजहा आभिणिबोहियनाणं, सुयनाणं, ओहिनाणं, मणपज्जवनाणं, केवलनाणं ॥सू० १॥

तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—पच्चक्खं च परोक्खं च ॥सू० २॥

से किं तं पच्चक्खं ? पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—इंदियपच्चक्खं, नोइंदियपच्चक्खं च ॥सू० ३॥

से किं तं इंदियपच्चक्खं ? इंदियपच्चक्खं पंचविहं पण्णत्तं तंजहा—सोइंदियपच्चक्खं, चक्खिंदियपच्चक्खं, घाणिंदियपच्चक्खं, जिब्भिंदियपच्चक्खं, फासिंदियपच्चक्खं, से तं इंदियपच्चक्खं ॥सू० ४॥

से किं तं नोइंदियपच्चक्खं ? नोइंदियपच्चक्खं तिविहं पण्णत्तं तंजहा-ओहिनाणपच्चक्खं, मणपज्जवनाणपच्चक्खं, केवलनाणपच्चक्खं ॥सू० ५॥

से किं तं ओहिनाणपच्चक्खं ? ओहिनाणपच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—भवपच्चइयं च खाओवसमियं च ॥सू० ६॥

से किं तं भवपच्चइयं ? भवपच्चइयं दुण्हं, तंजहा-देवाण य नेरइयाण य ॥सू० ७॥

से किं तं खाओवसमियं ? खओवसमियं दुण्हं, तंजहा-मणूसाण य पंचेन्दियतिरिक्खजोणियाण य। को हेऊ खओव-

1 दुविअवड्ढो।

समिय ? खओवसमिय तयावरणिज्जाण कम्माण उदिण्णाण खएण, अणुदिण्णाण उवसमेण ओहिनाण समुप्पज्जइ ॥सू०८॥

अहवा गुणपडिवन्नस्स अणगारस्स ओहिनाण समुप्पज्जइ त समासओ छव्विह पण्णत्त, तंजहा-आणुगामियं अणाणुगामियं, वड्ढमाणयं, हीयमाणयं, पडिवाइयं, अप्पडिवाइयं ॥ सू० ६॥

से किं त आणुगामिय ओहिनाण ? आणुगामिय ओहिनाण दुविह पण्णत्त, तजहा-अतगय च मज्झगय च । से किं त अतगयं ? अंतगय तिविह पण्णत्त तजहा-पुरओ अतगय मग्गओ अंतगय, पासओ अतगय । से किं त पुरओ अतगयं ? पुरओ अतगय-से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलाय वा मणि वा पईव वा जोइ वा पुरओ काउ पणुल्लेमाणे २ गच्छेज्जा, से त पुरओ अतगय । से किं त मग्गओ अतगय ? मग्गओ अतगय-से जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चडुलिय वा अलाय वा मणि वा पईव वा जोइ वा मग्गओ काउ अणुकड्ढेमाणे २ गच्छिज्जा, से त मग्गओ अंतगयं । से किं त पासओ अतगय ? पासओ अतगय-से जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चडुलिय वा अलायं वा मणि वा पईवं वा जोइ वा पासओ काउ परिकड्ढेमाणे २ गच्छिज्जा, से त पासओ अंतगय, से त अतगय । से किं त मज्झगय ? मज्झगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चडुलिय वा अलाय वा मणि वा पईव वा जोइ वा मत्थए काउ समुव्वहमाणे २ गच्छिज्जा से त मज्झगय । अतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो ? पुरओ अतगएण ओहिनाणेण पुरओ चेव

संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ, मग्गओ

समिय ? खओवसमिय तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं, अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिनाणं समुप्पज्जइ ॥सू०८॥

अहवा गुणपडिवन्नस्स अणगारस्स ओहिनाणं समुप्पज्जइ तं समासओ छव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-आणुगामियं अणाणुगामियं, वड्ढमाणयं, हीयमाणयं, पडिवाइयं, अप्पडिवाइयं ॥ सू० ६ ॥

से किं तं आणुगामियं ओहिनाणं ? आणुगामियं ओहिनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-अंतगयं च मज्झगयं च । से किं तं अंतगयं ? अंतगयं तिविहं पण्णत्तं तंजहा-पुरओ अंतगयं मग्गओ अंतगयं, पासओ अंतगयं । से किं तं पुरओ अंतगयं ? पुरओ अंतगयं-से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा पुरओ काउं पणुल्लेमाणे २ गच्छेज्जा, से तं पुरओ अंतगयं । से किं तं मग्गओ अंतगयं ? मग्गओ अंतगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे २ गच्छिज्जा, से तं मग्गओ अंतगयं । से किं तं पासओ अंतगयं ? पासओ अंतगयं-से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा पासओ काउं परिकड्ढेमाणे २ गच्छिज्जा, से तं पासओ अंतगयं, से तं अंतगयं । से किं तं मज्झगयं ? मज्झगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा मत्थए काउं समुव्वहमाणे २ गच्छिज्जा से तं मज्झगयं । अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो ? पुरओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पुरओ चेव

दुवियड्ढा अहवा—न य कत्थइ निम्माओ न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेण। वत्थिव्व वायपुण्णो फुट्टइ गामिल्लयवियड्ढो[1]

(सूत्र) नाण पचविह पण्णत्त, तजहा आभिणिबोहियनाण, सुयनाण, ओहिनाण, मणपज्जवनाण, केवलनाण ॥सू० १॥

त समासओ दुविह पण्णत्त, तजहा—पच्चक्ख च परोक्ख च ॥सू० २॥

से किं त पच्चक्ख ? पच्चक्ख दुविह पण्णत्त, तजहा—इदियपच्चक्ख नोइदियपच्चक्ख च ॥सू० ३॥

से किं त इदियपच्चक्ख ? इन्दियपच्चक्ख पचविह पण्णत्त तजहा—सोइन्दियपच्चक्ख, चक्खिदियपच्चक्ख, घाणिदियपच्चक्ख, जिब्भिदियपच्चक्ख, फासिदियपच्चक्ख, से त इदियपच्चक्ख ॥सू० ४॥

से किं त नोइन्दियपच्चक्ख ? नोइन्दियपच्चक्ख तिविह पण्णत्त तजहा-ओहिनाणपच्चक्ख, मणपज्जवनाणपच्चक्ख केवलनाणपच्चक्ख ॥सू० ५॥

से किं त ओहिनाणपच्चक्ख ? ओहिनाणपच्चक्ख दुविह पण्णत्त तजहा—भवपच्चइय च खाओवसमिय च ॥सू० ६॥

से किं त भवपच्चइय ? भवपच्चइय दुण्ह, तजहा-देवाण य नरइयाण य ॥सू० ७॥

से किं त खओवसमिय ? खओवसमिय दुण्ह, तजहा-मणूसाण य पचेंदियतिरिक्खजोणियाण य। को हेऊ खओव-

1 दुव्वियड्ढो।

समियं ? खओवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं, अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिनाणं समुप्पज्जइ ॥सू०८॥

अहवा गुणपडिवन्नस्स अणगारस्स ओहिनाणं समुप्पज्जइ, तं समासओ छव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-आणुगामियं अणाणुगामियं, वड्ढमाणयं, हीयमाणयं, पडिवाइयं, अप्पडिवाइयं ॥ सू० ९ ॥

से किं तं आणुगामियं ओहिनाणं ? आणुगामियं ओहिनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-अंतगयं च मज्झगयं च। से किं तं अंतगयं ? अंतगयं तिविहं पण्णत्तं तंजहा-पुरओ अंतगयं, मग्गओ अंतगयं, पासओ अंतगयं। से किं तं पुरओ अंतगयं ? पुरओ अंतगयं-से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा पुरओ काउं पणुल्लेमाणे २ गच्छिज्जा, से तं पुरओ अंतगयं। से किं तं मग्गओ अंतगयं ? मग्गओ अंतगयं-से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे २ गच्छिज्जा, से तं मग्गओ अंतगयं। से किं तं पासओ अंतगयं ? पासओ अंतगयं-से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा पासओ काउं परिकड्ढेमाणे २ गच्छिज्जा, से तं पासओ अंतगयं, से तं अंतगयं। से किं तं मज्झगयं ? मज्झगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चडुलियं वा अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोइं वा मत्थए काउं समुव्वहमाणे २ गच्छिज्जा से तं मज्झगयं। अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो ? पुरओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पुरओ चेव [illegible] वा असंखेज्जाणि वा [illegible] जाणइ पासइ, [illegible]

ओहिनाणेणं मग्गओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ। पासओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पासओ चेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ। मज्झगएणं ओहिनाणेणं सव्वओ समंता संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ। से त्तं आणुगामियं ओहिनाणं। सू० १०॥

से किं तं अणाणुगामियं ओहिनाणं ? अणाणुगामियं ओहिनाणं से जहानामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं पासइ, अन्नत्थगए न पासइ, एवामेव अणाणुगामियं ओहिनाणं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ, अन्नत्थगए ण पासइ, से त्तं अणाणुगामियं ओहिनाणं ॥सू० ११॥

से किं तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं ? वड्ढमाणयं ओहिनाणं पसत्थेसु अज्झवसायट्ठाणेसु वट्टमाणस्स वड्ढमाणचरित्तस्स विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाणचरित्तस्स सव्वओ समंता ओही वड्ढइ गाहा—

जावइया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स।
ओगाहणा जहन्ना ओहीखित्तं जहन्नं तु ॥१॥
सव्वबहुअगणिजीवा निरंतरं जत्तियं भरिज्जंसु।
खित्तं सव्वदिसागं परमोही खेत्त निद्दिट्ठो ॥२॥
अंगुलमावलियाणं भागमसंखिज्ज दोसु संखिज्जा।
अंगुलमावलिअंतो आवलिया अंगुलपुहुत्तं ॥३॥

हत्थम्मि मुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउयम्मि बोद्धव्वो ।
जोयण दिवसपुहुत्तं, पक्खंतो पण्णवीसाओ ॥४॥
भरहम्मि अद्धमासो, जंबुद्दीवम्मि साहिओ मासो ।
वासं च मणुयलोए, वासपुहुत्तं च रुयगम्मि ॥ ५ ॥
संखिज्जम्मि उ काले दीवसमुद्दा वि हुंति संखिज्जा ।
कालम्मि असंखिज्जे दीवसमुद्दा उ भइयव्वा ॥ ६॥
काले चउण्ह वुड्ढी, कालो भइयव्वु खित्तवुड्ढीए ।
वुड्ढीइ दव्वपज्जव, भइयव्वा खित्तकाला उ ॥ ७ ॥
सुहुमो य होइ कालो तत्तो सुहुमयरं हवइ खित्तं ।
अंगुलसेढीमित्ते, ओसप्पिणीओ असंखिज्जा ॥ ८ ॥

से त्तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं ॥ सू १० ॥

से किं तं हीयमाणयं ओहिनाणं ?

हीयमाणयं ओहिनाणं अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं वट्टमाणस्स वट्टमाणचरित्तस्स संकिलिस्समाणस्स संकिलिस्समाणचरित्तस्स सव्वओ समंता ओही परिहायइ से त्तं हीयमाणयं ओहिनाणं ॥ १३ ॥

से किं तं पडिवाइओहिनाणं ?

पडिवाइओहिनाणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जयभागं वा संखिज्जयभागं वा वालग्गं वा वालग्गपुहुत्तं वा लिक्खं वा लिक्खपुहुत्तं वा जूयं वा जूयपुहुत्तं वा, जवं वा जवपुहुत्तं वा, अंगुलं वा अंगुलपुहुत्तं वा पायं वा पायपुहुत्तं वा विहत्थिं वा विहत्थिपुहुत्तं वा, रयणिं वा रयणिपुहुत्तं वा कुच्छिं वा कुच्छिपुहुत्तं वा धणुं वा धणुपुहुत्तं वा गाउयं वा गाउयपुहुत्तं वा

जोयण वा जोयणपुहुत्त वा, जोयणसय वा जोयणसयपुहुत्त वा, जोयणसहस्स वा जोयणसहस्सपुहुत्त वा, जोयणलक्ख वा जोयणलक्खपुहुत्त वा जोयणकोडिं वा जोयणकोडिपुहुत्त वा जोयणकोडाकोडिं वा जोयणकोडाकोडिपुहुत्त, वा जोयणसखिज्ज वा जोयणसखिज्जपुहुत्त वा, जोयणअसखेज्ज वा जोयणअसखेज्जपुहुत्त वा उक्कोसेण लोग वा पासित्ताण पडिवइज्जा। से त पडिवाइओहिनाण ॥ १४ ॥

से किं त अपडिवाइ ओहिनाण ?

अपडिवाइ ओहिनाण जेण अलोगस्स एगमवि आगासपएस जाणइ पासइ तेण पर अपडिवाइओहिनाण। से त अपडिवाइओहिनाण॥ १५॥

त समासओ चउव्विह पण्णत्त, तजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। त थ दव्वओ ण ओहिनाणी जहन्नेण अणताइ रूविदव्वाइ जाणइ पासइ उक्कोसेण सव्वाइ रूविदव्वाइ जाणइ पासइ। खित्तओ ण ओहिनाणी जहन्नेण अंगुलस्स असखिज्जयभाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखिज्जाइ अलोगे लोगप्पमाणमित्ताइ खडाइ जाणइ पासइ। कालओ ण ओहि-नाणी जहन्नेण [illegible] पासइ, उक्कोसेण असखि[illegible] मणागय च काल[illegible] जहन्नेण अणते[illegible] जाणइ पासइ।

ओही[illegible]
तस्स य बहू[illegible]

नरइयदेवतित्थंकरा य ओहिस्सऽबाहिरा हुंति।
पासंति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासंति ॥ १० ॥

से त्तं ओहिनाणपच्चक्खं।

से किं तं मणपज्जवनाणं? मणपज्जवनाणे णं भंते! किं मणुस्साणं उप्पज्जइ अमणुस्साणं?

गोयमा! मणुस्साणं, नो अमणुस्साणं?

जइ मणुस्साणं किं समुच्छिममणुस्साणं, गब्भवक्कंतियमणुस्साणं?

गोयमा! नो समुच्छिममणुस्साणं उप्पज्जइ, गब्भवक्कंतियमणुस्साणं।

जइ गब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं कम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, अन्तरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं?

गोयमा! कम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, नो अकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, नो अन्तरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं।

जइ कम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, किं संखिज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं असंखिज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं?

गोयमा! संखिज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, नो असंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं।

जइ संखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ?

गोयमा ! पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, नो अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ।

जइ पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, किं सम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, मिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, सम्मामिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ?

गोयमा ! सम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, नो मिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, नो सम्मामिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ।

जइ सम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, असंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, संजयासंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ?

गोयमा ! संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं नो असंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्त-

गसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, नो संजयासंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ।

जइ संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, किं पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, अप्पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ?

गोयमा ! अप्पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, नो पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ।

जइ अप्पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, किं इड्ढीपत्तअप्पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, अणिड्ढीपत्तअप्पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ?

गोयमा ! इड्ढीपत्तअप्पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, नो अणिड्ढीपत्तअप्पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्साणं मणपज्जवनाणं समुप्पज्जइ ॥ सू० १७ ॥

तं च दुविहं उप्पज्जइ तंजहा—उज्जुमई

त समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा—द्रव्यओ, खित्तओ, कालओ, भावओ।

तत्थ दव्वओ णं उज्जुमई अणंते अणंतपएसिए खंधे जाणइ पासइ, ते चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ।

खित्तओ णं उज्जुमई जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जयभागं उक्कोसेणं अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डगपयरे, उड्ढं जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरियं जाव अंतोमणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमिसु, तीसाए अकम्मभूमिसु, छप्पन्नाए अन्तरदीवगेसु सन्निपंचेंदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ पासइ। तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिमंगुलेहिं अब्भहियतरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरागं खेत्तं जाणइ पासइ।

कालओ णं उज्जुमई जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं उक्कोसेणवि पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं अतीयमणागयं वा कालं जाणइ पासइ। तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ।

भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ पासइ, सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ। तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ।

मणपज्जवनाणं पुण जणमणपरिचिंतियत्थपागडणं।
माणुसखित्तनिबद्धं गुणपच्चइयं चरित्तवओ ॥गा० ११॥

से त्तं मणपज्जवनाणं ॥ सू० १८ ॥

से किं तं केवलनाणं ? केवलनाणं दुविहं पन्नत्तं, तंजहा—भवत्थकेवलनाणं च सिद्धकेवलनाणं च। से किं तं भवत्थकेवलनाणं ? भवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं तंजहा—सजोगिभवत्थकेवलनाणं च अजोगिभवत्थकेवलनाणं च।

से किं तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं ?

सजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च, अहवा चरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च अचरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च। से त्तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं।

से किं तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं ?

अजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पन्नत्तं, तंजहा—पढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च, अहवा चरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च अचरमसमयअजोगिभवत्थकेवलनाणं च। से त्तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं, से त्तं भवत्थकेवलनाणं ॥ सू० १९ ॥

से किं तं सिद्धकेवलनाणं ? सिद्धकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा—अणंतरसिद्धकेवलनाणं च परंपरसिद्धकेवलनाणं च ॥सू० ॥२०॥

से किं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं ? अणंतरसिद्धकेवलनाणं पन्नरसविहं पण्णत्तं, तंजहा—तित्थसिद्धा १, अतित्थसिद्धा २, तित्थयरसिद्धा ३, अतित्थयरसिद्धा ४ सयंबुद्धसिद्धा ५, पत्तेयबुद्धसिद्धा ६, बुद्धबोहियसिद्धा ७ इत्थिलिंगसिद्धा ८, पुरि-
[illegible] नपुंसगलिंगसिद्धा १०,

अन्नलिंगसिद्धा १२, गिहिलिंगसिद्धा १३, एगसिद्धा १४, अणेगसिद्धा १५, से त्त अणंतरसिद्धकेवलनाणं । सू०२१॥

से किं त परंपरसिद्धकेवलनाणं ? परंपरसिद्धकेवलनाणं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—अपढमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा, चउसमयसिद्धा, जाव दससमयसिद्धा, संखिज्जसमयसिद्धा, असंखिज्जसमयसिद्धा, अणंतसमयसिद्धा, से त्त परंपरसिद्धकेवलनाणं, से त्त सिद्धकेवलनाणं ॥

तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ । तत्थ दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ । खित्तओ णं केवलनाणी सव्वं खित्तं जाणइ पासइ । कालओ णं केवलनाणीसव्वं कालं जाणइ पासइ । भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ ।

अह सव्वदव्वपरिणामभावविण्णत्तिकारणमणंतं ।
सासयमप्पडिवाई,एगविहं केवलं नाणं ॥१२॥ सू० ॥२२॥
केवलनाणेणऽत्थे, नाउं जे तत्थ पण्णवणजोगे ।
ते भासइ तित्थयरो, वइजोगसुयं हवइ सेसं ॥ १३ ॥

से त्त केवलनाणं से त्त नोइंदियपच्चक्खं, से त्त पच्चक्खनाणं ॥ सू० ॥ २३ ॥

से किं तं परोक्खनाणं ? परोक्खनाणं दुविहं पन्नत्तं तंजहा—आभिणिबोहियनाणपरोक्खं च, सुयनाणपरोक्खं च । जत्थ आभिणिबोहियनाणं तत्थ सुयनाणं, जत्थ सुयनाणं तत्थ आभिणिबोहियनाणं, दोऽवि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं, तहवि पुण इत्थ आयरिया नाणत्तं पण्णवयंति अभिनिबुज्झइत्ति आभिणिबोहियनाणं, सुणेइत्ति सुयं, मइपुव्वं जेण सुयं, न मइसुयपुव्विया ॥ सू० ॥ २४ ॥

अविसेसिया मई, मइनाणं च मइअन्नाणं च । विसेसिया सम्मदिट्ठिस्स मई मइनाणं, मिच्छदिट्ठिस्स मई मइअन्नाणं । अविसेसियं सुयं सुयनाणं च सुयअन्नाणं च । विसेसियं सुयं सम्मदिट्ठिस्स सुयं सुयनाणं, मिच्छदिट्ठिस्स सुयं सुयअन्नाणं ॥ सू० ॥ २५ ॥

से किं तं आभिणिबोहियनाणं ? आभिणिबोहियनाणं दुविहं पण्णत्तं, तंजहा-सुयनिस्सियं च, असुयनिस्सियं च । से किं तं असुयनिस्सियं ? असुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-उप्पत्तिया १, वेणइया २, कम्मया ३, परिणामिया ४ । बुद्धी चउव्विहा वुत्ता, पंचमा नोवलब्भइ ॥१४॥ सू० ॥ २६ ॥

पुव्वमदिट्ठमस्सुयमवेइय तक्खणविसुद्धगहियत्था । अव्वाहयफलजोगा, बुद्धी उप्पत्तिया नाम ॥ १५ ॥

भरह-सिल-मिंढ-कुक्कुड-तिल-वालुय-हत्थी-अगड-वणसंडे । पायस-अइया-पत्ते-खाडहिला-पंचपियरो य ॥ १६ ॥

भरहसिल-पणिय-रुक्खे-खुड्डग-पड-सरड-काय-उच्चारे । गय-घयण-गोल-खंभे-खुड्डग-मग्गि त्थि-पइ-पुत्ते-॥ १७ ॥

महुसित्थ-मुद्दि-अंके-नाणए-भिक्खु-चेडगनिहाणे-सिक्खा य अत्थसत्थे-इच्छा-य मह-सयसहस्से ॥ १८ ॥

भरनित्थरणसमत्था, तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला । उभओ लोगफलवई, विणयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ १९ ॥

१ हत्थी ।

निमित्ते अत्थसत्थे य, लेहे गणिए य कूव-अस्से य।
गद्दभ-लक्खण-गंठी—अगए-रहिए य गणिया य ॥ २० ॥
सीया साडी दीहं, च तणं अवसव्वयं च कुंचस्स। निव्वो-
दए य गोणे, घोडगपडणं च रुक्खाओ ॥ २१ ॥

उवओगदिट्ठसारा, कम्मपसंगपरिघोलणविसाला। साहु-
क्कारफलवई, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ २२ ॥

हेरण्णिए-करिसए कोलिय-डोवे य मुत्ति-घय-पवए।
तुन्नाए-वड्ढईय-पूयइ घड-चित्तकारे य ॥ २३ ॥

अणुमाणहेउदिट्ठंतसाहिया वयविवागपरिणामा। हियनि-
स्सेयसफलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥ २४ ॥

अभए-सिट्ठि-कुमारे-देवी-उदिओदए हवइ राया। साहू
य नंदिसेणे-धणदत्ते-सावग-अमच्चे ॥ २५ ॥

खमए-अमच्चपुत्ते-चाणक्के चेव थूलभद्दे य। नासिक्क-
सुंदरीनंदे-वइरे-परिणामबुद्धीए ॥ २६ ॥

चलणाहण-आमंडे-मणी य सप्पे य खग्गि-थूभिंदे। परि-
णामियबुद्धीए एवमाई उदाहरणा ॥ २७ ॥

से त्तं अस्सुयनिस्सियं।

से किं तं सुयनिस्सियं?

सुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा—उग्गहे-ईहा-
अवाओ-धारणा ॥ सू० २७ ॥

से किं तं उग्गहे?

उग्गहे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-अत्थुग्गहे य वंजणुग्गहे य ॥ सू० ॥ २८ ॥

से किं तं वंजणुग्गहे

वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-सोइंदियवंजणुग्गहे, घाणिंदियवंजणुग्गहे, जिब्भिन्दियवंजणुग्गहे, फासिंदियवंजणुग्गहे, से त्तं वंजणुग्गहे ॥ सू० २९ ॥

से किं तं अत्थुग्गहे ?

अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा—सोइंदियअत्थुग्गहे, चक्खिंदियअत्थुग्गहे, घाणिंदियअत्थुग्गहे जिब्भिंदियअत्थुग्गहे, फासिंदियअत्थुग्गहे, नोइंदियअत्थुग्गहे ॥ सू० ३० ॥

तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तंजहा—ओगेण्हणया, उवधारणया, सवणया, अवलंबणया, मेहा से त्तं उग्गहे ॥ सू० ३१ ॥

से किं तं ईहा ? ईहा छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा-सोइंदियईहा, चक्खिंदियईहा, घाणिंदियईहा जिब्भिंदियईहा, फासिंदियईहा, नोइंदियईहा । तीसे णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसानाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति तंजहा-आभोगणया, मग्गणया गवेसणया, चिंता, वीमंसा, से त्तं ईहा ॥ सू० ३२ ॥

से किं तं अवाए ? अवाए छव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-सोइंदियअवाए चक्खिंदियअवाए, घाणिंदियअवाए जिब्भिन्दियअवाए, फासिंदियअवाए, नोइंदियअवाए । तस्स णं इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच [illegible], तंजहा—आउट्टणया, पच्चाउट्टणया, अवाए, [illegible], से त्तं [illegible] ३३ ॥

से किं त धारणा ?

धारणा छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा सोइंदियधारणा, चक्खिंदियधारणा, घाणिंदियधारणा, जिब्भिंदियधारणा, फासिंदियधारणा, नोइन्दियधारणा। तीसे णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तंजहा धरणा, धारणा, ठवणा, पइट्ठा, कोट्ठे, से त्त धारणा॥ सू० ॥ ३४ ॥

उग्गहे इक्कसमइए, अंतोमुहुत्तिया ईहा, अंतोमुहुत्तिए अवाए, धारणा संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं॥सू०॥३५॥

एवं अट्ठावीसइविहस्स आभिणिबोहियनाणस्स वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि पडिबोहगदिट्ठंतेण मल्लगदिट्ठंतेण य।

से किं त पडिबोहगदिट्ठंतेणं ?

पडिबोहगदिट्ठंतेणं से जहानामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहिज्जा, अमुगा अमुगत्ति, तत्थ चोयगे पन्नवयं एवं वयासी किं एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ? दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ? जाव दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ?, संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ?, असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ?, एवं वयंत चोयगं पण्णवए एवं वयासी-नो एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, जाव नो दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति; असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति, से त्तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं।

से कि त मल्लगदिट्ठतेण ?

मल्लगदिट्ठतेण से जहानामए केइ पुरिसे आवागसीसाओ मल्लग गहाय तत्थेग उदगबिंदु पक्खिविज्जा से नट्ठे, अण्णेऽवि पक्खित्ते सेऽवि नट्ठे, एव पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु होही से उदगबिंदू जे ण त मल्लग रावेहिइत्ति; होही से उदगबिन्दू जे ण तसि मल्लगसि ठाहिति, होही से उदगबिन्दू जे ण त मल्लग भरिहिति होही से उदगबिंदू जे ण त मल्लग पवाहेहिति, एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं अणतेहिं पुग्गलेहिं जाहे त वजण पूरिय होइ, ताहे हु ति करेइ, नो चेव ण जाणइ के वि एस सद्दाइ ? तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सद्दाइ, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ तओ ण धारण पविसइ तओ ण धारेइ सखिज्ज वा काल असखिज्ज वा काल। से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त सद्द सुणिज्जा, तेण सद्दोत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस सद्दाइ ? तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सद्दे, तओ ण अवाय पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल असखेज्ज वा काल।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त रूव पासिज्जा तेण रूवत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस रूवत्ति; तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रूवे, तओ अवाय पविसइ तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल, असखेज्ज वा काल।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त गध
[illegible] , नो चेव ण जाणइ के वेस

पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस गंधे तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ णं धारेइ सखेज्ज वा काल असखेज्ज वा काल।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त रस आसाइज्जा तेण रसोत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस रसेत्ति, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवाय पविसइ तओ से उवगय हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ ण धारेइ सखिज्ज वा काल असखिज्ज वा काल।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त फास पडिसवेइज्जा तेण फासेत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस फासओत्ति तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल असखेज्ज वा काल।

से जहानामए केइ पुरिसे अव्वत्त सुमिण पासिज्जा तेण सुमिणेत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस सुमिणेत्ति, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सुमिणे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारणं पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल असखेज्ज वा काल से त मल्लगदिट्ठतेण ॥ सू० ३६ ॥

त समासओ चउव्विह पण्णत्त, तजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वाइ दव्वाइं जाणइ, न पासइ। खेत्तओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्व खेत्त जाणइ न पासइ। कालओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्व काल जाणइ न

पासइ । भावओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वे भावे जाणइ, न पासइ ।

उग्गह ईहाऽवाओ, य धारणा एव हुंति चत्तारि ।
आभिणिबोहियनाणस्स भेयवत्थू समासेण ॥ २८ ॥
अत्थाण उग्गहणम्मि उग्गहो तह वियालणे ईहा ।
ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारणं बिंति ॥ २९ ॥
उग्गह इक्क समय, ईहावाया मुहुत्तमद्ध तु ।
कालमसंख संख च धारणा होइ नायव्वा ॥ ३० ॥
पुट्ठं सुणेइ सद्द, रूव पुण पासइ अपुट्ठं तु ।
गंध रस च फास च, बद्धपुट्ठं वियागरे ॥ ३१ ॥
भासासमसेढीओ, सद्द जं सुणइ मीसिय सुणइ ।
वीसेढी पुण सद्द सुणेइ नियमा पराघाए ॥ ३२ ॥
ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा ।
सन्ना सई मई पन्ना, सव्व आभिणिबोहिय ॥ ३३ ॥

से त्त आभिणिबोहियनाणपरोक्ख, से त्त मइनाण ॥सू० ३७॥

से किं त सुयनाणपरोक्ख ?

सुयनाणपरोक्ख चोद्दसविह पण्णत्त तंजहा—अक्खरसुय १ अणक्खरसुय २ सण्णिसुय ३ असण्णिसुय ४ सम्मसुय ५ मिच्छसुय ६ साइय ७ अणाइय ८ सपज्जवसिय ९ अपज्जवसिय १० गमिय ११ अगमिय १२ अंगपविट्ठ १३ अणंगपविट्ठ १४ ॥ सू० ॥ ३८ ॥

से किं त अक्खरसुय ?

---

१ अत्थाणं उग्गहणं, च उग्गहं तह वियालणं ईहं । ववसायं च अवायं धरणं पुण धारणं बिंति ॥ १ ॥ इति पाठान्तरगाथा ।

अक्खरसुय तिविहं पण्णत्त, तजहा–सन्नक्खर, वजणक्खर लद्धिअक्खर ।

से किं त सन्नक्खर ?

सन्नक्खर अक्खरस्स सठाणागिई, से त सन्नक्खर ।

से किं त वजणक्खर ?

वजणक्खर अक्खरस्स वजणाभिलावो, से त वजणक्खर ।

से किं त लद्धिअक्खर ?

लद्धिअक्खर अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खर समुप्पज्जइ, तजहा–सोइदियलद्धिअक्खर, चक्खिदियलद्धिअक्खर, घाणिदियलद्धिअक्खर, रसणिदियलद्धिअक्खर, फासिदियलद्धिअक्खर, नोइदियलद्धिअक्खर, से त लद्धिअक्खर, से त अक्खरसुय ॥

से किं त अणक्खरसुय ?

अणक्खरसुय अणेगविह पण्णत्त, तजहा—

ऊससिय नीससिय, निच्छूढ खासिय च छीय च ।
निस्सिघियमणुसार, अणक्खर छेलियाईय ॥ ३८ ॥

से त्त अणक्खरसुय ॥सू० ३६ ॥

से किं त सन्निसुय ?

सन्निसुय तिविह पण्णत्त तजहा—कालिओवएसेण, हेऊवएसेण दिट्ठिवाओवएसेण ।

से किं त कालिओवएसेण ?

कालिओवएसेणं जस्स णं अत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिन्ता, वीमंसा, से णं सण्णीति लब्भइ। जस्स णं नत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिन्ता, वीमंसा से णं असण्णीति लब्भइ, से त्तं कालिओवएसेणं।

से किं तं हेउवएसेणं?

हेउवएसेणं जस्स णं अत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं सण्णीति लब्भइ। जस्स णं नत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं असण्णीति लब्भइ, से त्तं हेउवएसेणं।

से किं तं दिट्ठिवाओवएसेणं?

दिट्ठिवाओवएसेणं सण्णिसुयस्स खओवसमेणं सण्णी लब्भइ, असण्णिसुयस्स खओवसमेणं असण्णी लब्भइ, से त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं से त्तं सण्णिसुयं, से त्तं असण्णिसुयं ॥ सू० ४० ॥

से किं तं सम्मसुयं?

सम्मसुयं जं इमं अरहंतेहिं भगवंतेहिं उप्पण्णणाणदंसणधरेहिं तेलुक्कनिरिक्खियमहियपूइएहिं तीयपडुप्पण्णमणागयजाणएहिं सव्वण्णूहिं सव्वदरिसीहिं पणीयं दुवालसंगं गणिपिडगं, तंजहा—आयारो १ सूयगडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ विवाहपण्णत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुयं ११ दिट्ठिवाओ १२ इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं चोद्दसपुव्विस्स सम्मसुयं, अभिण्णदसपुव्विस्स

सम्मसुय, तेण पर भिण्णेसु भयणा, से त्त सम्मसुय ॥ सू० ४१ ॥

से किं त मिच्छासुय ?

मिच्छासुय ज इम अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छंदबुद्धिमइविगप्पिय, तजहा—भारह, रामायणं, भीमासुरुक्ख, कोडिल्लय, सगडभद्दियाओ, [1]खोडमुह कप्पासिय नागसुहुम, कणगसत्तरी, वइसेसिय, बुद्धवयण, तेरासिय, काविलिये, लोगायय, सट्ठितत, माढर, पुराण, वागरण, भागवय, पायंजली, पुस्सदेवय, लेह, गणिय, सउणरुय, नाडयाइ, अहवा बावत्तरिकलाओ, चत्तारि य वेया संगोवगा, एयाइ मिच्छदिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइ मिच्छासुय, एयाइ चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइ सम्मसुय, अहवा मिच्छदिट्ठिस्स वि एयाइ चेव सम्मसुय, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ, जम्हा ते मिच्छदिट्ठिया तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठीओ चयंति, से त्त मिच्छासुय ॥ सू० ॥ ४२ ॥

से किं त साइय सपज्जवसिय, अणाइय अपज्जवसिय च ?

इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग वुच्छित्तिनयट्ठयाए साइय सपज्जवसिय, अवुच्छित्तिनयट्ठयाए अणाइय अपज्जवसिय। त समासओ चउव्विह पण्णत्त, तजहा दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। तत्थ दव्वओ ण सम्मसुय एग पुरिस पडुच्च साइय सपज्जवसिय, बहवे पुरिसे य पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय। खेत्तओ णं पच भरहाइ पचेरवयाइ पडुच्च साइयं पचमहाविदेहाइ पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय। कालओ ण उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च पडुच्च साइय सपज्जवसिय, नो

१ घोडग।

उस्सप्पिणिं नोओसप्पिणिं च पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय । भावओ ण जे जया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जति, परूविज्जति, दंसिज्जति, निदंसिज्जति उवदंसिज्जति, ते तया भावे पडुच्च साइय सपज्जवसिय। खाओवसमिय पुण भाव पडुच्च अणाइय अपज्जवसिय । अहवा भवसिद्धियस्स सुय साइय सपज्जवसिय च, अभवसिद्धियस्स सुय अणाइय अपज्जवसिय च, सव्वागासपएसग्ग सव्वागासपएसेहिं अणंतगुणिय पज्जवक्खर निप्फज्जइ, सव्वजीवाणंपि य ण अक्खरस्स अणंतभागो निच्चुग्घाडियो जइ पुण सोऽवि आवरिज्जा तेण जीवो अजीवत्त पाविज्जा,—'सुट्ठुवि मेहसमुदए, होइ पभा चदसूराण' से त साइय सपज्जवसिय, से त अणाइय अपज्जवसिय ॥ सू० ॥ ४३ ॥

से किं त गमिय ?

गमिय दिट्ठिवाओ ॥

से किं त अगमिय ?

अगमिय कालिय सुय । से त्त गमिय, से त्त अगमिय ॥

अहवा त समासओ दुविह पण्णत्त, तजहा—अगपविट्ठ अगबाहिर च । से किं त अगबाहिर ? अगबाहिर दुविह पण्णत्त, तजहा—आवस्सय च, आवस्सयवइरित्त च । से किं त आवस्सय ? आवस्सय छव्विह पण्णत्त, तजहा-सामाइए, चउवीसत्थओ, वदणय, पडिक्कमण, काउस्सग्गो, पच्चक्खाण, से त्त आवस्सय ।

से किं त आवस्सयवइरित्त ? आवस्सयवइरित्त दुविह पण्णत्त, तजहा—कालिय च, उक्कालिय च ॥

से किं त उक्कालिय ? उक्कालिय अणेगविह पण्णत्त, तजहा—

दसवेयालियं, कप्पियाकप्पियं, चुल्लकप्पसुयं, महाकप्पसुयं, उववाइयं, रायपसेणियं, जीवाभिगमो, पण्णवणा, महापण्णवणा, पमायप्पमायं, नन्दी, अणुओगदाराइं, देविंदत्थओ, तंदुलवेयालियं, चन्दाविज्झयं, सूरपण्णत्ती, पोरिसिमण्डलं, मण्डलपवेसो, विज्जाचरणविणिच्छओ, गणिविज्जा, झाणविभत्ती, मरणविभत्ती, आयविसोही, वीयरागसुयं, संलेहणासुयं, विहारकप्पो, चरणविही, आउरपच्चक्खाणं, महापच्चक्खाणं, एवमाइ, से त्तं उक्कालियं।

से किं तं कालियं?

कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—उत्तरज्झयणाइं दसाओ, कप्पो ववहारो, निसीहं, महानिसीहं, इसिभासियाइं जम्बूदीवपन्नत्ती, दीवसागरपन्नत्ती, चन्दपन्नत्ती, खुड्डियाविमाणपविभत्ती, महल्लिया विमाणपविभत्ती, अंगचूलिया वग्गचूलिया, विवाहचूलिया, अरुणोववाए, वरुणोववाए, गरुलोववाए, धरणोववाए, वेसमणोववाए, वेलंधरोववाए, देविंदोववाए, उट्ठाणसुए, समुट्ठाणसुए, नागपरियावलियाओ निरयावलियाओ कप्पियाओ, कप्पवडिंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हीदसाओ, (आसीविसभावणाणं, दिट्ठिविसभावणाणं, सुमिणभावणाणं, महासुमिणभावणाणं, तेयग्गिनिसग्गाणं,) एवमाइयाइं चउरासीइं पइण्णगसहस्साइं भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स, तहा संखिज्जाइं पइण्णगसहस्साइं मज्झिमगाणं जिणवराणं, चोद्दस पइण्णगसहस्साइं भगवओ वद्धमाणसामिस्स, अहवा जस्स जत्तिया सीसा उप्पत्तियाए, वेणइयाए, कम्मयाए, पारिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइं

पत्तेयबुद्धानि तत्तिया चेव, से त्त कालिय, से त्त आवस्सयवइ रित्त, से त्त अणगपविट्ठ ॥ सू० ॥ ४४ ॥

से किं त अगपविट्ठ ?

अगपविट्ठ दुवालसविह पण्णत्त, तजहा—आयारो १ सूय गडो २ ठाण ३ समवाओ ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइ १० विवागसुय ११ दिट्ठिवाओ १२ ॥ सू० ॥ ४५ ॥

से किं त आयारे ? आयारे ण समणाण निग्गथाण आयार-गोयरविणयवेणइयसिक्खाभासाअभासाचरणकरणजायामा-यावित्तीओ आघविज्जति । से समासओ पचविहे पण्णत्ते, तजहा—नाणायारे दसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे। आयारे ण परित्ता वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा, सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, (सखिज्जाओ सगहणीओ) सखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से ण अगट्ठयाए पढमे अगे, दो सुयक्खधा, पणुवीस अज्झयणा, पचासीइ उद्देसणकाला, पचासीइ समुद्देसणकाला, अट्ठारस पयसहस्साइ पयग्गेण सखिज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परित्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पन्नविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया एव विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्त आयारे १ ॥ सू० ॥ ४६ ॥

से किं त सूयगडे ? सूयगडे ण लोए सूइज्जइ, अलोए सूइ-

ज्जइ, लोयालोए सूइज्जइ, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, ससमए सूइज्जइ परसमए सूइज्जइ, ससमयपरसमए सूइज्जइ, सूयगडे णं असीयस्स किरियावाइसयस्स, चउरासीइए अकिरियावाईणं, सत्तट्ठीए अण्णाणीयवाइणं, बत्तीसाए वेणइयवाईणं, तिण्हं तेसट्ठाणं पासंडियसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ। सूयगडे णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, (संखिज्जाओ संगहणीओ) संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए बिइए अंगे, दो सुयक्खंधा तेत्तीसं अज्झयणा, तित्तीसं उद्देसणकाला, तित्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं सूयगडे २॥ सू० ॥ ४७ ॥

से किं तं ठाणे? ठाणे णं जीवा ठाविज्जंति, अजीवा ठाविज्जंति, जीवाजीवा ठाविज्जंति, ससमए ठाविज्जइ परसमए ठाविज्जइ, ससमयपरसमए ठाविज्जइ, लोए ठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोयालोए ठाविज्जइ। ठाणे णं टंका, कूडा, सेला, सिहरिणो, पब्भारा, कुंडाइं गुहाओ आगरा, दहा, नईओ, आघविज्जंति। ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसट्ठाणगविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ। ठाणे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे, एगे

सुयक्खंधे, तस अज्झयणा पणवीसं उद्देसणकाला, पणवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरिं पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं ठाणं ३॥ सू० ॥ ४८॥

से किं तं समवाए ? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति जीवाजीवा समासिज्जंति, ससमए समासिज्जइ परसमए समासिज्जइ, ससमयपरसमए समासिज्जइ, लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ, लोयालोए समासिज्जइ। समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणसय विवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जइ, दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जइ। समवायस्स णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे, एगे सुयक्खंधे एगे अज्झयणे एगे उद्देसणकाले, एगे चोयाले सयसहस्से पयग्गेणं संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति, दंसिज्जंति निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया एवं नाया एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से त्तं समवाए ४॥ सू० ॥ ४९॥

से [illegible] विवाहे णं जीवा वियाहिज्जंति,

विआहिज्जति, जीवाजीवा विआहिज्जति, ससमए विआहिज्जति, परसमए विआहिज्जति, ससमयपरसमए विआहिज्जति, लोए विआहिज्जति, अलोए विआहिज्जति, लोयलोए विआहिज्जति। विवाहस्स णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झयण-सए, दस उद्देसगसहस्साइं, दस समुद्देसगसहस्साइं छत्तीसं वागरणसहस्साइं, दो लक्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया एवं चरणकरणपरूवणा, आघविज्जइ, से त्तं विवाहे॥ ५॥ ॥ सू० ॥ ५० ॥

से किं तं नायाधम्मकहाओ? नायाधम्मकहासु णं नायाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, [illegible] इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया प[illegible] [illegible], सुय-परिग्गहा, [illegible] [illegible]पाओ

उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइयउवक्खाइयासयाइं एवमेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ हवंतित्ति समक्खायं। नायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे, दो सुयक्खंधा एगूणवीसं अज्झयणा, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं नायाधम्मकहाओ ६॥ सू. ॥ ५० ॥

से किं तं उवासगदसाओ? उवासगदसासु णं समणोवासयाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जणया, पडिमाओ, उवसग्गा, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुलपच्चाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति। उवासगदसाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला दस समुद्देसणकाला संखेज्जा पयसहस्सा

पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं नाया, एवं विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं उवासगदसाओ ७ ॥ सू० ॥ ५२ ॥

से किं तं अंतगडदसाओ? अंतगडदसासु णं अंतगडाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, अंतकिरियाओ, आघविज्जंति। अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, अट्ठ वग्गा, अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला, संखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया, एवं नाया, एवं विन्नाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं अंतगडदसाओ ॥ ८ सू० ॥ ५३ ॥

से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ? अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया,

धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा पव्वज्जाओ परिआगा सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाओ, उवसग्गा, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, अणुत्तरोववइयत्ते उववत्ती, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ, आघविज्जंति। अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे, एगे सुयक्खंधे तिन्नि वग्गा, तिन्नि उद्देसणकाला तिन्नि समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति; से एवं आया, एवं नाया एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ६ ॥ सू० ॥ ५४ ॥

से किं तं पण्हावागरणाइं? पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं, अट्ठुत्तरं अपसिणसयं, अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं तंजहा—अंगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं, अन्नेवि विचित्ता विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति। पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे पणयालीसं अज्झयणा, पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा

अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, से एवं आया एवं नाया एवं विण्णाया एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं पण्हावागरणाइं १० ॥ सू० ॥ ५४ ॥

से किं तं विवागसुयं ? विवागसुए णं सुकडदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जइ। तत्थ णं दस दुहविवागा, दस सुहविवागा। से किं तं दुहविवागा ? दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइं वणसंडाइं चेइयाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा निरयगमणाइं, संसारभवपवंचा दुहपरंपराओ, दुकुलपच्चायाइओ, दुल्लहबोहियत्तं आघविज्जइ, से त्तं दुहविवागा। से किं तं सुहविवागा ? सुहविवागेसु णं सुहविवागाणं नगराइं, उज्जाणाइं वणसंडाइं चेइयाइं, समोसरणाइं, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परियागा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुहपरंपराओ, सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ, आघविज्जंति। विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए इक्कारसमे अंगे, दो सुयक्खंधा, वीसं अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला वीसं समुद्देसणकाला, संखिज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय

बद्धनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ, से त्तं विवागसुयं ११। सू० ॥५६॥

से किं तं दिट्ठिवाए? दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणा आघविज्जइ, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—परिकम्मे १ सुत्ताइं २ पुव्वगए ३ अणुओगे ४ चूलिया ५।

से किं तं परिकम्मे? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तंजहा-सिद्धसेणियापरिकम्मे १ मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ पुट्ठसेणियापरिकम्मे ३ ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ७। से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे? सिद्धसेणियापरिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा—माउगापयाइं १ एगट्ठियपयाइं २ अट्ठपयाइं ३ पाढोआगासपयाइं ४ केउभूयं ५ रासिबद्धं ६ एगगुणं ७ दुगुणं ८ तिगुणं ९ केउभूयं १० पडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ सिद्धावत्तं १४, से त्तं सिद्धसेणियापरिकम्मे १। से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा—माउयापयाइं १ एगट्ठियपयाइं २ अट्ठपयाइं ३ पाढोआगासपयाइं ४ केउभूयं ५ रासिबद्धं ६ एगगुणं ७ दुगुणं ८ तिगुणं ९ केउभूयं १० पडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ मणुस्सावत्तं १४, से त्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे २। से किं तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे? पुट्ठसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तंजहा-पाढोआगास

1–आगासप०।

पयाइं १ केउभूय २ रासिबद्ध ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूय ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० पुट्ठावत्तं ११, से त्तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ३। से किं तं ओगाढसेणियापरिकम्मे? ओगाढसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तंजहा पाढोआगासपयाइं १ केउभूय २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूयं ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० ओगाढावत्तं ११, से त्तं ओगाढसेणियापरिकम्मे ४। से किं तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे? उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तंजहा—पाढोआगासपयाइं १ केउभूय २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूय ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० उवसंपज्जणवत्तं ११, से त्तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५। से किं तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे? विप्पजहणसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तंजहा—पाढोआगासपयाइं १ केउभूय २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूय ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० विप्पजहणावत्तं ११, से त्तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६। से किं तं चुयाचुयसेणियापरिकम्मे? चुयाचुयसेणियापरिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते, तंजहा-पाढोआगासपयाइं १ केउभूय २ रासिबद्धं ३ एगगुणं ४ दुगुणं ५ तिगुणं ६ केउभूय ७ पडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ नंदावत्तं १० चुयाचुयवत्तं ११ से त्तं चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ७। छ चउक्कनइयाइं, सत्त तेरासियाइं, से त्तं परिकम्मे १।

से किं तं सुत्ताइं? सुत्ताइं बावीसं पण्णत्ताइं, तंजहा—उज्जुसुयं १ परिणयापरिणयं २ बहुभंगियं ३ विजयचरियं ४ अणंतरं ५ परंपरं ६ मासाणं७ संजूहं८ संभिण्णं९ आहव्वायं१०

१ सामान्यं। २-यथार्थं।

सोवत्थियावत्त ११ नंदावत्त १२ बहुल १३ पुट्ठापुट्ठ १४ वियावत्त १५ एवंभूय १६ दुयावत्त १७ वत्तमाणपय १८ समभिरूढ १९ सव्वओभद्द २० पस्सास २१ दुप्पडिग्गह २२ इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिन्नच्छेयनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए, इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिन्नच्छेयनइयाणि आजीविय-सुत्तपरिवाडीए, इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं तिगणइयाणि तेरासिय सुत्तपरिवाडिए, इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए, एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीई सुत्ताइं भवंतित्ति मक्खाय, से त्तं सुत्ताइं २ ॥

से किं तं पुव्वगए ? पुव्वगए चउद्दसविहे पण्णत्ते, तंजहा उप्पायपुव्व १ अग्गाणीय २ वीरिय ३ अत्थिनत्थिप्पवाय ४ नाणप्पवाय ५ सच्चप्पवाय ६ आयप्पवाय ७ कम्मप्पवाय ८ पच्चक्खाणप्पवाय ९ विज्जाणुप्पवाय १० अवंझ ११ पाणाऊ १२ किरियाविसाल १३ लोकबिंदुसार १४। उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता। अग्गाणीयपुव्वस्स णं चोद्दस वत्थू दुवालस चूलियावत्थू पण्णत्ता। वीरियपुव्वस्स णं अट्ठ वत्थू अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता। अत्थिनत्थिप्पवाय-पुव्वस्स णं अट्ठारस वत्थू दस चूलियावत्थू पण्णत्ता। नाणप्पवायपुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता। सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दोण्णि वत्थू पण्णत्ता। आयप्पवायपुव्वस्स णं सोलस वत्थू पण्णत्ता। कम्मप्पवायपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता। पच्चक्खाणपुव्वस्स णं वीसं वत्थू पण्णत्ता। विज्जाणुप्पवायपुव्वस्स णं पन्नरस वत्थू पण्णत्ता। अवंझपुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता। पाणाउपुव्वस्स णं तेरस वत्थू पण्णत्ता। किरि-

यारिसाल पुव्वस्स गा तीस वत्थू पण्णत्ता। लोकबिंदुसार-पुव्वस्स ण पणुवीस वत्थू पण्णत्ता, गाहा—

दस १ चोद्दस २ अट्ठ ३ ऽट्ठारसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि। सोलस ७ तीस ८ वीसा ९ पन्नरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ३५ ॥

बारस इक्कारसमे, बारसमे तेरसेव वत्थूणि। तीसा पुण तेरसमे, चोद्दसमे पण्णवीसाओ ॥ ३६ ॥

चत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चेव दस ४ चेव चुल्लवत्थूणि। आइल्लाण चउण्हं, सेसाण चूलिया नत्थि ॥ ३७ ॥

से त्तं पुव्वगए।

से किं तं अणुओगे? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा मूलपढमाणुओगे; गंडियाणुओगे य। से किं तं मूलपढमाणुओगे? मूलपढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा, देवलोगगमणाइं, आउं, चवणाइं, जम्मणाणि, अभिसेया रायवरसिरीओ पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ, तित्थपवत्तणाणि य, सीसा, गणा, गणहरा, अज्जा पवत्तिणीओ संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं, जिणमणपज्जवओहिनाणी, सम्मत्तसुयनाणिणो य, वाई, अणुत्तरगईय, उत्तरवेउव्विणो य मुणिणो, जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जह देसिओ, जच्चिरं च कालं, पाओवगया जे जहिं जत्तियाइं भत्ताइं (अणसणाए) छेइत्ता अंतगडे, मुणिवरुत्तमे, तिमिरओघविप्पमुक्के मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्ते, एवमन्ने य एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिया, से त्तं मूलपढमाणुओगे। से किं तं गंडियाणुओगे? गंडियाणुओगे कुलगरगंडियाओ, तित्थयरगंडियाओ, चक्कवट्टिगंडि-

याओ, दसारगंडियाओ, बलदेवगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ गणधरगंडियाओ, भद्दबाहुगंडियाओ, तवोकम्मगंडियाओ, हरिवंसगंडियाओ, उस्सप्पिणीगंडियाओ, ओसप्पिणीगंडियाओ, चित्तंतरगंडियाओ, अमरनरतिरियनिरयगइगमणविविहपरियट्टणेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति पण्णविज्जंति से तं गंडियाणुओगे से तं अणुओगे ४ ॥

से किं तं चूलियाओ ? आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिया, सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं, से तं चूलियाओ ।

दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे एगे सुयक्खंधे चोद्दस पुव्वाइं, संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जापाहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा अणंता थावरा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं नाया एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जंति, से त्तं दिट्ठिवाए १२ ॥ सू० ॥ ५७ ॥

इच्चेइयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा, अणंता हेऊ, अणंता अहेऊ, अणंता कारणा, अणंता अकारणा, अणंता जीवा, अणंता अजीवा अणंता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा पण्णत्ता—

भावमभावा हेऊमहेऊ कारणमकारणे चेव ।
जीवाजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ३८ ॥

इच्चेइय दुवालसंग गणिपिडग तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंत संसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउ रंत संसारकंतारं अणुपरियट्टंति । इच्चेइयं दुवालसंग गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंत संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति ।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंत संसारकंतारं वीईवइंसु । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता चाउ रंत संसारकंतारं वीईवयंति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंत संसारकंतारं वीईवइस्संति ।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए निच्चे । से जहानामए पंचत्थिकाए न कयाइ नासी न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य धुवे, नियए सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए निच्चे, एवामेव दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ नत्थि न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए अवट्ठिए, निच्चे ।

से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा-दव्वओ खित्तओ,

कालश्रो, भावश्रो, । तत्थ दव्वश्रो णं सुयनाणी उवउत्ते सव्व दव्वाइं जाणइ पासइ खित्तश्रो णं सुयनाणी उवउत्ते सव्व खेत्तं जाणइ पासइ, कालश्रो णं सुयनाणी उवउत्ते सव्व कालं जाणइ पासइ, भावश्रो णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ ॥ सू० ५८ ॥

अक्खर सन्नी सम्मं, साइयं खलु सपज्जवसियं च ।
गमियं अंगपविट्ठं, सत्तवि एए सपडिवक्खा ॥ ३६ ॥
आगमसत्थग्गहणं जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं ।
बिंति सुयनाणलंभं तं पुव्वविसारया धीरा ॥ ४० ॥
सुस्सूसइ पडिपुच्छइ सुणेइ गिण्हइ य ईहए यावि ।
तत्तो अपोहए वा धारेइ करेइ वा सम्मं ॥ ४१ ॥
मूअं हुंकारं वा, वाढक्कार पडिपुच्छवीमंसा ।
तत्तो पसंगपारायणं च परिणिट्ठ सत्तमए ॥ ४२ ॥
सुत्तत्थो खलु पढमो, बीश्रो निज्जुत्तिमीसिश्रो भणिश्रो ।
तइश्रो य निरवसेसो, एस विही होइ अणुश्रोगे ॥ ४३ ॥
से त्तं अंगपविट्ठं, से त्तं सुयनाणं, से त्तं परोक्खनाणं, से त्तं नंदी ॥ नंदी समत्ता ॥



श्री अनुत्तरोववाइयदशांग सूत्रम्

तेण कालेण, तेण समएण रायगिहेणामणयरे होत्था, सेणियनामराया होत्था, चेलणा देवीए गुणसिलए चेइए वरणओ ॥ १ ॥

तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे, अज्ज-सुहम्मस्स समोसरण, परिसा णिग्गया धम्मकहिणो परिसा पडिगया ॥२॥

जंबू जाव पज्जुवासइ एव वयासी-जइ ण भंते ! समणेण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स ण भंते ! अगस्स अणुत्तरोववाइयदसाण समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ ३ ॥

तएण से सुहम्मे अणगारे, जम्बू अणगार एव वयासी एव खलु जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेण नवमस्स अगस्स अणुत्तरोववाइयदसाण तिण्णि वग्गा पण्णत्ता ॥ ४ ॥

जइ ण भंते ! समणेण जाव सपत्तेण नवमस्स अगस्स अणुत्तरोववाइयदसाण तओ वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स ण भन्ते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाण समणेण जाव सपत्तेण कइ अज्झयणा पण्णत्ता ? ॥ ५ ॥

एव खलु जम्बू ! समणेण जाव सपत्तेण अणुत्तरोववाइय

दसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता त जहा—
जालि, मयालि, उवयालि । पुरिससेणे य, वारिसेणे य, ।
दीहदंते य, लट्ठदंते य, वेहल्ले, वेहायसे, अभये-ति कुमारे ॥१॥६॥

जइ णं भन्ते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-
दसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स
णं भन्ते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?
॥ ७ ॥

एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे
रिद्धित्थिमिय-समिद्धे, गुणसिलए चेइए सेणिए राया, धारिणी
देवी, सीहसुमिणदंसिणाणं पडिबुद्धा जाव जालि कुमारे जाए,
जहा मेहो जाव अट्ठट्ठओ दाओ जाव उप्पि पासाय जाव
विहरइ ॥ ८ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव
समोसढे सेणिओ णिग्गओ, जहा मेहो तहा जाली वि णिग्गओ,
तहेव णिक्खन्तो, जहा मेहो एक्कारस अगाइं अहिज्जइ ॥ ९ ॥

तएणं से जाली अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे
तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमसइ २
त्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए
समाणे गुण रयणं संवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विह-
रित्तए ? अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ॥ १० ॥

तएणं से जाली अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं
अब्भणुण्णाए समाणे समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २
त्ता गुणरयणं संवच्छरं तवो कम्मं उवसंपज्जित्ताणं विह-
रइ । तंजहा—

१ पढम मास चउत्थ चउत्थेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय।

२ दोच्च मास छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण दिय ट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावण भूमिए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासेणेण अवाउडेणय।

३ तच्च मास अट्ठम अट्ठमेण अणिक्खित्तेण तवो कम्मेण दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे, आयावणभूमिए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय।

४ चउत्थ मास दसम दसमेण अनिक्खित्तेण तवोकम्मेण दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय।

५ पचम मास बारसम बारसमेण अनिक्खित्तेण तवो-कम्मेण दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावे माणे रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय।

६ छट्ठ मास चउदस चउदसमेण अणिक्खित्तेण तवो कम्मेण दियाट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावे माणे रत्तिंवीरासणेण अवाउडेणय।

७ सत्तम मास सोलसम सोलसमेण अनिक्खित्तेण तवो-कम्मेण दियट्ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण अवाउडेण य।

८ अट्ठम मासं अट्ठारसम अट्ठारसमेणं अनिक्खित्तेणं तवो

कम्मेणादियाट्ठाणुकडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आया- वेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडेणय ।

९ नवम मास वीसइम वीसइमेणं अनिक्खित्तेणं तवो- कम्मेणं दियट्ठाणुकडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आया- वेमाणे रत्ति वीरासणेणं अवाउडेणय ।

१० दसम मास बावीसाए बावीसइमेणं अनिक्खित्तेणं दियट्ठाणुकडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेणं अवाउडेणय ।

११ एकारसम मास चउवीसाए चउवीसइमेणं अनिक्खित्त तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुकडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेणं अवाउडेणय ।

१२ बारसम मास छव्वीसाए छव्वीसइमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुकडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आया वेमाणे रत्ति वीरासणेणं अवाउडेणय ।

१३ तेरसम मास अट्ठावीसाए अट्ठावीसइमेणं अनिक्खि- त्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुकडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेणं अवाउडेणय ।

१४ चउदसम मास तीसइम तीसइमेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियट्ठाणुकडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आया वेमाणे रत्ति वीरासणेणं अवाउडेणय ।

१५ पन्नरसम मास बत्तीसइमं बत्तीसइमेणं अनि- तवोकम्मेणं दियट्ठाणुकडुए सूराभिमुहे

वेमाणे रत्ति वीरासणेणं अवाउडेणय ।

१६ सोलम मास चोत्तीसइम चोत्तीसइमेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे रत्ति वीरासणेणं अवाउडेणय ॥ ११ ॥

तए णं से जालि अणगारे गुणरयणं संवच्छरं तवोकम्मं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासित्ता पालित्ता सोहित्ता तिरित्ता किट्टित्ता आणाए आराहित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदइत्ता नमंसइत्ता बहूहिं चउत्थछट्ठ अट्ठमदसमदुवालसेहिं मासेहिं अद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १२ ॥

तए णं से जाली अणगारे तेणं उरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं एवं जा चेव जहा खंदगस्स वत्तव्वया सा चेव चिंतणा, आपुच्छणा थेरेहिं सद्धिं विपुलं तहेव दुरुहति, णवरं सोलस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए कप्पे नव य गेवेज्जे विमाणपत्थडे उड्ढं दूरं वीतीवतित्ता विजयविमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥ १३ ॥

तए णं ते थेरा भगवंता जालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति, पत्तचीवराइं गिण्हंति तहेव उत्तरंति जाव इमे से आयारभंडए ॥ १४ ॥

भंतेत्ति ! भगवं गोयमे जाव एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी जाली नाम अणगारे पगइभद्दए, से णं

जाली अणगारे कालगए कहिं गए, कहिं उववण्णे ? । एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी तहेव जहा खंदयस्स जाव कालगए उड्ढं चंदिमाइ जाव विजए विमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥ १५ ॥

जालिस्स णं भन्ते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ १६ ॥

से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिईक्खएणं कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ? । गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सइ ॥ १७ ॥

एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

एवं सेसाणवि अट्ठण्हं भाणियव्वं । नवरं छ धारिणिसुआ वेहल्लवेहायसा चेल्लणाए । अभयस्स नाणत्तं—रायगिहे नगरे, सेणिए राया नंदा देवी माया, सेसं तहेव । आइल्लाणं पंचण्हं सोलस वासाइं सामण्णपरियाओ तिण्हं बारस वासाइं दोण्हं पंच वासाइं । आइल्लाणं पंचण्हं अणुपुव्वीए उववाओ, विजए वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । दीहदंते सव्वट्ठसिद्धे अणुक्कमेणं सेसा । अभओ विजये । सेसं जहा पढमे ।

एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

॥ इति पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा सम

वेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेणय ।

१६ सोलस मास चोत्तीसइम चो
दियट्ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभू
वीरासणेणं अवाउडेणय ॥ ११ ॥

तए णं से जालि अणगारे गुणरय
अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातं
पालित्ता सोहित्ता तिरित्ता किट्टित्ता
समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छ
महावीरं वंदइ नमसइ वंदइत्ता नमं
अट्ठमदसमदुवालसेहिं मासेहिं अद्ध
तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहर

तए णं से जाली अणगारे तेणं
पग्गहिएणं एवं जा चेव जहा खंद
चिन्तणा, आपुच्छणा थेरेहिं सद्धिं वि
सोलस वासाइं सामण्णपरियागं पा
च्चा उड्ढं चंदिमसोहम्मीसाणं जाव
य गेवेज्ज विमाणपत्थडे उड्ढं दूरं वीत
देवत्ताए उववण्णे ॥ १२ ॥

तए णं ते थेरा भगवन्तो जालिं अ
परिनिव्वाणवत्तियं काउसग्गं करेंति,
तहेव उत्तारेंति जाव इमे से आयारभ

भंतेत्ति ! भगवं गोयमे जाव एवं
णुप्पियाणं अन्तेवासी जाली नाम अण

एव खलु जम्बू ! समणेणं जाव सपत्तेणं अणुत्तरोववाइय दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, मासियाए सलेहणाए दोसुवि वग्गेसु ॥ त्ति बेमि ॥

॥ बीओ वग्गो समत्तो ॥

॥ तृतीय वर्ग ॥

जइ णं भन्ते ! समणेणं जाव सपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तच्चस्स णं भन्ते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ १ ॥

एव खलु जम्बू ! समणेणं जाव सपत्तेणं अणुत्तरोववाइय दसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता तजहा—

धण्णे य, सुनक्खत्ते य, इसिदासे य, आहिते ।
पल्लए, रामपुत्ते य, चन्दिमा, पिट्ठिमाइ य ॥ १ ॥
पढालपुत्ते अणगारे, नवमे पोट्टिले इ य ।
वेहल्ले, दसमे वुत्ते इमे य दस आहिया ॥ २ ॥

जइ णं भन्ते ! समणेणं जाव सपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भन्ते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ ३ ॥

एव खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकन्दी नाम नयरी होत्था रिद्धित्थिमियसमिद्धा, सहस्सम्बवणे उज्जाणे स सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे जाव पासाइए, जियसत्तू राया ॥ ४ ॥

॥ द्वितीय-वर्ग ॥

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ १ ॥

एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइ-यदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता ? तंजहा-

दीहसेणे महासेणे, लट्ठदन्ते य, गुढदंते य, ।
सुद्धदंते य, हल्ले, दुमे, दुमसेणे, महादुमसेणे य आहिए॥१॥
सीहे य, सीहसेणे य, महासीहसेणे य आहिए ।
पुण्णसेणे य बोधव्वे, तेरसमे होति अज्झयणे ॥ २ ॥

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइय-दसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स समणेणं जाव संप-त्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए सेणिए राया, धारिणी देवी, सीहो सुमिणे जहा जाली तहा जम्मं, बालत्तणं कलाओ, णवरं दीहसेणे कुमारे सव्वे वत्तव्वया, जहा-जालिस्स जाव अंतं काहिति ॥१॥

एवं तेरसवि, रायगिहे नयरे, सेणिओ पिया, धारिणी माया तेरसण्हवि सोलसवासाए परियाए मासियाए संलेहणाए आणु पुव्वीए उववाओ विजए दोण्णि, विजयंते दोण्णि, जयंते दोण्णि, [illegible] दोण्णि, सेसा महादुमसेणमाइए पंच सव्वट्ठसिद्धे ॥२॥

े धण्णे अणगारे, जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता
ं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ
मंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु इच्छामि णं
ुमेहिं अब्भणुण्णाए समाणे जावज्जीवाए छट्ठं-
ं अणिक्खित्तेणं आयंबिल-परिग्गहिएणं तवोकम्मेणं
अप्पाणं भावेमाणे विहरित्तए, छट्ठस्सवि य णं पारणगंसि
कप्पइ मे आयंबिलं पडिग्गाहित्तए, णो चेव णं अणायंबिलं,
तंपि य संसट्ठं णो चेव णं असंसट्ठेणं तंपि य णं उज्झिय-
धम्मियं णो चेव णं अणुज्झियधम्मियं, तंपि य णं जं अन्ने बहवे
समणमाहण अतिहि-किवण-वणिमगा णावकंखति। अहासुहं
देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह ॥ १० ॥

तएणं से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं
अब्भणुण्णायसमाणे हट्ठतुट्ठ जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणि-
क्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ११ ॥

तएणं से धण्णे अणगारे पढम-छट्ठक्खमण-पारणयंसि पढ
माए पोरिसीए सज्झायं करेति जहा गोयमस्वामी तहेव आपु
च्छति जाव जेणेव कायन्दी णयरी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता
कायन्दीए नयरीए उच्चनीय जाव अडमाणे आयंबिलं जाव
नावकंखति ॥ १२ ॥

तए णं से धण्णे अणगारे ताए अब्भुज्जताए पयत्ताए पग्ग
हियाए एसणाए एसमाणे जइ भत्तं लभइ तो पाणं ण लभइ,
अह पाणं लभइ तो भत्तं ण लभइ ॥ १३ ॥

तए णं धण्णे अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसादी
अपरितंतजोगी जयणघडण-जोग चरित्ते अहापज्जत्तं समुदाणं

तत्थ णं काकन्दीए नयरीए भद्दा णामं सत्थवाही परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया ॥ ५ ॥

तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते धन्ने नामं दारए होत्था अहीण जाव सुरूवे, पंचधाई-परिग्गहिए, तंजहा—खीरधाईए जहा महब्बलो जाव बावत्तरिं कलाओ अहिए जाव अलं भोग समत्थे जाए यावि होत्था ॥ ६ ॥

तए णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णं दारयं उम्मुक्कबालभावं जाव भोगसमत्थं जाणित्ता, बत्तीसं पासायवडिंसए कारेइ अब्भुग्गयमूसिए जाव तेसिं मज्झे अणेग-भवण-खंभ-सय-सन्निविट्ठं जाव बत्तीसाए इब्भवरकन्नगाणं एगदिवसे णं पाणिं गिण्हावेइ २ त्ता बत्तीसाओ दाओ जाव उप्पिं पासायवडिंसए फुट्टंतेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव विहरइ ॥ ७ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, परिसा निग्गया, जहा कोणिओ तहा जियसत्तू णिग्गओ ॥ ८ ॥

तए णं तस्स धण्णस्स तं महया जणसद्दं जहा जमाली तहा णिग्गओ, णवरं पायचारेणं जाव जं णवरं अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ, मुच्छिया, वुत्तपडिवुत्तया, जहा महब्बले जाव जाहे नो संचाइया, जहा थावच्चापुत्ते तहा जियसत्तू आपुच्छइ, छत्त-चामराओ, सयमेव जियसत्तू निक्खमणं करेइ, जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो, जाव पव्वइए, अणगारे जाए, ईरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी ॥ ९ ॥

तए णं से धण्णे अणगारे, जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु इच्छामि णं भन्ते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे जावज्जीवाए छट्ठं-छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिल-परिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरित्तए, छट्ठस्सवि य णं पारणयंसि कप्पइ मे आयंबिलं पडिग्गाहित्तए, णो चेव णं अणायंबिलं, तंपि य संसट्ठं णो चेव णं असंसट्ठं, तं पि य णं उज्झिय-धम्मियं णो चेव णं अणुज्झियधम्मियं, तंपि य णं जं अन्ने बहवे समणमाहण-अतिहि-किवण-वणीमगा णावकंखंति । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ॥ १० ॥

तए णं से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णायसमाणे हट्ठ तुट्ठ जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ११ ॥

तए णं से धण्णे अणगारे पढम-छट्ठक्खमण पारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेति जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छति जाव जेणेव काकंदी णयरी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता काकंदीए णयरीए उच्चणीय जाव अडमाणे आयंबिलं जाव णावकंखंति ॥ १२ ॥

तए णं से धण्णे अणगारे ताए अब्भुज्जयाए पययाए पग्गहियाए एसणाए एसमाणे जइ भत्तं लभइ तो पाणं ण लभइ, अह पाणं लभइ तो भत्तं ण लभइ ॥ १३ ॥

तए णं से धण्णे अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसादी अपरितंतजोगी जयणघडण-जोग चरित्ते अहापज्जत्तं समुदाणं

पडिगाहेइ २ त्ता काकन्दीओ णयरीओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जहा गोयम तहा पडिदंसेइ ॥ १४ ॥

तए णं से धण्णे अणगारे, समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं आहारं आहारेइ २ त्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १५ ॥

तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ काकन्दीओ णयरीओ सहस्सम्बवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ १६ ॥

तए णं से धण्णे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति २ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १७ ॥

तए णं से धण्णे अणगारे तेणं ओरालेणं जहा खंदओ जाव सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलंते उवसोभेमाणे चिट्ठति ॥ १८ ॥

धण्णस्स णं अणगारस्स पायाणं अयमेयारूवे तवरूव-लावण्णे होत्था से जहानामए सुक्कछल्लीइ वा, कट्ठपाउयाइ वा, जरग्गओवाहणाइ वा, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स पाया सुक्का भुक्खा लुक्खा निम्मंसा अट्ठिचम्मछिरत्ताए पण्णायंति, नो चेव णं मंससोणियत्ताए ॥ १९ ॥

धण्णस्स णं अणगारस्स पायंगुलियाणं अयमेयारूवे तव-रूवलावण्णे होत्था से जहानामए कलसंगलियाइ वा मुग्ग-माससंगलियाइ वा, तरुणिया छिण्णा उण्हे दिण्णा सुक्का मिलायमाणी मिलायमाणी चिट्ठंति, एवामेव धण्णस्स

पायगुलियाओ सुक्काओ जाव णो मंससोणियत्ताए ॥ २० ॥

धन्नस्स अणगारस्स जंघाए अयमेयारूवे-से जहानामए कक्कजंघाइ वा, काकजंघाइ वा, ढेणियालियाजंघाइ वा, एव जाव सोणियत्ताए ॥ २१ ॥

धन्नस्स णं जाणूणं अयमेयारूवे से जहानामए-कालिपोरेइ वा, मयूरपोरेइ वा, ढेणियालियापोरेइ वा एव जाव सोणियत्ताए ॥ २२ ॥

धन्नस्स णं उरूणं-जहा नामए सामकरिल्लेइ वा, बोरिकरिल्लेइ वा, सल्लइयकरिल्ले वा, सामलिकरिल्लेइ वा, तरुणिया छिन्ना उण्हे दिन्ना जाव चिट्ठइ, एवामेव धन्नस्स उरूणं जाव सोणियत्ताए ॥ २३ ॥

धन्नस्स णं कडिपत्तस्स इमेयारूवे, से जहानामए उट्टपाएइ वा, जरग्गपाएइ वा महिसपाएइ वा जाव सोणियत्ताए ॥ २४ ॥

धन्नस्स णं उदरभायणस्स अयमेयारूवे से जहा नामए सुक्कदिए इवा भज्जणय कभल्ले इवा, कट्टकोलंबए इवा, एवा उदरंसुक्कं । २५ ॥

धन्नस्स णं पासुलियाकडयाणं [illegible] से जहा नामए थासयावलीइ वा पाणावलीइ वा, [illegible] वा एव ॥ २६ ॥

धन्नस्स पिट्ठकरंडगाणं अयमेयारूवे से जहा नामए [illegible] वलीइ वा, गोलावलीइ वा, [illegible] वा, एवा [illegible]

धन्नस्स उरकडयस्स अयमेयारूवे से जहा [illegible] कट्टरेइ वा, वियणपत्तेइ वा, [illegible]

धन्नस्स बाहाणं से जहा नामए समिसंगलियाइ वा, पहाया सगलियाइ वा, अगत्थियसंगलियाइ वा; एवामेव० ॥ २९ ॥

धण्णस्स हत्थाणं अयमेयारूवे से जहा नामए-सुक्कछगणियाइ वा वडपत्तेइ वा, पलासपत्तेइ वा एवामेव० ॥३०॥

धण्णस्स हत्थंगुलियाणं से जहा नामए-कलसंगलियाइ वा, मुग्ग-माससंगलियाइ वा, तरुणिया छिन्ना आयवे दिण्णा सुक्का समाणी एवामेव० ॥ ३१ ॥

धन्नस्स गीवाए से जहा नामए-करगगीवाइ वा, कुंडिया गीवाइ वा, [कोत्थवणाइ वा] उच्चट्ठवणएइ वा एवामेव० ॥३२॥

धन्नस्स णं हणुयाए से जहा नामए-लाउफलेइ वा, हकुवफलेइ वा अंबगट्ठियाइ वा एवामेव० ॥ ३३ ॥

धन्नस्स णं उट्ठाणं से जहा नामए-सुक्कजलोयाइ वा, सिलेसगुलियाइ वा, अलत्तगुलियाइ वा, [अंबाडगपेसीयाइ वा] एवामेव० ॥ ३४ ॥

धन्नस्स जिब्भाए से जहा नामए वडपत्तेइ वा, पलासपत्तेइ वा [उंबरपत्तेइ वा] सागपत्तेइ वा एवामेव० ॥ ३५ ॥

धन्नस्स नासाए से जहा नामए-अंबग पेसियाइ वा, अंबाडगपेसियाइ वा, माउलिंगपेसियाइ वा, तरुणियाइ वा, एवामेव० ॥ ३६ ॥

धण्णस्स अच्छीणं से जहा नामए-वीणाछिड्डेइ वा बद्धीसगछिड्डेइ वा, पाभाइयतारगाइ वा, एवामेव० ॥ ३७ ॥

तए णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इमेसि णं भंते ! इंदभूइपामोक्खाणं चउद्दसण्हं समणसाहस्सीणं कयरे अणगारे महादुक्करकारए चेव महाणिज्जरतराए चेव ? ॥ ४४ ॥

एवं खलु सेणिया ! इमेसिं इंदभूइपामोक्खाणं चउद्दसण्हं समणसाहस्सीणं धन्ने अणगारे महादुक्करकारए चेव, महानिज्जरतराए चेव ॥ ४५ ॥

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ इमेसिं चउद्दसण्हं समणसाहस्सीणं धन्ने अणगारे महादुक्करकारए चेव महानिज्जरतराए चेव ॥ ४६ ॥

एवं खलु सेणिया ! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकन्दी नामं नयरी होत्था, जाव उप्पिं पासायवडिंसए विहरइ । तए णं अहं अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्वीए चरमाणे गामाणुगामं दुइज्जमाणे जेणेव काकन्दी नयरी जेणेव सहस्सम्बवणे उज्जाणे तेणेव उवागए २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा जाव विहरामि । परिसा णिग्गया, तं चेव जाव पव्वइए जाव बिलमिव जाव आहारेति धन्नस्स णं अणगारस्स पादाणं सरीरवण्णओ सव्वो जाव उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ । से तेणट्ठेणं सेणिया ! एवं वुच्चइ इमेसिं चउद्दसण्हं समणसाहस्सीणं धन्ने अणगारे महादुक्करकारए चेव महानिज्जरतराए चेव ॥ ४७ ॥

तते णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं आयाहिणं पयाहिणं करेइ वंदइ नमंसइ २ त्ता

गणेर घंग्रे अणगारे तेणेव उवागन्छइ २ त्ता धन्न अणगार तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ वदइ नमसइ, वदइत्ता नमसइत्ता एव वयामी–धण्ण सि ण तुम देवाणुप्पिया ! सुपुण्णे सुकयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे ण देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले त्ति कट्टु वदइ नमसइ २ त्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागन्छइ २ त्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो जाव वदइ २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ ४८ ॥

तए ण तस्स धन्नस्स अणगारस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था, एव खलु अह इमेण ओरालेण जहा खदओ तहेव चिन्ता, आपुच्छण, थेरेहिं सद्धिं विपुल दुरूहइ, । मासियाए सलेहणाए नवमासा परियाओ जाव कालमासे काल किच्चा उड्ढ चदिम जाव नवयगेविज्जविजयविमाणपत्थडे उड्ढ दूर वीईवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववन्ने ॥ ४६ ॥

थेरा तहेव उत्तरति जाव इमे से आयारभडए ॥ ५० ॥

भते त्ति, भगव गोयमे तहेव पुच्छइ जहा खदयस्स भगव वागरेति जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे उववन्ने ॥ ५१ ॥

धन्नस्स ण भन्ते ! देवस्स केवइय काल ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता ॥ ५२ ॥

से ण भते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण कहिं उववज्जेहिति ? गोयमा !

महाविदेहवासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ स व्वदुक्खाणमंत करेहिइ ॥ ५३ ॥

एवं खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संप-त्तेणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ ५४ ॥

॥ पढम अज्झयणं समत्त ॥

जइ णं भन्ते ! उक्खेवओ एव खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं कायन्दी नयरी होत्था, भद्दा सत्थवाही परिव-सइ ॥ १ ॥

तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते सुनक्खत्ते नामं दारए होत्था, अहीण० जाव सुरूवे, पंचधाइ-परिक्खित्ते जहा धन्नो-तहेव बत्तीसओ दाओ जाव उप्पिं पासायवडिंसए विह-रइ ॥ २ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जहा धन्नो तहा सुनक्खत्तेवि निग्गओ जहा थावच्चापुत्तस्स तहा निक्ख मणं जाव अणगारे जाए ईरियासमिए जाव गुत्तबम्भया-रिए ॥ ३ ॥

तए णं से सुनक्खत्ते अणगारे जं चेव दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वइए तं चेव दिवसं अभिग्गहं तहेव बिलमिव पन्नगभूएणं आहारं आहारेइ, संजमेणं जाव विहरइ ॥ ४ ॥

समणे जाव बहिया जणवयविहारं विहरइ। एक्कारस अहिज्जइ, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। ५॥

तएणं से सुनक्खत्ते अणगारे तेणं उरालेणं जहा खन्दओ ॥ ६ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए, सेणिए राया सामी समोसढे, परिसा णिग्गया, राया णिग्गओ धम्मकहा राया पडिगओ, परिसा पडिगया ॥ ७ ॥

तएणं तस्स सुनक्खत्तस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्ता जाव धम्मजागरिय जहा खन्दयस्स बहुवासाओ परियाओ ॥ ८ ॥

गोयमपुच्छा जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । जाव महाविदेहवासे सिज्झिहिति ॥ ९ ॥

॥ इति तइय अज्झयणं समत्तं ॥

एवं खलु जम्बू ! सुनक्खत्तगमेणं सेसावि अट्ठ भाणियव्वा, णवरं आणुपुव्वीए दोन्नि रायगिहे, दोन्नि साएए दोन्नि वाणियग्गामे नवमो हत्थिणापुरे दसमो रायगिहे ॥ १ ॥

नवण्हं भद्दाओ जणणीओ, नवण्हवि बत्तीसओ दाओ नवण्हं निक्खमणं थावच्चापुत्तस्स सरिसं वेहल्लस्स पिया करेइ नवमास धन्ने वेहल्ले छम्मासपरियाए, सेसाणं बहूवासे मास संलेहणा सव्वे महाविदेहे सि[illegible] हेंति । एवं अज्झयणाणि । एवं खलु जम्बू [illegible] भगवया म[illegible] अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स [illegible] अयमट्ठे [illegible] अणुत्तरोववाइयदसाओ समत्ताओ अणुत्तरोव[illegible] वग्गो सुयक्खंधो तिन्नि वग्गा [illegible] दिवसेसु [illegible] पढमे वग्गे दस उद्देसगा [illegible] वग्गे दस [illegible] सेसं [illegible]

॥ दशाश्रुतस्कध चित्त-समाधि पञ्चमी दशा ॥

नमो सुयदेवयाए भगवतीए ॥ सुय मे आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय, इह खलु थेरेहिं भगवतेहिं दस चित्त-समाहि-ठाणा पन्नत्ता । कयरा खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं दस चित्त-समाहिठाणा-पण्णत्ता ? इमे खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस-चित्तसमाहिठाणा-पन्नत्ता तजहा—तेण कालेण तेण समएण वाणियग्गामे नगरे होत्था, नगर-वण्णओ भाणियव्वो ॥ १ ॥

तस्स ण वाणियग्गामस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए दूतिपलासए नाम चेइए होत्था, चेइए वण्णओ भाणियव्वो ॥ २ ॥

जियसत्तू राया, तस्स धारिणी नाम देवी एव सव्वं समोसरणं भाणियव्व जाव पुढविसिलापट्टए, सामी समो-सढे परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ परिसा पडिगया ॥ ३ ॥

अज्जो ! इति समणे भगव महावीरे समणाय समणीओ य निग्गथा य निग्गथीओ य आमतित्ता एव वयासी-इह खलु अज्जो ! निग्गथाण वा, निग्गथीण वा इरियासमियाण, भासासमियाणं, एसणासमियाण, आयाणभड-मत्त-निक्खेवणा-समियाण, उच्चारपासवण-खेल-जल्लसिंघाण-पारिट्ठावणिया-समियाणं, मण समियाण, वय-समियाण, काय-समियाण, मण-गुत्ति

याए, वय-गुत्तियाए, काय-गुत्तियाए, गुत्ति-दियाण गुत्त-
बंभयारीण, आयट्ठीण, आय-हियाण, आय जोयण, आय परि
क्कमाण पक्खिए-पोसहिएसु समाहि पत्ता ण झियायमाणाण
इमाइ दसचित्तसमाहि-ट्ठाणाइ असमुप्पण्ण-पुव्वाइ समुप्प-
ज्जिज्जा तंजहा—धम्मचिंता वा से असमुप्पण्ण-पुव्वाइ समुप्प
ज्जेज्जा सव्व धम्म जाणित्तए ॥ १ ॥

सुमिण दंसिण वा से असमुप्पण्ण पुव्वे समुप्पज्जेज्जा, अहा
तच्च सुमिण पासित्तए, सन्नि जाइ-सरणेण सन्निणाण वा
से असमुप्पण्ण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा अप्पणो पोराणिय जाइ
समरित्तए ॥ २ ॥

देव-दंसणे वा से असमुप्पण्ण पुव्वे समुप्पज्जेज्जा दिव्व
देवड्ढि दिव्व देव जुइ दिव्व देवाणुभाव पासित्तए ॥ ४ ॥

ओहिणाणे वा से असमुप्पण्ण पुव्वे समुप्पज्जेज्जा, ओहिणा
लोग जाणित्तए ॥ ५ ॥

ओहि दंसणे वा से असमुप्पण्ण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा अहा
इज्जेसु दीव-समुद्देसु सण्णीण पचिंदियाण पज्जत्तगाण मणो-
गए भावे जाणित्तए ॥ ७ ॥

केवलनाणे वा से असमुप्पण्ण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवल-
कप्प लोया-लोय जाणित्तए ॥ ८ ॥

केवल-दंसणे वा से असमुप्पण्ण पुव्वे समुप्पज्जेज्जा
केवलकप्प लोयालोय पासित्तए ॥ ९ ॥

केवल मरणे वा से असमुप्पण्ण-पुव्वे समुप्पज्जेज्जा सव्व

सुक्क मूले जहा रुक्खे सिच्चमाणे ण रोहति।
एवं कम्मा ण रोहंति मोहणिज्जे खयं गए ॥ १४ ॥
जहा दड्ढाण बीयाणं न जायंति पुण अंकुरा।
कम्म बीएसु दड्ढेसु न जायंति भवंकुरा ॥ १५ ॥
चिच्चा ओरालियं बोंदि, नाम गोयं च केवली।
आउयं वेयणिज्जं च छित्ता भवति नीरय ॥ १६ ॥
एवं अभिसमागम्म, चित्तमादाय आउसो।
सेणिसुद्धिमुवागम्म आया सुद्धिमुवागइ॥ त्ति बेमि ॥१७॥

॥ इति चित्तसमाहि-नाम-पंचमी दसा ॥

॥ चउसरण पइण्णा ॥

सावज्जजोगविरई उक्कित्तण गुणवओ य पडिवत्ती।
खलियस्स निंदणा वणतिगिच्छ, गुणधारणा चेव ॥१॥
चारित्तस्स विसोही कीरइ सामाइएण किल इहयं।
सावज्जेयरजोगाण वज्जणासेवणत्तणओ ॥ २ ॥
दंसणयारविसोही चउवीसायत्थएण किच्चइ य।
अच्चब्भुयगुणकित्तणरूवेण जिणवरिंदाण ॥ ३ ॥
नाणाईआ उ गुणा तस्संपन्नपडिवत्तिकरणाओ।
वंदणएण विहिणा कीरइ सोही उ तेसिं तु ॥ ४ ॥
खलियस्स य तेसिं पुणो विहिणा जं निंदणाइ प
तेण पडिक्कमणेणं तेसिंपि य कीरए सोही ॥ ५

चरणाईयारा णं जहक्कम्म वणतिगिच्छरूवेण ।
पडिक्कमणासुद्धाणं सोही तह काउसग्गेण ॥ ६ ॥
गुणधारणरूवेणं पच्चक्खाणेण तवइआरस्स ।
विरिआयारस्स पुणो सव्वेहिवि कीरए सोही ॥ ७ ॥
गय[1] वसह[2] सीह[3] अभिसेअ[4] दाम[5] ससि[6] दिणयर[7] झय[8] कुंभ[9]।
पउमसर[10] सागर[11] विमाण भवण[12] रयणुच्चय[13] सिहिं[14] च ८
अमरिंदनरिंदमुणिंदवंदिअ वंदिउ महावीरं
कुसलाणुबंधि बंधुरमज्झयणं कित्तइस्सामि ॥ ९ ॥
चउसरणगमण दुक्कडगरिहा सुकडाणुमोअणा चेव ।
एस गणो अणवरयं कायव्वो कुसलहेउत्ति ॥ १० ॥
अरहंत सिद्ध साहू केवलिकहिओ सुहावहो धम्मो ।
एए चउरो चउगइहरणा सरणं लहइ धन्नो ॥ ११ ॥
अह सो जिणभत्ति-भरुत्थरंत रोमंच-कंचुअ-करालो ।
पहरिसपणउम्मीसं सीसंमि कयंजलि भणइ ॥ १२ ॥
रागद्दोसारीणं हंता कम्मट्ठगाइअरिहंता ।
विसय-कसायारीणं अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १३ ॥
रायसिरिमुवकसि (सि) त्ता तवचरणं दुच्चरं अणुचरित्ता।
केवलसिरिमरिहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १४ ॥
थुइ वंदणमरिहंता अमरिंद नरिंदपूअमरिहंता ।
सासयसुहमरहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १५ ॥
परमणगय मुणंता जोइंदमहिंदझाणमरहंता ।
धम्मकहं अरहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १६ ॥
सव्वजिआणमहिंसं अरहंता सच्चवयणमरहंता ।
बंभव्वयमरहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १७ ॥
ओसरणमवसरित्ता चउतीसं अइसए निसेवित्ता ।
धम्मकहं च कहंता अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १८ ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥

केवलिणो परमोही विउलमई सुयहरा जिणमयंमि ।
आयरिय उवज्झाया ते सव्वे साहुणो सरणं ॥ ३२ ॥
चउदस-दस-नवपुव्वी दुवालसिक्कारसंगिणो जे अ ।
जिणकप्पाहालंदिअपरिहार-विसुद्धि-साहू अ ॥ ३३ ॥
खीरासवमहुआसवसंभिन्नस्सोअकुट्ठबुद्धी अ ।
चारणवेउव्विपयाणुसारिणो साहुणो सरणं ॥ ३४ ॥
उज्झियवइरविरोहा निच्चमदोहा पसंतमुहसोहा ।
अभिमयगुणसंदोहा हयमोहा साहुणो सरणं ॥ ३५ ॥
खंडिअसिणेहदामा अकामधामा निकाममुहकामा ।
सुपुरिसमणाभिरामा आयारामा मुणी सरणं ॥ ३६ ॥
मिल्हिअविसयकसाया उज्झियघरघरणिसंगसुहसाया ।
अकलिअहरिसविसाया साहू सरणं गयपमाया ॥ ३७ ॥
हिंसाइदोससुन्ना कयकारुन्ना सयंभुरुप्पन्ना-(प्पुण्णा) ।
अजरामरपहखुन्ना साहू सरणं सुकयपुन्ना ॥ ३८ ॥
कामविडंबणचुक्का कलिमलमुक्का विवि [मु] क्कचोरिक्का ।
पावरय-सुरयरिक्का साहू गुणरयणचच्चिक्का ॥ ३९ ॥
साहुत्तसुट्ठिआ जं आयरिआई तओ य ते साहू ।
साहुभणिएण गहिया तम्हा ते साहुणो सरणं ॥ ४० ॥
पडिवन्नसाहुसरणो सरणं काउं पुणोवि जिणधम्मं ।
पहरिसरोमंचपवंचकंचुअंचिअतणू भणइ ॥ ४१ ॥
पवरसुकएहिं पत्तं पत्तेहिंवि नवरि केहिंवि न पत्तं ।
तं केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवन्नोऽहं ॥ ४२ ॥
पत्तेण अपत्तेण य पत्ताणि अ जेण नरसुरसुहाइं ।
मुक्खसुहं पुण पत्तेण नवरि धम्मो स मे सरणं ॥ ४३ ॥
निद्दलिअकलुसकम्मो कयसुहजम्मो खलीकय-अहम्मो ।
पमुहपरिणामरम्मो सरणं मे होउ जिणधम्मो ॥ ४४ ॥

कालत्तएवि न मयं जम्मण-जरमरणवाहिसय समयं ।
अमयं व बहुमयं जिणमयं च सरणं पवन्नोऽहं ॥ ४५ ॥
पसमियकामपमोहं दिट्ठादिट्ठेसु नकलिअविरोहं ।
सिवसुहफलयममोहं धम्मं सरणं पवन्नोऽहं ॥ ४६ ॥
नरय-गइ गमणरोहं गुणसंदोहं पवाइनिक्खोहं ।
निहणियवम्महजोहं धम्मं सरणं पवन्नोऽहं ॥ ४७ ॥
भासुर-सुवन्न सुंदर रयणालंकार गारव महग्घं ।
निहिमिव दोगच्चहरं धम्मं जिणदेसिअं वंदे ॥ ४८ ॥
चउसरणगमणसंचिअसुचरिअरोमंचअंचियसरीरो ।
कयदुक्कडगरिहो असुहक्खयकखयवखिरो भणइ ॥ ४९ ॥
इहभवियमन्नभवियं मिच्छत्तपवत्तणं जमहिगरणं ।
जिणपवयणपडिकुट्ठं दुट्ठं गरिहामि तं पावं ॥ ५० ॥
मिच्छत्ततमंधेणं अरिहंताइसु अवन्नवयणं जं ।
अन्नाणेण विरइयं इण्हिं गरिहामि तं पावं ॥ ५१ ॥
सुअधम्म संघसाहुसु पावं पडिणीअयाइ जं रइअं ।
अन्नेसु अ पावेसु इण्हिं गरिहामि तं पावं ॥ ५२ ॥
अन्नेसु अ जीवेसु मित्ती-करुणाइ-गोयरेसु कयं ।
परिआवणाइ दुक्खं इण्हिं गरिहामि तं पावं ॥ ५३ ॥
जं मणवयकाएहिं कयकारिअ-अणुमईहिं आयरियं ।
धम्मविरुद्धमसुद्धं सव्वं गरिहामि तं पावं ॥ ५४ ॥
अह सो दुक्कडगरिहादलिउक्कडदुक्कडो फुडं भणइ ।
सुकडाणुरायसमुइन्नपुन्नपुलय-कुरकरालो ॥ ५५ ॥
अरिहत्तं अरिहंतेसु जं च सिद्धत्तणं च सिद्धेसु ।
आयारं आयरिए उज्झायत्तं उवज्झाए ॥ ५६ ॥

साहूण साहुचरिअं च देसविरइं च सावय-जणाणं ।
अणुमन्ने सव्वेसिं सम्मत्तं सम्मदिट्ठीणं ॥ ५७ ॥

अहवा सव्वं चिअ वीयरायवयणाणुसारि जं सुकडं ।
कालत्तएवि तिविहं अणुमोएमो तयं सव्वं ॥ ५८ ॥
सुहपरिणामो निच्चं चउसरणगमाइ आयरं जीवो ।
कुसलपयडीउ बंधइ बद्धाउ सुहाणुबंधाउ ॥ ५९ ॥
मंदाणुभावा बद्धा तिव्वाणुभावाउ कुणइ ता चेव ।
असुहाउ निरणुबंधाउ कुणइ तिव्वाउ मंदाउ ॥ ६० ॥
ता एयं कायव्वं बुहेहि निच्चंपि संकिलेसंमि ।
होइ तिकालं सम्मं असंकिलेसंमि सुकयफलं ॥ ६१ ॥
चउरंगो जिणधम्मो न कओ चउरंगसरणमवि न कयं ।
चउरंगभवुच्छेओ न कओ हा हारिओ जम्मो ॥ ६२ ॥
इअ-जीवपमायमहारिवीर-भद्दंतमे-यमज्झयणं ।
झाएसु तिसंझमवंझ-कारणं निव्वुइसुहाणं ॥ ६३ ॥

॥ चउसरणं समत्तं ॥ १ ॥

॥ सुभाषित ॥

पंच-महव्वय-सुव्वय-मूलं, समण-मणाइल-साहु सुचिन्नं ।
वेरविरमणपज्जवसाणं सव्वसमुद्दमहोदधी तित्थं ॥ १ ॥
तित्थकरेहि सुदेसियमग्गं नरग-तिरिय विवज्जिय-मग्गं ।
सव्व पवित्त सुनिम्मियसारं, सिद्धिविमाण अवंगुय दारं ॥ २ ॥
देव नरिंद-नमंसिय-पूइयं, सव्वजगुत्तम मंगल मग्गं ।
दुद्धरिसं गुण-नायगमेगं, मोक्खपहस्स-वडिंसगभूयं ॥ ३ ॥

धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइम धम्म सारही ।
धम्मारामे रया दंते, बंभचेर-समाहिए ॥ ४ ॥

देव-दाणव-गंधव्वा, जक्ख-रक्खस्स किन्नरा ।
बंभयारिं नमंसंति दुक्करं जे करंति तं ॥ ५ ॥

एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए ।
सिद्धा सिज्झंति चाणेण, सिज्झिस्संति तहावरे ॥ ६ ॥

अरहंत-सिद्ध-पवयण-गुरु-थेर-बहुस्सुए-तवस्सीसु ।
वच्छलया य तेसिं अभिक्खनाणोवओगे य ॥ ७ ॥

दसण-विणय आवस्सए य, सीलव्वए निरइयारे ।
खणलव-तव-च्चियाए, वेयावच्चे समाहीए ॥ ८ ॥

अपुव्वनाणगहणे सुयभत्ती, पवयणे पभावणया ।
एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥ ९ ॥

जिणवयणे अणुरत्ता जिणवयणं जे करंति भावेण ।
अमला असंकिलिट्ठा, ते हुंति य परित्तसंसारि ॥ १० ॥

एवं खु नाणिणो सारं, जं न हिंसई किंचण ।
अहिंसा समयं चेव, एत्तावंत वियाणिया ॥ ११ ॥

जाइं च वुड्ढिं च इहेज्ज-पास भूतेहि जाण पडिलेह सायं ।
तम्हा तिविज्जो परमंति णच्चा सम्मत्तदंसी न करेइ पावं १२

उम्मुच्च पासं इह मच्चिएहिं, आरंभजीवी उभयाणुपस्सी ।
कामेसु गिद्धा णिचयं करंति संसिच्चमाणा पुणरेंति गब्भं १३

सवणे नाणे विन्नाणे, पच्चक्खाणे य संजमे ।
अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरियासिद्धि ॥ १४ ॥

एगोहं नत्थि मे कोई नाहमन्नस्स कस्सई ।
एवं अदीणमणसा, अप्पाणमणुसासई ॥ १५ ॥

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥ १६ ॥

जीवियं नाभिकंखेज्जा, मरणं नोवि पत्थए ।
दुहओवि न इच्छेज्जा, जीविए मरणे तहा ॥ १७ ॥

सारं दंसणनाणं, सारं तव-नियम-संजम-सीलं ।
सारं जिणवरधम्मं, सारं संलेहणा पंडियमरणं ॥ १८ ॥

कल्लाणकोडिकारिणी, दुग्गइदुहनिट्ठवणी ।
संसारजलतारिणी, एगंत होइ जीवदया ॥ १९ ॥

आरंभे नत्थि दया, महिलासंगेण नासइ बंभं ।
संकाए नासइ सम्मत्तं, पव्वज्जा अत्थगहणेण च ॥ २० ॥

मज्जं विसयकसाया, निद्दा विकहा य पंचमी भणिया ।
एए पंच पमाया, जीवा पाडंति संसारे ॥ २१ ॥

लब्भंति विमला भोए, लब्भंति सुरसंपया ।
लब्भंति पुत्तमित्तं च, एगो धम्मो न लब्भई ॥ २२ ॥

न वि सुही देवता देवलोए, न वि सुही पुढवीपइराया ।
न वि सुही सेट्ठिसेणावइ य, एगंत सुही मुणी वीयरागी ॥ २३ ॥

नगरी सोहती जलमूलवागे, नारी सोहति पतपुरुषत्यागे ।
राजासोहत सभा पुराणी, साधु सोहता अमृतवाणी ॥ २४ ॥

चलंति मेरु चलति मंदिरं, चलति तारा रविचन्द्रमंडलं ।
कदापि काले पृथ्वी चलति, साहसपुरुषवाक्यो न चलति धर्मे २५

अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टि र्दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ।
भामण्डलं दुंदुभिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् २६

अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कुडसामली ।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ॥ २७ ॥

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥ २८ ॥

जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिए ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ॥ २९ ॥

लाभालाभे सुहे-दुक्खे जीविए मरणे तहा ।
समो निन्दापसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥ ३ ॥

॥ भक्तामरस्तोत्रम ॥

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा—
मुद्योतकं दलितपापतमोवितानम ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा—
वालम्बनं भवजले पतता जनानाम् ॥१॥

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा—
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ !
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब—
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश !,
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहेतु ॥ ६ ॥

त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद—
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥ ८ ॥

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,
त्वत्सङ्कथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥ ९ ॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषण! भूतनाथ!
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥

यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत!।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥

सम्पूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप!
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर! नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥

निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाशः ॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः,
सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र! लोके ॥१७॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम् ॥ १८ ॥

किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ!।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस—
मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम्।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्
त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशङ्करत्वात्।
धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै—
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश !।
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख—
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम्।
उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधार—
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥

छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त—
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम्।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं—
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥

[गम्भीरताररवपूरितदिग्विभाग—
स्त्रैलोक्यलोकशुभसङ्गमभूतिदक्षः।
सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥ ३२ ॥

मन्दारसुन्दरनमेरुसुपारिजात—
सन्तानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा।
गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ॥ ३३ ॥

शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रयद्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरिसंख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्या ॥३४॥

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्ट—
सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व—
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः ॥३५॥

उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ति,
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्त,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३६ ॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि ॥३७॥

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल—
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥

भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त—
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३९ ॥

कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्प,
दावानल ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्व जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्तनजल शमयत्यशेषम् ॥ ४० ॥

रक्तेक्षण समदकोकिलकण्ठनील,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क—
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुस ॥ ४१ ॥

वल्गत्तुरङ्गगजगर्जितभीमनाद—
माजौ बल बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ४२॥

कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह—
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जय विजितदुर्जयजेयपक्षा—
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ४३ ॥

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र—
पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रा—
स्त्रासं विहाय भवत स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४४ ॥

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्ना ,
शोच्या दशामुपगताश्च्युतजीविताशा ।
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा ,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपा ॥ ४५ ॥

आपादकण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घा ।
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्त,
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ॥ ४६ ॥

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि—
संग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४७ ॥

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं,
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मी ॥ ४८ ॥

॥ इति मानतुङ्गाचार्य विरचितं स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीसिद्धसेनदिवाकरप्रणीतम् ॥

॥ श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रम् ॥

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,
भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम् ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु—
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥

कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्प,
दावानल ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्व' जिघत्सुमिव स मुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्तनजल' शमयत्यशेषम् ॥ ४० ॥

रक्तेक्षण समदकोकिलकण्ठनीलं,
क्रोधोद्धत फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क—
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंस ॥ ४१ ॥

वल्गत्तुरङ्गगजगर्जितभीमनाद—
माजौ बल बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्ध,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ४२॥

कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह—
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जय विजितदुर्जयजेयपक्षा—
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ४३ ॥

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र—
पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रा—
स्त्रास विहाय भवत स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४४ ॥

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्ना ,
शोच्या दशामुपगताश्च्युतजीविताशा ।
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा ,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपा ॥ ४५ ॥

आपादकण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः ।
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ॥ ४६ ॥

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि—
संग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४७ ॥

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं,
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४८ ॥

॥ इति मानतुङ्गाचार्य विरचितं स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीसिद्धसेनदिवाकरप्रणीतम् ॥

॥ श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रम् ॥

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,
भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम् ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु—
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥

यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः ।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्-
मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ? ॥४॥

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य ।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ? ॥ ५ ॥

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ! ।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं,
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते,
नामाऽपि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः ।
सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग—
मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र !
रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।
गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥

त्वं तारको जिन ! कथं ? भविनां त एव
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः ।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून—
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥

यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ? ॥ ११ ॥

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना—
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त ! महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥

क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ?
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी

त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप—
मन्वेषयन्ति, हृदयाम्बुजकोशदेशे ।
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य—
दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः ? ॥१४॥

ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ।
तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥

अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः ।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥

त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ।
किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शङ्खो,
नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा—
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥

चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,
विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ?।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !,
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥

स्थाने गभीरहृदयोदधिसम्भवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यतः परमसम्मदसङ्गभाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥

स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय,
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥

श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न—
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम्।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै—
श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥

उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥ २४॥

भो भो ! प्रमादमवधूय भजध्वमेन—
मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् ।
एतन्निवेदयति देव !
मन्ये नदन्नभिनभः सुर[illegible]

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र—
व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥

स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन,
कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन।
माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥ २७ ॥

दिव्यस्रजो जिन! नमत्त्रिदशाधिपाना—
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान्!
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥

त्वं नाथ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान्।
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो! यदसि कर्मविपाकशून्य ॥ २९ ॥

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक! दुर्गतस्त्वं,
किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश!।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतु ॥ ३० ॥

प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा—
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥

यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीम-
भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे
तेनैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥

ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड—
प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥

धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य—
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ।
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः
पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥

अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !,
मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव !,
मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन
पूर्वं विभो ! सकृदपि
मर्माविधो विधुरयन्ति
प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥३८॥

त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !,
कारुण्यपुण्यवसते ! वशिनां वरेण्य ! ।
भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय
दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥

निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य—
मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदानम् ।
त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो
वन्ध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥४०॥

देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिलवस्तुसार !
संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! ।
त्रायस्व देव ! करुणाह्रद ! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥ ४१ ॥

यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्ततसञ्चितायाः ।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥

इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !
सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः ।
त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥४३॥

जननयनकुमुदचन्द्र-प्रभास्वराः स्वर्गसम्पदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया, अचिरान् मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ ४४ ॥

॥ श्री रत्नाकरपञ्चविंशति ॥

उपजातिवृत्तम्

श्रेयः श्रियां मंगलकेलिसद्म !, नरेन्द्रदेवेन्द्रनताङ्घ्रिपद्म ! ।
सर्वज्ञ ! सर्वातिशयप्रधान !, चिरं जय ज्ञानकलानिधान ! ॥१॥
जगत्त्रयाधार ! कृपावतार ! दुर्वारसंसारविकारवैद्य !
श्रीवीतराग ! त्वयि मुग्धभावात् विज्ञप्रभो विज्ञपयामि किंचित् ॥२॥
किं बाललीलाकलितो न बालः, पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः ।
तथा यथार्थं कथयामि नाथ !, निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे ॥३॥
दत्तं न दानं परिशीलितं च, न शालि शीलं न तपोऽभितप्तम् ।
शुभो न भावोऽप्यभवद्भवेऽस्मिन्, विभो ! मया भ्रान्तमहो मुधैव ॥४॥
दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्यमहोरगेण ।
ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया-जालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वाम् ॥५॥
कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेश ! सुखं न मेऽभूत् ।
अस्मादृशां केवलमेव जन्म, जिनेश ! जज्ञे भवपूरणाय ॥६॥
मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्त !, त्वदास्यपीयूषमयूखलाभात् ।
द्रुतं महानन्दरसं कठोर-मस्मादृशां देव ! तदश्मतोऽपि ॥७॥
त्वत्तः सुदुष्प्रापमिदं मयाऽऽप्तं, रत्नत्रयं भूरिभवभ्रमेण ।
प्रमादनिद्रावशतो गतं तत्, कस्याग्रतो नायक !

वैराग्यरङ्ग परवञ्चनाय, धर्मोपदेशो जनरञ्जनाय।
वादाय विद्याऽध्ययनं च मेऽभूत्, कियद् ब्रुवे हास्यकरं स्वमीश॥
परापवादेन मुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणेन।
चेतः परापायविचिन्तनेन, कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहम्॥१०॥
विडम्बितं यत्स्मरघस्मरार्त्ति—दशावशात्स्वं विषयान्धलेन।
प्रकाशितं तद्भवतो ह्रियैव सर्वज्ञ! सर्वं स्वयमेव वेत्सि॥११॥
ध्वस्तोऽन्यमन्त्रैः परमेष्ठिमन्त्र कुशास्त्रवाक्यैर्निहतागमोक्ति।
कर्तुं वृथा कर्म कुदेवसङ्गादवाञ्छि हि नाथ! मतिभ्रमो मे॥१२॥
विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं भवन्तं, ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः।
कटाक्षवक्षोजगभीरनाभी, कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः॥१३॥
लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन यो मानसे रागलवो विलग्नः।
न शुद्धसिद्धान्तपयोधिमध्ये, धौतोऽप्यगात्तारक कारणं किं॥१४॥
अङ्गं न चङ्गं न गणो गुणानां, न निर्मल कोऽपि कलाविलास।
स्फुरत्प्रभा न प्रभुता च काऽपि, तथाप्यहङ्कारकदर्थितोऽहं॥१५॥
आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि-र्गतं वयो नो विषयाभिलाष।
यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महामोहविडम्बना मे॥१६॥
नात्मा न पुण्यं न भवो न पापं, मया विटानां कटुगीरपीयं।
अधारि कर्णे त्वयि केवलार्के, परिस्फुटे सत्यपि देव! धिग्माम् १७
न देवपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्म।
लब्ध्वापि मानुष्यमिदं समस्तं, कृतं मयाऽरण्यविलापतुल्यं॥१८॥
चक्रे मयाऽसत्स्वपि कामधेनु—कल्पद्रुचिन्तामणिषु स्पृहार्त्ति।
न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि, जिनेश! मे पश्य विमूढभावं॥१९॥
सद्भोगलीला न च रोगकीला, धनागमो नो निधनागमश्च।
दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिन्ति नित्यं मयकाऽधमेन २०
स्थितं न साधोर्हृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोऽर्जितं च।
न तीर्थोद्धरणादिकृत्यं, मया मुधा हारितमेव जन्म॥२१॥

वैराग्यरङ्गो न गुरूदितेषु, न दुर्जनानां वचनेषु शान्तिः ।
नाध्यात्मलेशो मम कोऽपि देव, तार्यः कथङ्कारमहं भवाब्धिः ॥२२॥
पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य-मागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये ।
यदीदृशोऽहं मम तेन नष्टा, भूतोद्भवद्भाविभवत्रयीश ! ॥२३॥
किं वा मुधाऽहं बहुधा सुधाभुक्पूज्य ! त्वदग्रे चरितं स्वकीयं ।
जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप ! निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ॥२४॥
शार्दूल—दीनोद्धारधुरन्धरस्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपा ।
पात्रं नात्र जने जिनेश्वर ! तथाऽप्येतां न याचे श्रियं ।
किं त्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिवं ।
श्रीरत्नाकरमङ्गलैकनिलय ! श्रेयस्करं प्रार्थये ॥२५॥

श्री अमितगतिसूरिविरचित प्रार्थना पञ्चविंशति

॥ उपजातिवृत्तम् ॥

सत्त्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ।
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव ! ॥१॥
शरीरतः कर्तुमनन्तशक्तिं, विभिन्नमात्मानमपास्तदोषम् ।
जिनेन्द्र ! कोषादिव खड्गयष्टिं, तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः ॥२॥
दुःखे सुखे वैरिणि बन्धुवर्गे, योगे वियोगे भवने वने वा ।
निराकृताशेषममत्वबुद्धेः, समं मनो मेऽस्तु सदाऽपि नाथ ! ॥३॥
यः स्मर्यते सर्वमुनीन्द्रवृन्दैः, यः स्तूयते सर्वनरामरेन्द्रैः ।
यो गीयते वेदपुराणशास्त्रैः, स देवदेवो हृद ॥४॥
यो दर्शनज्ञानसुखस्वभावः
समाधिगम्यः परमात्मसंज्ञः, स देवदेवो

निषूदते यो भवदुःखजालम् निरीक्षते यो जगदन्तरालम् ।
योऽन्तर्गतो योगिनिरीक्षणीय, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥८॥
विमुक्तिमार्गप्रतिपादको यो, यो जन्ममृत्युव्यसनाद्व्यतीत ।
त्रिलोकलोकी विकलोऽकलङ्क, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥७॥
क्रोडीकृताशेषशरीरिवर्गा, रागादयो यस्य न सन्ति दोषा ।
निरिन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपाय, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥८॥
यो व्यापको विश्वजनीनवृत्तिः सिद्धो विबुद्धो धुतकर्मबन्ध ।
ध्यातो धुनीते सकलं विकार, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥९॥
न स्पृश्यते कर्मकलङ्कदोषै यो ध्वान्तसंघैरिव तिग्मरश्मि ।
निरञ्जन नित्यमनेकमेकं, त देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ १० ॥
विभासते यत्र मरीचिमालिन्यविद्यमाने भुवनावभासि ।
स्वात्मस्थित बोधमयप्रकाशं त देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ ११ ॥
विलोक्यमाने सति यत्र विश्व विलोक्यते स्पष्टमिदं विविक्तम् ।
शुद्ध शिवं शान्तमनाद्यनन्त, त देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ १२ ॥
येन क्षता मन्मथमानमूर्च्छा—विषादनिद्राभयशोकचिन्ता ।
क्षय्योऽनलेनेव तरुप्रपञ्चस्त देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ १३ ॥

प्रतिक्रमण—[प्रभुसमीप पश्चात्तापचिन्तन]

विनिन्दनालोचनगर्हणैरहं, मनोवचःकायकषायनिर्मितम् ।
निहन्मि पापं भवदुःखकारणं, भिषग्विषं मन्त्रगुणैरिवाखिलम् १४
अतिक्रमं यं विमतेर्व्यतिक्रमं, जिनातिचारं सुचरित्रकर्मणः ।
व्यधामनाचारमपि प्रमादतः, प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये १५
न संस्तरोऽश्मा न तृणं न मेदिनी, विधानतो नो फलको विनिर्मितः
यतो निरस्ताक्षकषायविद्विषः, सुधीभिरात्मैव सुनिर्मलो मतः १६
न संस्तरो भद्र समाधिसाधनं, न लोकपूजा न च संघमेलनम् ।
यतस्ततोऽध्यात्मरतो भवाऽनिशं, विमुच्य सर्वामपि बाह्यवासनाम्

न मति धारा मम वंचनार्था, मयापि तर्वा न कदाचनाहम् ।
इत्थं विनिश्चित्य विमुच्य वाद्यं, स्वस्थ सदास्थ मय मन्त्र मुक्त्यै
आमानमा मन्दयिलाक्यमानस्य दशनवामयो विशुद्ध,
पश्चाधनित्स खलु यत्र तत्र, स्थितोऽपि साधुर्लभते समाधिम् १९
एव सदा शान्ततिशो ममात्मा, विनिमल साधितमस्वभाव,
बहिर्मया न परे समस्ता, न शाश्वता कर्मना इतरिया २०
यस्यास्ति नैक्यं वपुषापि सार्धं, तस्यास्ति किं पुत्रकलत्रमित्रैः,
पृथक्कृते चर्मणि रोमकूपा, कुतो हि तिष्ठन्ति शरीरमध्ये ॥ २१
संयोगतो दुःखमनेकभेदं, यतोऽश्नुते जन्मवने शरीरी,
ततस्त्रिधाऽसौ परिवर्जनीयो, यियासुना निर्वृतिमात्मनीनाम् २२
सर्वं निराकृत्य विकल्पजालं, संसारकान्तारनिपातहेतुम्
विविक्तमात्मानमवेक्षमाणो, निलीयसे त्वं परमात्मतत्त्वे ॥ २३ ।
स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा, फलं तदीयं लभते शुभाशुभम्,
परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं, स्वयंकृतं कर्म निरर्थकं तदा ॥ २४ ॥
निजार्जितं कर्म विहाय देहिनो, न कोऽपि कस्यापि ददाति किंचन
विचारयन्नेवमनन्यमानसः, परो ददातीति विमुच्य शेमुषीम् २५

॥ श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्रम् ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

पातालं कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन्।
दिक्चक्रं क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणिं च विस्मापयन्॥
ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधेः फेनच्छलाल्लोलयन्।
श्रीचिन्तामणिपार्श्वसम्भवयशो हंसश्चिरं राजते॥ २॥

पुण्यानां विपणिस्तमो दिनमणिः कामेभकुम्भे सृणि—
र्मोक्षे निःसरणिः सुरेन्द्रकरिणी ज्योतिः प्रकाशारणिः॥
दाने देवमणिर्नतोत्तमजनश्रेणिः कृपासारिणी।
विश्वानन्दसुधाघृणिर्भवभिदे श्रीपार्श्वचिन्तामणिः॥ ३॥

श्रीचिन्तामणिपार्श्व विश्वजनतासञ्जीवनस्त्वं मया।
दृष्टस्तात ततः श्रियः समभवन्नाशक्रमाचक्रिणम्॥
मुक्तिः क्रीडति हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनोवाञ्छितं।
दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिनभयं कष्टं प्रणष्टं मम॥ ४॥

यस्य प्रौढतमप्रतापतपनः प्रोद्दामधामा जग—
ज्जङ्घालः कलिकालकेलिदलनो मोहान्धविध्वंसकः
नित्योद्योतपदं समस्तकमलाकेलिगृहं राजते।
स श्रीपार्श्वजिनो जने हितकृच्चिन्तामणिः पातु माम्॥५॥

विश्वव्यापितमो हिनस्ति तरणिर्बालोऽपि कल्पाङ्कुरो।
दारिद्र्याणि गजावलीं हरिशिशुः काष्ठानि वह्नेः कणः॥
पीयूषस्य लवोऽपि रोगनिवहं यद्वत्तथा ते विभो॥
मूर्तिः स्फूर्तिमती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्तुं क्षमा॥ ६॥

श्रीचिन्तामणिमन्त्रमोङ्कृतियुतं ह्रींकारसाराश्रितं।
श्रीमदर्हन्नमिऊणपाशकलितं त्रैलोक्यवश्यावहम्॥
द्वेधाभूतविषापहं विषहरं श्रेयःप्रभावाश्रयं।
सोल्लासं वसहाञ्चितं जिनफुलिङ्गानन्ददं देहिनाम्॥ ७॥

ह्रीं श्रींकारवरं नमोऽक्षरपरं ध्यायन्ति ये योगिनो-
हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमधिपं चिन्तामणिसंज्ञकम् ।
भाले वामभुजे च नाभिकरयोर्भूयो भुजे दक्षिणे ।
पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं द्वित्रैर्भवैर्यान्त्यहो ॥ ८ ॥

स्रग्धरा-नो रोगा नैव शोका न कलहकलना नारिमारिप्रचारा-
नैवाधिर्नासमाधिर्न च दरदुरिते दुष्टदारिद्रता नो ।
नो शाकिन्यो ग्रहा नो न हरिकरिगणा व्यालवैतालजाला
जायन्ते पार्श्वचिन्तामणिनतिवशतः प्राणिनां भक्तिभाजाम् ९

शार्दूल -गीर्वाणद्रुमधेनुकुम्भमणयस्तस्याङ्गणे रङ्गिणो-
देवा दानवमानवाः सविनयं तस्मै हितध्यायिनः ॥
लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिनां ब्रह्माण्डसंस्थायिनी ।
श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथमनिशं संस्तौति यो ध्यायति १०

मालिनी -इति जिनपतिपार्श्वः पार्श्वपार्श्वाख्ययक्षः
प्रदलितदुरितौघः प्रीणितप्राणिसार्थः ।
त्रिभुवनजनवाञ्छादानचिन्तामणिकः ।
शिवपदतरुबीजं बोधिबीजं ददातु ॥ ११ ॥

मेरी भावना

जिसने राग द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध वीर जिन हरि हर ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो॥
विषयों की आशा नहीं जिनके साम्य भाव धन रखते हैं
निज पर के हित साधन में जो निशदिन तत्पर रहते हैं

स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुख समूह को हरते हैं ॥२॥
रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ॥
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ।
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ ॥३॥
अहंकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ ॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ ॥४॥
मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन दुखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्रोत बहे ॥
दुर्जन-क्रूर-कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्यभाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ॥५॥
गुणी जनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ॥
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण ग्रहण का भाव रहे, नित दृष्टि न दोषों पर जावे ॥६॥
कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ, या मृत्यु आज ही आ जावे ॥
अथवा कोई कैसा ही, भय या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ॥७॥
होकर सुख में मग्न न फूलें, दुख में कभी न घबरावे।
पर्वत, नदी, श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे ॥
रहे अडोल, अकम्प निरंतर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, सहनशीलता दिखलावे ॥८॥

सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
बैर पाप अभिमान छोड़, जग नित्य नये मंगल गावें॥
घर घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावें।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना मनुज जन्म फल सब पावें ९
ईति भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी न्याय प्रजा का किया करे॥
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैल सर्व हित किया करे १०॥
फैले प्रेम परस्पर जग में मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय, कटुक, कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करे॥
बनकर सब "युगवीर" हृदय से, देशोन्नतिरत रहा करें।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुख संकट सहा करें ११

प्रकीर्ण गाथाएँ

नमिऊण असुरसुरगरुल-भुयगपरिवंदिए-गयकिलेसे।
अरिहंतसिद्धायरियउवज्झायसव्वसाहूणं॥
सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं।
लोयग्गमुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं॥१॥
जो देवाणवि देवो जं देवा पंजली नमंसंति।
तं देवदेवमहियं सिरसा वंदे महावीरं॥२॥
इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स।
संसार-सागराओ तारेइ नरं व नारिं वा॥ ॥
उज्जितसेल-सिहरे दिक्खा नाणं निसीहिया जस्स।
[illegible] अरिट्ठ [illegible] नमंसामि ॥४॥

चत्तारि अट्ठदस दोय वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ।
परमट्ठ निट्ठिअट्ठा सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु ॥५॥
सिद्धाणं नमो किच्चा, सजयाणं च भावओ ।
सन्ती सन्तीकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥

शब्द—इच्छित कार्य सिद्धि होने के लिए प्रथम इष्टदेव नमस्कार किया जाता है। सिद्धाणं अर्थात् सिद्ध भ... नमस्कार हो।

सजयाणं अर्थात् संयति—आचार्य, उपाध्याय व साधु-साध्वीजी महाराज को नमस्कार हो। सारे... शान्ति करने वाले शान्तिनाथ प्रभुजी को त्रिकरण-... पूर्वक नमस्कार हो।

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
सन्ती सन्तीकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥

अर्थ सारे लोक में शान्ति स्थापित करने शांतिनाथ नामके चक्रवर्ती महान् ऋद्धि-सिद्धि का राज्य छोड़कर उत्तम (मोक्ष) गति को प्राप्त

अलद्धु पुव्वलद्ध जिणवयण-सुभासियं
भूइसुयगइमग्गं ना मरणाय बीयामो ॥१॥
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ ।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राईओ
जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तइ ।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति
एथ लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य ।
अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं
एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया
दसहा उ जिणित्ता णं, सव्व सत्तू

चत्तारि अट्ठदस दोय वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ।
परमट्ठ निट्ठिअट्ठा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥४॥
सिद्धाण नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ ।
सन्ती सन्तीकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥
अर्थ—इच्छित कार्य-सिद्धि होने के लिए प्रथम इष्टदेव को नमस्कार किया जाता है। सिद्धाण अर्थात् सिद्ध भगवान को नमस्कार हो।
संजयाण अर्थात् संयति—आचार्य, उपाध्याय व सर्व साधु-साध्वीजी महाराज को नमस्कार हो। सारे लोक में शान्ति करने वाले शान्तिनाथ प्रभुजी को त्रिकरण-शुद्धभाव पूर्वक नमस्कार हो।
चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महड्ढिओ ।
सन्ती सन्तीकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥
अर्थ-सारे लोक में शान्ति स्थापित करने वाले सोलहवें शान्तिनाथ नामके चक्रवर्ती महान् ऋद्धि-सिद्धि वाले भरत क्षेत्र का राज्य छोड़कर उत्तम (मोक्ष) गति को प्राप्त हुए।
अलद्धु पुन्नलद्ध जिणवयण-सुभासियं अमियं ।
भुंइसुयगइमग्गं ना मरणाय बीयामो ॥१॥
जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ ।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राईओ ॥२॥
जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तइ ।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ ॥३॥
पच लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य ।
अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमाणओ ॥४॥
एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस ।
दसहा उ जिणित्ता णं, सव्व सत्तू जिणामहं ॥५॥